

॥ श्री राम चरित मानस ॥

श्रीगणेशायनमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्रीरामचरितमानस

द्वितीय सोपान

अयोध्या-काण्ड

श्लोक

यस्याङ्गे च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट् ।
सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा
शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशङ्करः पातु माम् ॥ १ ॥

प्रसन्नतां या न गताभिषेकतस्तथा न मम्ले वनवासदुःखतः ।
मुखाम्बुजश्री रघुनन्दनस्य मे सदास्तु सा मञ्जुलमंगलप्रदा ॥ २ ॥

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपितवामभागम् ।
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥ ३ ॥

दो. श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥
जब तैं रामु ब्याहि घर आए । नित नव मंगल मोद बधाए ॥
भुवन चारिदस भूधर भारी । सुकृत मेघ बरषहि सुख बारी ॥

रिधि सिधि संपति नदी सुहाई । उमगि अवध अंबुधि कहूँ आई ॥
मनिगन पुर नर नारि सुजाती । सुचि अमोल सुंदर सब भाँती ॥
कहि न जाइ कछु नगर बिभूती । जनु एतनिअ बिरंचि करतूती ॥
सब बिधि सब पुर लोग सुखारी । रामचंद मुख चंदु निहारी ॥
मुदित मातु सब सखी सहेली । फलित बिलोकि मनोरथ बेली ॥
राम रूपु गुनसीलु सुभाऊ । प्रमुदित होइ देखि सुनि राऊ ॥

दो. सब केँ उर अभिलाषु अस कहहिं मनाइ महेसु ।
आप अछत जुबराज पद रामहि देउ नरेसु ॥ १ ॥

एक समय सब सहित समाजा । राजसभाँ रघुराजु बिराजा ॥
सकल सुकृत मूरति नरनाहू । राम सुजसु सुनि अतिहि उछाहू ॥
नृप सब रहहिं कृपा अभिलाषेँ । लोकप करहिं प्रीति रुख राखेँ ॥
तिभुवन तीनि काल जग माहीं । भूरि भाग दसरथ सम नाहीं ॥
मंगलमूल रामु सुत जासू । जो कछु कहिज थोर सबु तासू ॥
रायँ सुभायँ मुकुरु कर लीन्हा । बदनु बिलोकि मुकुट सम कीन्हा ॥
श्रवन समीप भए सित केसा । मनहुँ जरठपनु अस उपदेसा ॥

नृप जुबराज राम कहूँ देहू । जीवन जनम लाहू किन लेहू ॥

दो. यह बिचारु उर आनि नृप सुदिनु सुअवसरु पाइ ।
प्रेम पुलकि तन मुदित मन गुरहि सुनायउ जाइ ॥ २ ॥

कहइ भुआलु सुनिअ मुनिनायक । भए राम सब बिधि सब लायक ॥
सेवक सचिव सकल पुरबासी । जे हमारे अरि मित्र उदासी ॥
सबहि रामु प्रिय जेहि बिधि मोही । प्रभु असीस जनु तनु धरि सोही ॥
बिप्र सहित परिवार गोसाईं । करहिं छोहू सब रौरिहि नाई ॥
जे गुर चरन रेनु सिर धरहीं । ते जनु सकल बिभव बस करहीं ॥
मोहि सम यहू अनुभयउ न दूजेँ । सबु पायउँ रज पावनि पूजेँ ॥
अब अभिलाषु एकु मन मोरेँ । पूजहि नाथ अनुग्रह तोरेँ ॥
मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेहू । कहेउ नरेस रजायसु देहू ॥

दो. राजन राउर नामु जसु सब अभिमत दातार ।
फल अनुगामी महिप मनि मन अभिलाषु तुम्हार ॥ ३ ॥

सब बिधि गुरु प्रसन्न जियँ जानी । बोलेउ राउ रहँसि मृदु बानी ॥
नाथ रामु करिअहिं जुबराजू । कहिअ कृपा करि करिअ समाजू ॥
मोहि अछत यहू होइ उछाहू । लहहिं लोग सब लोचन लाहू ॥
प्रभु प्रसाद सिव सबइ निबाहीं । यह लालसा एक मन माहीं ॥
पुनि न सोच तनु रहउ कि जाऊ । जेहिं न होइ पाछेँ पछिताऊ ॥
सुनि मुनि दसरथ बचन सुहाए । मंगल मोद मूल मन भाए ॥
सुनु नृप जासु बिमुख पछिताही । जासु भजन बिनु जरनि न जाहीं ॥
भयउ तुम्हार तनय सोइ स्वामी । रामु पुनीत प्रेम अनुगामी ॥

दो. बेगि बिलंबु न करिअ नृप साजिअ सबुइ समाजु ।
सुदिन सुमंगलु तबहिं जब रामु होहिं जुबराजु ॥ ४ ॥

मुदित महिपति मंदिर आए । सेवक सचिव सुमंत्रु बोलाए ॥
कहि जयजीव सीस तिन्ह नाए । भूप सुमंगल बचन सुनाए ॥
जौ पाँचहि मत लागै नीका । करहू हरषि हियँ रामहि टीका ॥
मंत्री मुदित सुनत प्रिय बानी । अभिमत बिरवँ परेउ जनु पानी ॥
बिनती सचिव करहि कर जोरी । जिअहू जगतपति बरिस करोरी ॥
जग मंगल भल काजु बिचारा । बेगिअ नाथ न लाइअ बारा ॥
नृपहि मोदु सुनि सचिव सुभाषा । बढत बौड़ जनु लही सुसाखा ॥

दो. कहेउ भूप मुनिराज कर जोइ जोइ आयसु होइ ।
राम राज अभिषेक हित बेगि करहु सोइ सोइ ॥ ५ ॥

हरषि मुनीस कहेउ मृदु बानी । आनहु सकल सुतीरथ पानी ॥

औषध मूल फूल फल पाना । कहे नाम गनि मंगल नाना ॥
 चामर चरम बसन बहु भाँती । रोम पाट पट अगनित जाती ॥
 मनिगन मंगल बस्तु अनेका । जो जग जोगु भूप अभिषेका ॥
 वेद विदित कहि सकल विधाना । कहेउ रचहु पुर बिबिध बिताना ॥
 सफल रसाल पूगफल केरा । रोपहु बीथिन्ह पुर चहुँ फेरा ॥
 रचहु मंजु मनि चौकें चारू । कहहु बनावन बेगि बजारू ॥
 पूजहु गनपति गुर कुलदेवा । सब विधि करहु भूमिसुर सेवा ॥

दो. ध्वज पताक तोरन कलस सजहु तुरग रथ नाग ।
 सिर धरि मुनिबर बचन सबु निज निज काजहिं लाग ॥ ६ ॥

जो मुनीस जेहि आयसु दीन्हा । सो तेहिं काजु प्रथम जनु कीन्हा ॥
 विप्र साधु सुर पूजत राजा । करत राम हित मंगल काजा ॥
 सुनत राम अभिषेक सुहावा । बाज गहागह अवध बधावा ॥
 राम सीय तन सगुन जनाए । फरकहिं मंगल अंग सुहाए ॥
 पुलकि सप्रेम परसपर कहहीं । भरत आगमनु सूचक अहहीं ॥
 भए बहुत दिन अति अवसेरी । सगुन प्रतीति भेंट प्रिय केरी ॥
 भरत सरिस प्रिय को जग माहीं । इहइ सगुन फलु दूसर नाहीं ॥
 रामहि बंधु सोच दिन राती । अंडिन्ह कमठ हृदउ जेहि भाँती ॥

दो. एहि अवसर मंगलु परम सुनि रहँसेउ रनिवासु ।
 सोभत लखि बिधु बद्धत जनु बारिधि बीचि बिलासु ॥ ७ ॥

प्रथम जाइ जिन्ह बचन सुनाए । भूषन बसन भूरि तिन्ह पाए ॥
 प्रेम पुलकि तन मन अनुरागी । मंगल कलस सजन सब लागी ॥
 चौकें चारु सुमित्राँ पुरी । मनिमय बिबिध भाँति अति रुरी ॥
 आनंद मगन राम महतारी । दिए दान बहु विप्र हँकारी ॥
 पूजी ग्रामदेबि सुर नागा । कहेउ बहोरि देन बलिभागा ॥
 जेहि विधि होइ राम कल्यानु । देहु दया करि सो बरदानु ॥
 गावहिं मंगल कोकिलबयनी । बिधुबदनी मृगसावकनयनी ॥

दो. राम राज अभिषेकु सुनि हियँ हरषे नर नारि ।
 लगे सुमंगल सजन सब विधि अनुकूल बिचारि ॥ ८ ॥

तब नरनाहँ बसिष्ठ बोलाए । रामधाम सिख देन पठाए ॥
 गुर आगमनु सुनत रघुनाथा । द्वार आइ पद नायउ माथा ॥
 सादर अरघ देइ घर आने । सोरह भाँति पूजि सनमाने ॥
 गहे चरन सिय सहित बहोरी । बोले रामु कमल कर जोरी ॥
 सेवक सदन स्वामि आगमनु । मंगल मूल अमंगल दमनु ॥
 तदपि उचित जनु बोलि सप्रीती । पठइअ काज नाथ असि नीती ॥
 प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू । भयउ पुनीत आजु यहू गेहू ॥
 आयसु होइ सो करौ गोसाई । सेवक लहइ स्वामि सेवकाई ॥

दो. सुनि सनेह साने बचन मुनि रघुबरहि प्रसंस ।
 राम कस न तुम्ह कहहु अस हंस बंस अवतंस ॥ ९ ॥

बरनि राम गुन सीलु सुभाऊ । बोले प्रेम पुलकि मुनिराऊ ॥
 भूप सजेउ अभिषेक समाजू । चाहत देन तुम्हहि जुबराजू ॥
 राम करहु सब संजम आजू । जौ विधि कुसल निबाहै काजू ॥
 गुरु सिख देइ राय पहिं गयउ । राम हृदयँ अस बिसमउ भयउ ॥
 जनमे एक संग सब भाई । भोजन सयन केलि लरिकई ॥
 करनबेध उपबीत बिआहा । संग संग सब भए उछाहा ॥
 बिमल बंस यहू अनुचित एकू । बंधु बिहाइ बड़ेहि अभिषेकू ॥
 प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई । हरउ भगत मन कै कुटिलाई ॥

दो. तेहि अवसर आए लखन मगन प्रेम आनंद ।
 सनमाने प्रिय बचन कहि रघुकुल कैरव चंद ॥ १० ॥

बाजहिं बाजने बिबिध विधाना । पुर प्रमोदु नहिं जाइ बखाना ॥
 भरत आगमनु सकल मनावहिं । आवहुँ बेगि नयन फलु पावहिं ॥
 हाट बाट घर गली अथाई । कहहिं परसपर लोग लोगई ॥
 कालि लगन भलि केतिक बारा । पूजिहि विधि अभिलाषु हमारा ॥
 कनक सिंघासन सीय समेता । बैठहिं रामु होइ चित चेता ॥
 सकल कहहिं कब होइहि काली । विघन मनावहिं देव कुचाली ॥
 तिन्हहि सोहाइ न अवध बधावा । चोरहि चंदिनि राति न भावा ॥
 सारद बोलि बिनय सुर करहीं । बारहिं बार पाय लै परहीं ॥

दो. बिपति हमारि बिलोकि बड़ि मातु करिअ सोइ आजु ।
 रामु जाहिं बन राजु तजि होइ सकल सुरकाजु ॥ ११ ॥

सुनि सुर बिनय ठाढ़ि पछिताती । भइउँ सरोज बिपिन हिमराती ॥
 देखि देव पुनि कहहिं निहोरी । मातु तोहि नहिं थोरिउ खोरी ॥
 बिसमय हरष रहित रघुराऊ । तुम्ह जानहु सब राम प्रभाऊ ॥
 जीव करम बस सुख दुख भागी । जाइअ अवध देव हित लागी ॥
 बार बार गहि चरन सँकोचौ । चली बिचारि विबुध मति पोची ॥
 ऊँच निवासु नीचि करतूती । देखि न सकहिं पराइ बिभूती ॥
 आगिल काजु बिचारि बहोरी । करहिं चाह कुसल कबि मोरी ॥
 हरषि हृदयँ दसरथ पुर आई । जनु ग्रह दसा दुसह दुखदाई ॥

दो. नामु मंथरा मंदमति चेरी कैकेइ केरि ।
 अजस पेटारी ताहि करि गई गिरा मति फेरि ॥ १२ ॥

दीख मंथरा नगरु बनावा । मंजुल मंगल बाज बधावा ॥
 पूछेसि लोगन्ह काह उछाहू । राम तिलकु सुनि भा उर दाहू ॥
 करइ बिचारु कुबुद्धि कुजाती । होइ अकाजु कवनि विधि राती ॥
 देखि लागि मधु कुटिल किराती । जिमि गवँ तकइ लेउँ केहि भाँती ॥
 भरत मातु पहिं गइ बिलखानी । का अनमनि हसि कह हँसि रानी ॥
 ऊतरु देइ न लेइ उसासू । नारि चरित करि ढारइ आँसू ॥
 हँसि कह रानि गालु बड़ तोरें । दीन्ह लखन सिख अस मन मोरें ॥
 तबहुँ न बोल चेरि बड़ि पापिनि । छाड़इ स्वास कारि जनु साँपिनि ॥

दो. सभय रानि कह कहसि किन कुसल रामु महिपालु ।

लखनु भरतु रिपुदमनु सुनि भा कुबरी उर सालु ॥ १३ ॥

कत सिख देइ हमहि कोउ माई । गालु करब केहि कर बलु पाई ॥
रामहि छाड़ि कुसल केहि आजू । जेहि जनेसु देइ जुबराजू ॥
भयउ कौसिलहि विधि अति दाहिन । देखत गरब रहत उर नाहिन ॥
देखेहु कस न जाइ सब सोभा । जो अवलोकि मोर मनु छोभा ॥
पूत बिदेस न सोचु तुम्हारे । जानति हहु बस नाहु हमारे ॥
नीद बहुत प्रिय सेज तुराई । लखहु न भूप कपट चतुराई ॥
सुनि प्रिय बचन मलिन मनु जानी । झुकी रानि अब रहु अरगानी ॥
पुनि अस कबहुँ कहसि घरफोरी । तब धरि जीभ कढ़ावउँ तोरी ॥

दो. काने खोरे कूबरे कुटिल कुचाली जानि ।

तिय बिसेषि पुनि चेरि कहि भरतमातु मुसुकानि ॥ १४ ॥

प्रियबादिनि सिख दीन्हउँ तोही । सपनेहुँ तो पर कोपु न मोही ॥
सुदिनु सुमंगल दायकु सोई । तोर कहा फुर जेहि दिन होई ॥
जेठ स्वामि सेवक लघु भाई । यह दिनकर कुल रीति सुहाई ॥
राम तिलकु जौ साँचेहुँ काली । देउँ मागु मन भावत आली ॥
कौसल्या सम सब महतारी । रामहि सहज सुभायँ पिआरी ॥
मो पर करहिं सनेहु बिसेषी । मै करि प्रीति परीछा देखी ॥
जौ बिधि जनमु देइ करि छोहू । होहुँ राम सिय पूत पुतोहू ॥
प्राण तें अधिक रामु प्रिय मोरें । तिन्ह के तिलक छोभु कस तोरें ॥

दो. भरत सपथ तोहि सत्य कहु परिहरि कपट दुराउ ।

हरष समय बिसमउ करसि कारन मोहि सुनाउ ॥ १५ ॥

एकहिं बार आस सब पूजी । अब कछु कहब जीभ करि दूजी ॥
फोरै जोगु कपारु अभाग । भलेउ कहत दुख रउरेहि लाग ।
कहहिं झूठि फुरि बात बनाई । ते प्रिय तुम्हहि करइ मै माई ॥
हमहुँ कहबि अब ठकुरसोहाती । नाहिं त मौन रहब दिनु राती ॥
करि कुरूप बिधि परबस कीन्हा । बवा सो लुनिअ लहिअ जो दीन्हा ॥
कोउ नृप होउ हमहि का हानी । चेरि छाड़ि अब होब कि रानी ॥
जारै जोगु सुभाउ हमारा । अनभल देखि न जाइ तुम्हारा ॥
तातें कछुक बात अनुसारी । छमिअ देबि बड़ि चूक हमारी ॥

दो. गूढ़ कपट प्रिय बचन सुनि तीय अधरबुधि रानि ।

सुरमाया बस बैरिनिहि सुहृद जानि पतिआनि ॥ १६ ॥

सादर पुनि पुनि पूँछति ओही । सबरी गान मृगी जनु मोही ॥
तसि मति फिरी अहइ जसि भावी । रहसी चेरि घात जनु फावी ॥
तुम्ह पूँछहु मै कहत डेराऊँ । धरेउ मोर घरफोरी नाऊँ ॥
सजि प्रतीति बहुबिधि गढ़ि छोली । अवध सादसाती तब बोली ॥
प्रिय सिय रामु कहा तुम्ह रानी । रामहि तुम्ह प्रिय सो फुरि बानी ॥
रहा प्रथम अब ते दिन बीते । समउ फिरें रिपु होहिं पिंरीते ॥
भानु कमल कुल पोषनिहारा । विनु जल जारि करइ सोइ छारा ॥
जरि तुम्हारि चह सवति उखारी । रूँधहु करि उपाउ बर बारी ॥

दो. तुम्हहि न सोचु सोहाग बल निज बस जानहु राउ ।

मन मलीन मुह मीठ नृप राउर सरल सुभाउ ॥ १७ ॥

चतुर गँभीर राम महतारी । बीचु पाइ निज बात सँवारी ॥
पठए भरतु भूप ननिअउरें । राम मातु मत जानव रउरें ॥
सेवहिं सकल सवति मोहि नीकें । गरबित भरत मातु बल पी कें ॥
सालु तुम्हार कौसिलहि माई । कपट चतुर नहिं होइ जनाई ॥
राजहि तुम्ह पर प्रेमु बिसेषी । सवति सुभाउ सकइ नहिं देखी ॥
रची प्रंपचु भूपहि अपनाई । राम तिलक हित लगन धराई ॥
यह कुल उचित राम कहूँ टीका । सबहि सोहाइ मोहि सुठि नीका ॥
आगिलि बात समुझि डरु मोही । देउ दैउ फिरि सो फलु ओही ॥

दो. रचि पचि कोटिक कुटिलपन कीन्हेसि कपट प्रबोधु ॥

कहिसि कथा सत सवति कै जेहि बिधि बाढ़ बिरोधु ॥ १८ ॥

भावी बस प्रतीति उर आई । पूँछु रानि पुनि सपथ देवाई ॥
का पूँछहुँ तुम्ह अबहुँ न जाना । निज हित अनहित पसु पहिचाना ॥
भयउ पासु दिन सजत समाजू । तुम्ह पाई सुधि मोहि सन आजू ॥
खाइअ पहिरिअ राज तुम्हारे । सत्य कहें नहिं दोषु हमारे ॥
जौ असत्य कछु कहब बनाई । तौ बिधि देइहि हमहि सजाई ॥
रामहि तिलक कालि जौ भयऊः । तुम्ह कहूँ बिपति बीजु बिधि बयऊ ॥
रेख खँचाइ कहउँ बलु भाषी । भामिनि भइहु दूध कइ माखी ॥
जौ सुत सहित करहु सेवकाई । तौ घर रहहु न आन उपाई ॥

दो. कदूँ बिनतहि दीन्ह दुसु तुम्हहि कौसिलाँ देब ।

भरतु बंदिगृह सेइहहिं लखनु राम के नेब ॥ १९ ॥

कैकयसुता सुनत कटु बानी । कहि न सकइ कछु सहमि सुखानी ॥
तन पसेउ कदली जिमि काँपी । कुबरीं दसन जीभ तब चाँपी ॥
कहि कहि कोटिक कपट कहानी । धीरजु धरहु प्रबोधिसि रानी ॥
फिरा करमु प्रिय लागि कुचाली । बकिहि सराहइ मानि मराली ॥
सुनु मंथरा बात फुरि तोरी । दहिनि आँखि नित फरकइ मोरी ॥
दिन प्रति देखउँ राति कुसपने । कहउँ न तोहि मोह बस अपने ॥
काह करौ सखि सूध सुभाऊ । दाहिन वाम न जानउँ काऊ ॥

दो. अपने चलत न आजु लागि अनभल काहुक कीन्ह ।

केहिं अघ एकहि बार मोहि दैअँ दुसह दुसु दीन्ह ॥ २० ॥

नैहर जनमु भरब बरु जाइ । जिअत न करबि सवति सेवकाई ॥
अरि बस दैउ जिआवत जाही । मरनु नीक तेहि जीवन चाही ॥
दीन बचन कह बहुबिधि रानी । सुनि कुबरीं तियमाया ठानी ॥
अस कस कहहु मानि मन ऊना । सुखु सोहागु तुम्ह कहूँ दिन दूना ॥
जेहिं राउर अति अनभल ताका । सोइ पाइहि यहु फलु परिपाका ॥
जब तें कुमत सुना मै स्वामिनि । भूख न बासर नीद न जामिनि ॥
पूँछेउ गुनिन्ह रेख तिन्ह खाँची । भरत भुआल होहिं यह साँची ॥

भामिनि करहु त कहौ उपाऊ । है तुम्हरी सेवा बस राऊ ॥

दो. परउँ कूप तुअ बचन पर सकउँ पूत पति त्यागि ।
कहसि मोर दुखु देखि बड़ कस न करब हित लागि ॥ २१ ॥

कुबरीं करि कबुली कैकेई । कपट छुरी उर पाहन टेई ॥
लखइ न रानि निकट दुखु कैसे । चरइ हरित तिन बलिपसु जैसें ॥
सुनत बात मृदु अंत कठोरी । देति मनहुँ मधु माहुर घोरी ॥
कहइ चेरि सुधि अहइ कि नाही । स्वामिनि कहिहु कथा मोहि पाही ॥
दुइ बरदान भूप सन थाती । मागहु आजु जुड़ावहु छाती ॥
सुतहि राजु रामहि बनवासु । देहु लेहु सब सवति हुलासु ॥
भूपति राम सपथ जब करई । तब मागेहु जेहिं बचनु न टरई ॥
होइ अकाजु आजु निसि बीते । बचनु मोर प्रिय मानेहु जी ते ॥

दो. बड़ कुघातु करि पातकिनि कहेसि कोपगृहँ जाहु ।
काजु सँवारेहु सजग सबु सहसा जनि पतिआहु ॥ २२ ॥

कुबरिहि रानि प्रानप्रिय जानी । बार बार बड़ि बुद्धि बखानी ॥
तोहि सम हित न मोर संसारा । बहे जात कइ भइसि अधारा ॥
जौ बिधि पुरब मनोरथु काली । करौ तोहि चख पूतरि आली ॥
बहुबिधि चेरिहि आदरु देई । कोपभवन गवनि कैकेई ॥
बिपति बीजु बरषा रितु चेरी । भुईं भइ कुमति कैकेई केरी ॥
पाइ कपट जलु अंकुर जामा । बर दोउ दल दुख फल परिनामा ॥
कोप समाजु साजि सबु सोई । राजु करत निज कुमति बिगोई ॥
राउर नगर कोलाहलु होई । यह कुचालि कछु जान न कोई ॥

दो. प्रमुदित पुर नर नारि । सब सजहिं सुमंगलचार ।
एक प्रबिसहिं एक निर्गमहिं भीर भूप दरबार ॥ २३ ॥

बाल सखा सुन हियँ हरषाही । मिलि दस पाँच राम पहिं जाही ॥
प्रभु आदरहिं प्रेमु पहिचानी । पूँछहिं कुसल खेम मृदु बानी ॥
फिरहिं भवन प्रिय आयसु पाई । करत परसपर राम बड़ाई ॥
को रघुबीर सरिस संसारा । सीलु सनेह निबाहनिहारा ।
जेहिं जेहिं जोनि करम बस भ्रमही । तहँ तहँ ईसु देउ यह हमही ॥
सेवक हम स्वामी सियनाहू । होउ नात यह ओर निबाहू ॥
अस अभिलाषु नगर सब काहू । कैकयसुता हृदयँ अति दाहू ॥
को न कुसंगति पाइ नसाई । रहइ न नीच मते चतुराई ॥

दो. साँस समय सानंद नृपु गयउ कैकेई गेहँ ।
गवनु निठुरता निकट किय जनु धरि देह सनेहँ ॥ २४ ॥

कोपभवन सुनि सकुचेउ राउ । भय बस अगहुड़ परइ न पाऊ ॥
सुरपति बसइ बाहँबल जाके । नरपति सकल रहहिं रुख ताके ॥
सो सुनि तिय रिस गयउ सुखाई । देखहु काम प्रताप बड़ाई ॥
सूल कुलिस असि अँगवनिहारे । ते रतिनाथ सुमन सर मारे ॥
सभय नरेसु प्रिया पहिं गयऊ । देखि दसा दुखु दारुन भयऊ ॥

भूमि सयन पटु मोट पुराना । दिए डारि तन भूषण नाना ॥
कुमतिहि कसि कुबेषता फाबी । अन अहिवातु सूच जनु भाबी ॥
जाइ निकट नृपु कह मृदु बानी । प्रानप्रिया केहि हेतु रिसानी ॥

छं. केहि हेतु रानि रिसानि परसत पानि पतिहि नेवारई ।
मानहुँ सरोष भुअंग भामिनि बिषम भाँति निहारई ॥
दोउ बासना रसना दसन बर मरम ठाहरु देखई ।
तुलसी नृपति भवतव्यता बस काम कौतुक लेखई ॥

सो. बार बार कह राउ सुमुखि सुलोचिनि पिकबचनि ।
कारन मोहि सुनाउ गजगामिनि निज कोप कर ॥ २५ ॥

अनहित तोर प्रिया केई कीन्हा । केहि दुइ सिर केहि जमु चह लीन्हा ॥
कहु केहि रंकहि करौ नरेसु । कहु केहि नृपहि निकासौ देसु ॥
सकउँ तोर अरि अमरउ मारी । काह कीट बपुरे नर नारी ॥
जानसि मोर सुभाउ बरोरु । मनु तव आनन चंद चकोरु ॥
प्रिया प्रान सुत सरबसु मोरें । परिजन प्रजा सकल बस तोरें ॥
जौ कछु कहौ कपटु करि तोही । भामिनि राम सपथ सत मोही ॥
बिहसि मागु मनभावति बाता । भूषन सजहि मनोहर गाता ॥
घरी कुघरी समुझि जियँ देखू । बेगि प्रिया परिहरहि कुबेषू ॥

दो. यह सुनि मन गुनि सपथ बड़ि बिहसि उठी मतिमंद ।
भूषन सजति बिलोकि मृगु मनहुँ किरातिनि फंद ॥ २६ ॥

पुनि कह राउ सुहृद जियँ जानी । प्रेम पुलकि मृदु मंजुल बानी ॥
भामिनि भयउ तोर मनभावा । घर घर नगर अनंद बधावा ॥
रामहि देउँ कालि जुबराजू । सजहि सुलोचनि मंगल साजू ॥
दलकि उठेउ सुनि हृदउ कठोरु । जनु छुइ गयउ पाक बरतोरु ॥
ऐसिउ पीर बिहसि तेहि गोई । चोर नारि जिमि प्रगटि न रोई ॥
लखहिं न भूप कपट चतुराई । कोटि कुटिल मनि गुरु पढ़ाई ॥
जद्यपि नीति निपुन नरनाहू । नारिचरित जलनिधि अवगाहू ॥
कपट सनेहु बड़ाइ बहोरी । बोली बिहसि नयन मुहु मोरी ॥

दो. मागु मागु पै कहहु पिय कबहुँ न देहु न लेहु ।
देन कहेहु बरदान दुइ तेउ पावत संदेहु ॥ २७ ॥

जानेउँ मरमु राउ हँसि कहई । तुम्हहि कोहाब परम प्रिय अहई ॥
थाति राखि न मागिहु काऊ । बिसरि गयउ मोहि भोर सुभाऊ ॥
झूठेहुँ हमहि दोषु जनि देहु । दुइ कै चारि मागि मकु लेहु ॥
रघुकुल रीति सदा चलि आई । प्रान जाहुँ बरु बचनु न जाई ॥
नहिं असत्य सम पातक पुंजा । गिरि सम होहिं कि कोटिक गुंजा ॥
सत्यमूल सब सुकृत सुहाए । बेद पुरान बिदित मनु गाए ॥
तेहि पर राम सपथ करि आई । सुकृत सनेह अवधि रघुराई ॥
बात दृढ़ाइ कुमति हँसि बोली । कुमत कुबिहग कुलह जनु खोली ॥

दो. भूप मनोरथ सुभग बनु सुख सुबिहंग समाजु ।

भिल्लनि जिमि छाड़न चहति बचनु भयंकरु बाजु ॥ २८ ॥

मासपारायण, तेरहवाँ विश्राम

सुनहु प्रानप्रिय भावत जी का। देहु एक बर भरतहि टीका ॥
मागउँ दूसर बर कर जोरी। पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी ॥
तापस बेष बिसेषि उदासी। चौदह बरिस रामु बनवासी ॥
सुनि मृदु बचन भूप हियँ सोकू। ससि कर छुअत बिकल जिमि कोकू ॥
गयउ सहमि नहिं कछु कहि आवा। जनु सचान बन झपटेउ लावा ॥
बिबरन भयउ निपट नरपालू। दामिनि हनेउ मनहुँ तरु तालू ॥
माथे हाथ मूदि दोउ लोचन। तनु धरि सोचु लाग जनु सोचन ॥
मोर मनोरथु सुरतरु फूला। फरत करिनि जिमि हतेउ समूला ॥
अवध उजारि कीन्हि कैकेई। दीन्हसि अचल बिपति कै नेई ॥

दो. कवनें अवसर का भयउ गयउँ नारि बिस्वास।

जोग सिद्धि फल समय जिमि जतिहि अबिद्या नास ॥ २९ ॥

एहि बिधि राउ मनहिं मन झाँखा। देखि कुभाँति कुमति मन माखा ॥
भरतु कि राउर पूत न होही। आनेहु मोल बेसाहि कि मोही ॥
जो सुनि सरु अस लाग तुम्हारेँ। काहे न बोलहु बचनु सँभारे ॥
देहु उतरु अनु करहु कि नाही। सत्यसंध तुम्ह रघुकुल माहीं ॥
देन कहेहु अब जनि बरु देहु। तजहुँ सत्य जग अपजसु लेहु ॥
सत्य सराहि कहेहु बरु देना। जानेहु लेइहि मागि चबेना ॥
सिबि दधीचि बलि जो कछु भाषा। तनु धनु तजेउ बचन पनु राखा ॥
अति कटु बचन कहति कैकेई। मानहुँ लोन जरे पर देई ॥

दो. धरम धुरंधर धीर धरि नयन उघारे रायँ।

सिरु धुनि लीन्हि उसास असि मारेसि मोहि कुठायँ ॥ ३० ॥

आगेँ दीखि जरत रिस भारी। मनहुँ रोष तरवारि उघारी ॥
मूठि कुबुद्धि धार निठुराई। धरी कूबरीं सान बनाई ॥
लखी महीप कराल कठोरा। सत्य कि जीवनु लेइहि मोरा ॥
बोले राउ कठिन करि छाती। बानी सविनय तासु सोहाती ॥
प्रिया बचन कस कहसि कुभाँती। भीर प्रतीति प्रीति करि हाँती ॥
मोरेँ भरतु रामु दुइ आँखी। सत्य कहउँ करि संकरु साखी ॥
अवसि दूतु मै पठइब प्राता। ऐहहिं बेगि सुनत दोउ भ्राता ॥
सुदिन सोधि सबु साजु सजाई। देउँ भरत कहूँ राजु बजाई ॥

दो. लोभु न रामहि राजु कर बहुत भरत पर प्रीति।

मै बड़ छोट बिचारि जियँ करत रहेउँ नृपनीति ॥ ३१ ॥

राम सपथ सत कहूँ सुभाऊ। राममातु कछु कहेउ न काऊ ॥
मै सबु कीन्ह तोहि बिनु पूँछेँ। तेहि तें परेउ मनोरथु छूँछेँ ॥
रिस परिहरू अब मंगल साजू। कछु दिन गएँ भरत जुबराजू ॥
एकहि बात मोहि दुखु लागा। बर दूसर असमंजस मागा ॥
अजहुँ हृदय जरत तेहि आँचा। रिस परिहास कि साँचेहुँ साँचा ॥
कहु तजि रोषु राम अपराधू। सबु कोउ कहइ रामु सुठि साधू ॥

तुहूँ सराहसि करसि सनेहू। अब सुनि मोहि भयउ संदेहू ॥
जासु सुभाउ अरिहि अनुकूला। सो किमि करिहि मातु प्रतिकूला ॥

दो. प्रिया हास रिस परिहरहि मागु बिचारि बिबेकु।

जेहिं देखौ अब नयन भरि भरत राज अभिषेकु ॥ ३२ ॥

जिए मीन बरू बारि बिहीना। मनि बिनु फनिकु जिए दुख दीना ॥
कहउँ सुभाउ न छलु मन माहीं। जीवनु मोर राम बिनु नाहीं ॥
समुझि देखु जियँ प्रिया प्रवीना। जीवनु राम दरस आधीना ॥
सुनि म्रदु बचन कुमति अति जरई। मनहुँ अनल आहुति घृत परई ॥
कहइ करहु किन कोटि उपाया। इहाँ न लागिहि राउरि माया ॥
देहु कि लेहु अजसु करि नाही। मोहि न बहुत प्रपंच सोहाहीं।
रामु साधु तुम्ह साधु सयाने। राममातु भलि सब पहिचाने ॥
जस कौसिलाँ मोर भल ताका। तस फलु उन्हेहि देउँ करि साका ॥

दो. होत प्रात मुनिबेष धरि जौ न रामु बन जाहिं।

मोर मरनु राउर अजस नृप समुझिअ मन माहिं ॥ ३३ ॥

अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी। मानहुँ रोष तरंगिनि बाढ़ी ॥
पाप पहार प्रगट भइ सोई। भरी क्रोध जल जाइ न जोई ॥
दोउ बर कूल कठिन हठ धारा। भवँर कूबरी बचन प्रचारा ॥
ढाहत भूपरूप तरु मूला। चली बिपति बारिधि अनुकूला ॥
लखी नरस बात फुरि साँची। तिय मिस मीचु सीस पर नाची ॥
गहि पद विनय कीन्ह बैठारी। जनि दिनकर कुल होसि कुठारी ॥
मागु माथ अबहीं देउँ तोही। राम बिरहँ जनि मारसि मोही ॥
राखु राम कहूँ जेहि तेहि भाँती। नाहिं त जरिहि जनम भरि छाती ॥

दो. देखी ब्याधि असाध नृपु परेउ धरनि धुनि माथ।

कहत परम आरत बचन राम राम रघुनाथ ॥ ३४ ॥

ब्याकुल राउ सिथिल सब गाता। करिनि कलपतरु मनहुँ निपाता ॥
कंठु सूख मुख आव न बानी। जनु पाठीनु दीन बिनु पानी ॥
पुनि कह कटु कठोर कैकेई। मनहुँ घाय महुँ माहुर देई ॥
जौ अंतहुँ अस करतबु रहेऊ। मागु मागु तुम्ह कहिं बल कहेऊ ॥
दुइ कि होइ एक समय भुआला। हँसब ठठाइ फुलाउब गाला ॥
दानि कहाउब अरु कृपनाई। होइ कि खेम कुसल रौताई ॥
छाड़हु बचनु कि धीरजु धरहू। जनि अबला जिमि करुना करहू ॥
तनु तिय तनय धामु धनु धरनी। सत्यसंध कहूँ तून सम बरनी ॥

दो. मरम बचन सुनि राउ कह कहु कछु दोषु न तोर।

लागेउ तोहि पिसाच जिमि कालु कहावत मोर ॥ ३५ ॥

चहत न भरत भूपतहि भोरें। बिधि बस कुमति बसी जिय तोरें ॥
सो सबु मोर पाप परिनामू। भयउ कुठाहर जेहिं बिधि बामू ॥
सुबस बसिहि फिरि अवध सुहाई। सब गुन धाम राम प्रभुताई ॥
करिहिं भाइ सकल सेवकाई। होइहि तिहुँ पुर राम बड़ाई ॥

तोर कलंकु मोर पछिताऊ । मुएहुँ न मिटहि न जाइहि काऊ ॥
अब तोहि नीक लाग करु सोई । लोचन ओट बैठ मुहु गोई ॥
जब लगि जिअौ कहउँ कर जोरी । तब लगि जनि कछु कहसि बहोरी ॥
फिरि पछितैहसि अंत अभागी । मारसि गाइ नहारु लागी ॥

दो. परेउ राउ कहि कोटि बिधि काहे करसि निदानु ।
कपट सयानि न कहति कछु जागति मनहुँ मसानु ॥ ३६ ॥

राम राम रट बिकल भुआलू । जनु विनु पंख बिहंग बेहालू ॥
हृदयँ मनाव भोरु जनि होई । रामहि जाइ कहै जनि कोई ॥
उदउ करहु जनि रवि रघुकुल गुर । अवध बिलोकि सूल होइहि उर ॥
भूप प्रीति कैकइ कठिनाई । उभय अवधि बिधि रची बनाई ॥
बिलपत नृपहि भयउ भिनुसारा । बीना बेनु संख धुनि द्वारा ॥
पढ़हिं भाट गुन गावहिं गायक । सुनत नृपहि जनु लागहिं सायक ॥
मंगल सकल सोहाहिं न कैसें । सहगामिनिहि बिभूषन जैसें ॥
तेहिं निसि नीद परी नहि काहू । राम दरस लालसा उछाहू ॥

दो. द्वार भीर सेवक सचिव कहहिं उदित रवि देखि ।
जागेउ अजहुँ न अवधपति कारनु कवनु बिसेषि ॥ ३७ ॥

पछिले पहर भूपु नित जागा । आजु हमहि बड़ अचरजु लागा ॥
जाहु सुमंत्र जगावहु जाई । कीजिअ काजु रजायसु पाई ॥
गए सुमंत्रु तब राउर माही । देखि भयावन जात डेराही ॥
धाइ खाइ जनु जाइ न हेरा । मानहुँ बिपति बिषाद बसेरा ॥
पूछें कोउ न ऊतरु देई । गए जेहिं भवन भूप कैकेई ॥
कहि जयजीव बैठ सिरु नाई । देखि भूप गति गयउ सुखाई ॥
सोच बिकल बिबरन महि परेऊ । मानहुँ कमल मूलु परिहरेऊ ॥
सचिउ सभित सकइ नहिं पूँछी । बोली असुभ भरी सुभ छुछी ॥

दो. परी न राजहि नीद निसि हेतु जान जगदीसु ।
रामु रामु रटि भोरु किय कहइ न मरमु महीसु ॥ ३८ ॥

आनहु रामहि बेगि बोलाई । समाचार तब पूँछेहु आई ॥
चलेउ सुमंत्र राय रूख जानी । लखी कुचालि कीन्हि कछु रानी ॥
सोच बिकल मग परइ न पाऊ । रामहि बोलि कहिहि का राऊ ॥
उर धरि धीरजु गयउ दुआरें । पूँछहिं सकल देखि मनु मारें ॥
समाधानु करि सो सबही का । गयउ जहाँ दिनकर कुल टीका ॥
रामु सुमंत्रहि आवत देखा । आदरु कीन्हि पिता सम लेखा ॥
निरखि बदनु कहि भूप रजाई । रघुकुलदीपहि चलेउ लेवाई ॥
रामु कुभाँति सचिव सँग जाही । देखि लोग जहँ तहँ बिलखाही ॥

दो. जाइ दीख रघुबंसमनि नरपति निपट कुसाजु ॥
सहमि परेउ लखि सिंधिनिहि मनहुँ वृद्ध गजराजु ॥ ३९ ॥

सूखहिं अधर जरइ सबु अंगू । मनहुँ दीन मनिहीन भुअंगू ॥
सरुष समीप दीखि कैकेई । मानहुँ मीचु घरी गनि लेई ॥

करनामय मृदु राम सुभाऊ । प्रथम दीख दुखु सुना न काऊ ॥
तदपि धीर धरि समउ बिचारी । पूँछी मधुर बचन महतारी ॥
मोहि कहु मातु तात दुख कारन । करिअ जतन जेहिं होइ निवारन ॥
सुनहु राम सबु कारन एहू । राजहि तुम पर बहुत सनेहू ॥
देन कहेन्हि मोहि दुइ बरदाना । मागेउँ जो कछु मोहि सोहाना ।
सो सुनि भयउ भूप उर सोचू । छाड़ि न सकहिं तुम्हार सँकोचू ॥

दो. सुत सनेह इत बचनु उत संकट परेउ नरेसु ।
सकहु न आयसु धरहु सिर मेटहु कठिन कलेसु ॥ ४० ॥

निधरक बैठि कहइ कटु बानी । सुनत कठिनता अति अकुलानी ॥
जीभ कमान बचन सर नाना । मनहुँ महिप मृदु लच्छु समाना ॥
जनु कठोरपनु धरें सरीरू । सिखइ धनुषविद्या बर वीरू ॥
सब प्रसंगु रघुपतिहि सुनाई । बैठि मनहुँ तनु धरि निठुराई ॥
मन मुसकाइ भानुकुल भानु । रामु सहज आनंद निधानू ॥
बोले बचन बिगत सब दूषन । मृदु मंजुल जनु बाग बिभूषन ॥
सुनु जननी सोइ सुतु बड़भागी । जो पितु मातु बचन अनुरागी ॥
तनय मातु पितु तोषनिहारा । दुर्लभ जननि सकल संसारा ॥

दो. मुनिगन मिलनु बिसेषि बन सबहि भाँति हित मोर ।
तेहि महुँ पितु आयसु बहुरि संमत जननी तोर ॥ ४१ ॥

भरत प्रानप्रिय पावहिं राजू । बिधि सब बिधि मोहि सनमुख आजु ।
जों न जाउँ बन ऐसेहु काजा । प्रथम गनिअ मोहि मृदु समाजा ॥
सेवहिं अरंडु कलपतरु त्यागी । परिहरि अमृत लेहिं बिषु मागी ॥
तेउ न पाइ अस समउ चुकाही । देखु बिचारि मातु मन माही ॥
अंब एक दुखु मोहि बिसेषी । निपट बिकल नरनायकु देखी ॥
थोरिहिं बात पितहि दुख भारी । होति प्रतीति न मोहि महतारी ॥
राउ धीर गुन उदधि अगाधू । भा मोहि ते कछु बड़ अपराधू ॥
जातें मोहि न कहत कछु राऊ । मोरि सपथ तोहि कहु सतिभाऊ ॥

दो. सहज सरल रघुबर बचन कुमति कुटिल करि जान ।
चलइ जोक जल बक्रगति जद्यपि सलिलु समान ॥ ४२ ॥

रहसी रानि राम रुख पाई । बोली कपट सनेहु जनाई ॥
सपथ तुम्हार भरत कै आना । हेतु न दूसर मै कछु जाना ॥
तुम्ह अपराध जोगु नहिं ताता । जननी जनक बंधु सुखदाता ॥
राम सत्य सबु जो कछु कहहू । तुम्ह पितु मातु बचन रत अहहू ॥
पितहि बुझाइ कहहु बलि सोई । चौथेंपन जेहिं अजसु न होई ॥
तुम्ह सम सुअन सुकृत जेहिं दीन्हे । उचित न तासु निरादरु कीन्हे ॥
लागहिं कुमुख बचन सुभ कैसे । मगहँ गयादिक तीरथ जैसे ॥
रामहि मातु बचन सब भाए । जिमि सुरसरि गत सलिल सुहाए ॥

दो. गइ मुरुछा रामहि सुमिरि नृप फिरि करवट लीन्ह ।
सचिव राम आगमन कहि विनय समय सम कीन्ह ॥ ४३ ॥

अवनिप अकनि रामु पगु धारे । धरि धीरजु तब नयन उधारे ॥
सचिवैं सँभारि राउ बैठारे । चरन परत नृप रामु निहारे ॥
लिए सनेह बिकल उर लाई । गै मनि मनहुँ फनिक फिरि पाई ॥
रामहि चितइ रहेउ नरनाहू । चला बिलोचन बारि प्रबाहू ॥
सोक विवस कछु कहै न पारा । हृदयँ लगावत बारहिं बारा ॥
विधिहि मनाव राउ मन माहीं । जेहिं रघुनाथ न कानन जाहीं ॥
सुमिरि महेसहि कहइ निहोरी । बिनती सुनहु सदासिव मोरी ॥
आसुतोष तुम्ह अवढर दानी । आरति हरहु दीन जनु जानी ॥

दो. तुम्ह प्रेरक सब के हृदयँ सो मति रामहि देहु ।
बचनु मोर तजि रहहि घर परिहरि सीलु सनेहु ॥ ४४ ॥

अजसु होउ जग सुजसु नसाऊ । नरक परौ बरु सुरपुरु जाऊ ॥
सब दुख दुसह सहावहु मोही । लोचन ओट रामु जनि हौंही ॥
अस मन गुनइ राउ नहिं बोला । पीपर पात सरिस मनु डोला ॥
रघुपति पितहि प्रेमबस जानी । पुनि कछु कहिहि मातु अनुमानी ॥
देस काल अवसर अनुसारी । बोले बचन बिनीत बिचारी ॥
तात कहउँ कछु करउँ ढिठाई । अनुचितु छमब जानि लरिकाई ॥
अति लघु बात लागि दुखु पावा । काहुँ न मोहि कहि प्रथम जनावा ॥
देखि गोसाईंहि पूँछिउँ माता । सुनि प्रसंगु भए सीतल गाता ॥

दो. मंगल समय सनेह बस सोच परिहरिअ तात ।
आयसु देइअ हरषि हियँ कहि पुलके प्रभु गात ॥ ४५ ॥

धन्य जनमु जगतीतल तासू । पितहि प्रमोदु चरित सुनि जासू ॥
चारि पदारथ करतल ताके । प्रिय पितु मातु प्रान सम जाके ॥
आयसु पालि जनम फलु पाई । ऐहउँ बेगिहिं होउ रजाई ॥
बिदा मातु सन आवउँ मागी । चलिहउँ बनहिं बहुरि पग लागी ॥
अस कहि राम गवनु तब कीन्हा । भूप सोक बसु उतरु न दीन्हा ॥
नगर ब्यापि गइ बात सुतीछी । छुअत चढी जनु सब तन बीछी ॥
सुनि भए बिकल सकल नर नारी । बेलि बिटप जिमि देखि दवारी ॥
जो जहँ सुनइ धुनइ सिरु सोई । बड़ बिषादु नहिं धीरजु होई ॥

दो. मुख सुखाहिं लोचन स्त्रवहिं सोकु न हृदयँ समाइ ।
मनहुँं ड्करुन रस कटकई उतरी अवध बजाइ ॥ ४६ ॥

मिलेहि माझ बिधि बात बेगारी । जहँ तहँ देहिं कैकेइहि गारी ॥
एहि पापनिहि बूझि का परेऊ । छाइ भवन पर पावकु धरेऊ ॥
निज कर नयन काढ़ि चह दीखा । डारि सुधा बिषु चाहत चीखा ॥
कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी । भइ रघुवंस बेनु बन आगी ॥
पालव बैठि पेडु एहिं काटा । सुख महुँं सोक ठाटु धरि ठाटा ॥
सदा रामु एहि प्रान समाना । कारन कवन कुटिलपनु ठाना ॥
सत्य कहहिं कवि नारि सुभाऊ । सब बिधि अगहु अगाध दुराऊ ॥
निज प्रतिबिंबु बरुकु गहि जाई । जानि न जाइ नारि गति भाई ॥

दो. काह न पावकु जारि सक का न समुद्र समाइ ।

का न करै अबला प्रबल केहि जग कालु न खाइ ॥ ४७ ॥

का सुनाइ बिधि काह सुनावा । का देखाइ चह काह देखावा ॥
एक कहहिं भल भूप न कीन्हा । बरु बिचारि नहिं कुमतिहि दीन्हा ॥
जो हठि भयउ सकल दुख भाजनु । अबला बिबस ग्यानु गुनु गा जनु ॥
एक धरम परमिति पहिचाने । नृपहि दोसु नहिं देहिं सयाने ॥
सिबि दधीचि हरिचंद कहानी । एक एक सन कहहिं बखानी ॥
एक भरत कर संमत कहहीं । एक उदास भायँ सुनि रहहीं ॥
कान मूदि कर रद गहि जीहा । एक कहहिं यह बात अलीहा ॥
सुकृत जाहिं अस कहत तुम्हारे । रामु भरत कहूँ प्रानपिआरे ॥

दो. चंदु चवै बरु अनल कन सुधा होइ विषतूल ।
सपनेहुँं कबहुँं न करहिं किछु भरतु राम प्रतिकूल ॥ ४८ ॥

एक बिधातहिं दूषनु देहीं । सुधा देखाइ दीन्हा विषु जेहीं ॥
खरभरु नगर सोचु सब काहु । दुसह दाहु उर मिटा उछाहू ॥
विप्रबधू कुलमान्य जठेरी । ज प्रिय परम कैकेई केरी ॥
लगीं देन सिख सीलु सराही । बचन बानसम लागहिं ताही ॥
भरतु न मोहि प्रिय राम समाना । सदा कहहु यह सबु जगु जाना ॥
करहु राम पर सहज सनेहु । केहिं अपराध आजु वनु देहु ॥
कबहुँं न कियहु सवति आरिसू । प्रीति प्रतीति जान सबु देसू ॥
कौसल्याँ अब काह बिगारा । तुम्ह जेहि लागि बज्र पुर पारा ॥

दो. सीय कि पिय सँगु परिहरिहि लखनु कि रहिहहिं धाम ।
राजु कि भूँजब भरत पुर नृपु कि जीहि बिनु राम ॥ ४९ ॥

अस बिचारि उर छाड़हु कोहू । सोक कलंक कोठि जनि होहू ॥
भरतहि अवसि देहु जुबराजू । कानन काह राम कर काजू ॥
नाहिन रामु राज के भूखे । धरम धुरीन विषय रस रूखे ॥
गुर गृह बसहुँं रामु तजि गेहू । नृप सन अस बरु दूसर लेहू ॥
जौ नहिं लगीहहु कहें हमारे । नहिं लागिहि कछु हाथ तुम्हारे ॥
जौ परिहास कीन्हा कछु होई । तौ कहि प्रगट जनावहु सोई ॥
राम सरिस सुत कानन जोगू । काह कहिहि सुनि तुम्ह कहूँ लोगू ॥
उठहु बेगि सोइ करहु उपाई । जेहि बिधि सोकु कलंकु नसाई ॥

छं. जेहि भाँति सोकु कलंकु जाइ उपाय करि कुल पालही ।
हठि फेरु रामहि जात बन जनि बात दूसरि चालही ॥
जिमि भानु बिनु दिनु प्रान बिनु तनु चंद बिनु जिमि जामिनी ।
तिमि अवध तुलसीदास प्रभु बिनु समुझि धौं जियँ भामिनी ॥

सो. सखिन्ह सिखावनु दीन्हा सुनत मधुर परिनाम हित ।
तेई कछु कान न कीन्हा कुटिल प्रबोधी कूबरी ॥ ५० ॥

उतरु न देइ दुसह रिस रूखी । मृगिन्ह चितव जनु बाधिनि भूखी ॥
व्याधि असाधि जानि तिन्ह त्यागी । चलीं कहत मतिमंद अभागी ॥
राजु करत यह दैअँ बिगोई । कीन्हेसि अस जस करइ न कोई ॥

एहि बिधि बिलपहिं पुर नर नारीं । देहिं कुचालिहि कोटिक गारीं ॥
 जरहिं बिषम जर लेहिं उसासा । कवनि राम बिनु जीवन आसा ॥
 बिपुल बियोग प्रजा अकुलानी । जनु जलचर गन सूखत पानी ॥
 अति बिषाद बस लोग लोगार्ई । गए मातु पहिं रामु गोसाई ॥
 मुख प्रसन्न चित्त चौगुन चाऊ । मिटा सोचु जनि राखै राऊ ॥
 दो. नव गयंदु रघुबीर मनु राजु अलान समान ।
 छोट जानि बन गवनु सुनि उर अनंदु अधिकान ॥ ५१ ॥

रघुकुलतिलक जोरि दोउ हाथा । मुदित मातु पद नायउ माथा ॥
 दीन्हि असीस लाइ उर लीन्है । भूषन बसन निछावरि कीन्है ॥
 बार बार मुख चुंबति माता । नयन नेह जलु पुलकित गाता ॥
 गोद राखि पुनि हृदयै लगाए । स्ववत प्रेनरस पयद सुहाए ॥
 प्रेमु प्रमोदु न कछु कहि जाई । रंक धनद पदवी जनु पाई ॥
 सादर सुंदर बदनु निहारी । बोली मधुर बचन महतारी ॥
 कहहु तात जननी बलिहारी । कबहिं लगन मुद मंगलकारी ॥
 सुकृत सील सुख सीवै सुहाई । जनम लाभ कइ अवधि अघाई ॥
 दो. जेहि चाहत नर नारि सब अति आरत एहि भाँति ।
 जिमि चातक चातकि तृषित वृष्टि सरद रितु स्वाति ॥ ५२ ॥

तात जाउँ बलि बेगि नहाहू । जो मन भाव मधुर कछु खाहू ॥
 पितु समीप तब जाएहु भैआ । भइ बड़ि बार जाइ बलि मैआ ॥
 मातु बचन सुनि अति अनुकूला । जनु सनेह सुरतरु के फूला ॥
 सुख मकरंद भरे श्रियमूला । निरखि राम मनु भवरुं न भूला ॥
 धरम धुरीन धरम गति जानी । कहेउ मातु सन अति मृदु बानी ॥
 पितौ दीन्ह मोहि कानन राजू । जहँ सब भाँति मोर बड़ काजू ॥
 आयसु देहि मुदित मन माता । जेहिं मुद मंगल कानन जाता ॥
 जनि सनेह बस डरपसि भोरें । आनंदु अंब अनुग्रह तोरें ॥
 दो. बरष चारिदस बिपिन बसि करि पितु बचन प्रमान ।
 आइ पाय पुनि देखिहउँ मनु जनि करसि मलान ॥ ५३ ॥

बचन बिनीत मधुर रघुबर के । सर सम लगे मातु उर करके ॥
 सहमि सूखि सुनि सीतलि बानी । जिमि जवास परें पावस पानी ॥
 कहि न जाइ कछु हृदय बिषादू । मनहुँ मृगी सुनि केहरि नादू ॥
 नयन सजल तन थर थर काँपी । माजहि खाइ मीन जनु मापी ॥
 धरि धीरजु सुत बदनु निहारी । गदगद बचन कहति महतारी ॥
 तात पितहि तुम्ह प्रानपिआरे । देखि मुदित नित चरित तुम्हारे ॥
 राजु देन कहँ सुभ दिन साधा । कहेउ जान बन केहिं अपराधा ॥
 तात सुनावहु मोहि निदानू । को दिनकर कुल भयउ कृसानू ॥
 दो. निरखि राम रुख सचिवसुत कारनु कहेउ बुझाइ ।
 सुनि प्रसंगु रहि मूक जिमि दसा बरनि नहिं जाइ ॥ ५४ ॥

राखि न सकइ न कहि सक जाहू । दुहँ भाँति उर दारुन दाहू ॥
 लिखत सुधाकर गा लिखि राहू । बिधि गति बाम सदा सब काहू ॥

धरम सनेह उभयँ मति घेरी । भइ गति साँप छुछुंदरि केरी ॥
 राखउँ सुतहि करउँ अनुरोधू । धरमु जाइ अरु बंधु बिरोधू ॥
 कहउँ जान बन तौ बड़ि हानी । संकट सोच बिबस भइ रानी ॥
 बहुरि समुझि तिय धरमु सयानी । रामु भरतु दोउ सुत सम जानी ॥
 सरल सुभाउ राम महतारी । बोली बचन धीर धरि भारी ॥
 तात जाउँ बलि कीन्हैहु नीका । पितु आयसु सब धरमक टीका ॥

दो. राजु देन कहि दीन्ह बनु मोहि न सो दुख लेसु ।
 तुम्ह बिनु भरतहि भूपतिहि प्रजहि प्रचंड कलेसु ॥ ५५ ॥

जौ केवल पितु आयसु ताता । तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता ॥
 जौ पितु मातु कहेउ बन जाना । तौ कानन सत अवध समाना ॥
 पितु बनदेव मातु बनदेवी । खग मृग चरन सरोरुह सेवी ॥
 अंतहुँ उचित नृपहि बनबासू । बय बिलोकि हियँ होइ हरौसू ॥
 बड़भागी बनु अवध अभागी । जो रघुबंसतिलक तुम्ह त्यागी ॥
 जौ सुत कहौ संग मोहि लेहू । तुम्हरे हृदयँ होइ संदेहू ॥
 पूत परम प्रिय तुम्ह सबही के । प्रान प्रान के जीवन जी के ॥
 ते तुम्ह कहहु मातु बन जाऊँ । मै सुनि बचन बैठि पछिताऊँ ॥

दो. यह बिचारि नहिं करउँ हठ झूठ सनेहु बड़ाइ ।
 मानि मातु कर नात बलि सुरति बिसरि जनि जाइ ॥ ५६ ॥

देव पितर सब तुन्हहि गोसाई । राखहुँ पलक नयन की नाई ॥
 अवधि अंबु प्रिय परिजन मीना । तुम्ह करुनाकर धरम धुरीना ॥
 अस बिचारि सोइ करहु उपाई । सबहि जिअत जेहिं भेंटेहु आई ॥
 जाहु सुखेन बनहि बलि जाऊँ । करि अनाथ जन परिजन गाऊँ ॥
 सब कर आजु सुकृत फल बीता । भयउ कराल कालु बिपरीता ॥
 बहुबिधि बिलपि चरन लपटानी । परम अभागिनि आपुहि जानी ॥
 दारुन दुसह दाहु उर ब्यापा । बरनि न जाहिं बिलाप कलापा ॥
 राम उठाइ मातु उर लाई । कहि मृदु बचन बहुरि समुझाई ॥

दो. समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाइ ।
 जाइ सासु पद कमल जुग बंदि बैठि सिरु नाइ ॥ ५७ ॥

दीन्हि असीस सासु मृदु बानी । अति सुकुमारि देखि अकुलानी ॥
 बैठि नमितमुख सोचति सीता । रूप रासि पति प्रेम पुनीता ॥
 चलन चहत बन जीवननाथू । केहि सुकृती सन होइहि साथू ॥
 की तनु प्रान कि केवल प्राना । बिधि करतबु कछु जाइ न जाना ॥
 चारु चरन नख लेखति धरनी । नूपुर मुखर मधुर कवि बरनी ॥
 मनहुँ प्रेम बस बिनती करहीं । हमहि सीय पद जनि परिहरहीं ॥
 मंजु बिलोचन मोचति बारी । बोली देखि राम महतारी ॥
 तात सुनहु सिय अति सुकुमारी । सासु ससुर परिजनहि पिआरी ॥

दो. पिता जनक भूपाल मनि ससुर भानुकुल भानु ।
 पति रबिकुल कैरव बिपिन बिधु गुन रूप निधानु ॥ ५८ ॥

मैं पुनि पुत्रबधू प्रिय पाई । रूप रासि गुन सील सुहाई ॥
नयन पुतरि करि प्रीति बढ़ाई । राखेउँ प्रान जानिकिहिं लाई ॥
कलपबेलि जिमि बहुबिधि लाली । सीचि सनेह सलिल प्रतिपाली ॥
फूलत फलत भयउ विधि बामा । जानि न जाइ काह परिनामा ॥
पलंग पीठ तजि गोद हिंडोरा । सियँ न दीन्ह पगु अवनि कठोरा ॥
जिअनमूरि जिमि जोगवत रहऊँ । दीप बाति नहिं टारन कहऊँ ॥
सोइ सिय चलन चहति बन साथ । आयसु काह होइ रघुनाथा ।
चंद किरन रस रसिक चकोरी । रबि रुख नयन सकइ किमि जोरी ॥

दो. करि केहरि निसिचर चरहिं दुष्ट जंतु बन भूरि ।
बिष बाटिकाँ कि सोह सुत सुभग सजीवनि मूरि ॥ ५९ ॥

बन हित कोल किरात किसोरी । रचीं बिरंचि विषय सुख भोरी ॥
पाइन कृमि जिमि कठिन सुभाऊ । तिन्हहि कलेसु न कानन काऊ ॥
कै तापस तिय कानन जोगू । जिन्ह तप हेतु तजा सब भोगू ॥
सिय बन बसिहि तात केहि भाँती । चित्रलिखित कपि देखि डेराती ॥
सुरसर सुभग बनज बन चारी । डाबर जोगु कि हंसकुमारी ॥
अस बिचारि जस आयसु होई । मैं सिख देउँ जानिकिहि सोई ॥
जौ सिय भवन रहै कह अंबा । मोहि कहँ होइ बहुत अवलंबा ॥
सुनि रघुवीर मातु प्रिय बानी । सील सनेह सुधाँ जनु सानी ॥

दो. कहि प्रिय बचन बिबेकमय कीन्हि मातु परितोष ।
लगे प्रबोधन जानिकिहि प्रगटि बिपिन गुन दोष ॥ ६० ॥

मासपारायण, चौदहवाँ विश्राम

मातु समीप कहत सकुचाहीं । बोले समउ समुझि मन माहीं ॥
राजकुमारि सिखावन सुनहू । आन भाँति जियँ जनि कछु गुनहू ॥
आपन मोर नीक जौ चहहू । बचनु हमार मानि गृह रहहू ॥
आयसु मोर सासु सेवकाई । सब विधि भामिनि भवन भलाई ॥
एहि ते अधिक धरमु नहिं दूजा । सादर सासु ससुर पद पूजा ॥
जब जब मातु करिहि सुधि मोरी । होइहि प्रेम बिकल मति भोरी ॥
तब तब तुम्ह कहि कथा पुरानी । सुंदरि समुझाएहु मृदु बानी ॥
कहउँ सुभायँ सपथ सत मोही । सुमुखि मातु हित राखउँ तोही ॥

दो. गुर श्रुति संमत धरम फलु पाइअ बिनहिं कलेस ।
हठ बस सब संकट सहे गालव नहुष नरेस ॥ ६१ ॥

मैं पुनि करि प्रवान पितु बानी । बेगि फिरब सुनु सुमुखि सयानी ॥
दिवस जात नहिं लागिहि बारा । सुंदरि सिखवनु सुनहु हमारा ॥
जौ हठ करहु प्रेम बस बामा । तौ तुम्ह दुखु पाउब परिनामा ॥
काननु कठिन भयंकरु भारी । घोर घामु हिम बारि बयारी ॥
कुस कंटक मग काँकर नाना । चलब पयादेहिं बिनु पदवाना ॥
चरन कमल मुहु मंजु तुम्हारे । मारग अगम भूमिधर भारे ॥
कंदर खोह नदी नद नारे । अगम अगाध न जाहिं निहारे ॥
भालु बाध बूक केहरि नागा । करहिं नाद सुनि धीरजु भागा ॥

दो. भूमि सयन बलकल बसन असनु कंद फल मूल ।
ते कि सदा सब दिन मिलिहिं सबुइ समय अनुकूल ॥ ६२ ॥

नर अहार रजनीचर चरहीं । कपट बेष विधि कोटिक करहीं ॥
लागइ अति पहार कर पानी । बिपिन बिपति नहिं जाइ बखानी ॥
ब्याल कराल बिहग बन घोरा । निसिचर निकर नारि नर चोरा ॥
डरपहिं धीर गहन सुधि आएँ । मृगलोचनि तुम्ह भीरु सुभाएँ ॥
हंसगवनि तुम्ह नहिं बन जोगू । सुनि अपजसु मोहि देइहि लोगू ॥
मानस सलिल सुधाँ प्रतिपाली । जिअइ कि लवन पयोधि मराती ॥
नव रसाल बन बिहरनसीला । सोह कि कोकिल बिपिन करीला ॥
रहहु भवन अस हृदयँ बिचारी । चंदबदनि दुखु कानन भारी ॥

दो. सहज सुहृद गुर स्वामि सिख जो न करइ सिर मानि ॥
सो पछिताइ अघाइ उर अवसि होइ हित हानि ॥ ६३ ॥

सुनि मृदु बचन मनोहर पिय के । लोचन ललित भरे जल सिय के ॥
सीतल सिख दाहक भइ कैसें । चकइहि सरद चंद निसि जैसें ॥
उतरु न आव बिकल बैदेही । तजन चहत सुचि स्वामि सनेही ॥
बरबस रोकि बिलोचन बारी । धरि धीरजु उर अवनिकुमारी ॥
लागि सासु पग कह कर जोरी । छुमबि देवि बड़ि अबिनय मोरी ॥
दीन्हि प्रानपति मोहि सिख सोई । जेहि विधि मोर परम हित होई ॥
मैं पुनि समुझि दीखि मन माहीं । पिय बियोग सम दुखु जग नाहीं ॥

दो. प्राननाथ करुनायतन सुंदर सुखद सुजान ।
तुम्ह बिनु रघुकुल कुमुद बिधु सुरपुर नरक समान ॥ ६४ ॥

मातु पिता भगिनी प्रिय भाई । प्रिय परिवारु सुहृद समुदाई ॥
सासु ससुर गुर सजन सहाई । सुत सुंदर सुसील सुखदाई ॥
जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते । पिय बिनु तियहि तरनिहु ते ताते ॥
तनु धनु धामु धरनि पुर राजू । पति बिहीन सबु सोक समाजू ॥
भोग रोगसम भूषन भारू । जम जातना सरिस संसारू ॥
प्राननाथ तुम्ह बिनु जग माहीं । मो कहुँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं ॥
जिय बिनु देह नदी बिनु बारी । तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी ॥
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे । सरद बिमल बिधु बदनु निहारे ॥

दो. खग मृग परिजन नगरु वनु बलकल बिमल दुकूल ।
नाथ साथ सुरसदन सम परनसाल सुख मूल ॥ ६५ ॥

बनदेवीं बनदेव उदारा । करिहहिं सासु ससुर सम सारा ॥
कुस किसलय साथरी सुहाई । प्रभु सँग मंजु मनोज तुराई ॥
कंद मूल फल अमिअ अहारू । अवध सौध सत सरिस पहारू ॥
छिनु छिनु प्रभु पद कमल बिलोकि । रहिहउँ मुदित दिवस जिमि कोकी ॥
बन दुख नाथ कहे बहुतेरे । भय बिषाद परिताप घनेरे ॥
प्रभु बियोग लवलेस समाना । सब मिलि होहिं न कृपानिधाना ॥
अस जियँ जानि सुजान सिरोमनि । लेइअ संग मोहि छाड़िअ जनि ॥
बिनती बहुत करौं का स्वामी । करुनामय उर अंतरजामी ॥

दो. राखिअ अवध जो अवधि लागि रहत न जनिअहिं प्रान ।
दीनबंधु संदर सुखद सील सनेह निधान ॥ ६६ ॥

मोहि मग चलत न होइहि हारी । छिनु छिनु चरन सरोज निहारी ॥
सबहि भाँति पिय सेवा करिहौं । मारग जनित सकल श्रम हरिहौं ॥
पाय पखारी बैठि तरु छाहीं । करिहउँ बाउ मुदित मन माहीं ॥
श्रम कन सहित स्याम तनु देखें । कहँ दुख समउ प्रानपति पेखें ॥
सम महि तनु तरुपल्लव डासी । पाग पलोटिहि सब निसि दासी ॥
बारबार मृदु मूरति जोही । लागहि तात बयारि न मोही ।
को प्रभु संग मोहि चितवनिहारा । सिंघबधुहि जिमि ससक सिआरा ॥
मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू । तुम्हहि उचित तप मो कहँ भोगू ॥

दो. ऐसेउ बचन कठोर सुनि जौं न हृदउ बिलगान ।
तौ प्रभु बिषम बियोग दुख सहिहहिं पावँर प्रान ॥ ६७ ॥

अस कहि सीय बिकल भइ भारी । बचन बियोगु न सकी संभारी ॥
देखि दसा रघुपति जियँ जाना । हठि राखें नहिं राखिहि प्राना ॥
कहेउ कृपाल भानुकुलनाथा । परिहरि सोचु चलहु बन साथा ॥
नहिं बिषाद कर अवसरु आजू । बेगि करहु बन गवन समाजू ॥
कहि प्रिय बचन प्रिया समुझाई । लगे मातु पद आसिष पाई ॥
बेगि प्रजा दुख मेटव आई । जननी निठुर बिसरि जनि जाई ॥
फिरहि दसा विधि बहुरि कि मोरी । देखिहउँ नयन मनोहर जोरी ॥
सुदिन सुघरी तात कब होइहि । जननी जिअत बदन बिधु जोइहि ॥

दो. बहुरि बच्छ कहि लालु कहि रघुपति रघुबर तात ।
कबहिं बोलाइ लगाइ हियँ हरषि निरखिहउँ गात ॥ ६८ ॥

लखि सनेह कातरि महतारी । बचनु न आव बिकल भइ भारी ॥
राम प्रबोधु कीन्ह विधि नाना । समउ सनेहु न जाइ बखाना ॥
तब जानकी सासु पग लागी । सुनिअ माय मैं परम अभागी ॥
सेवा समय दैअं बनु दीन्हा । मोर मनोरथु सफल न कीन्हा ॥
तजब छोभु जनि छाड़िअ छोहू । करमु कठिन कछु दोसु न मोहू ॥
सुनि सिय बचन सासु अकुलानी । दसा कवनि विधि कहौं बखानी ॥
बारहि बार लाइ उर लीन्ही । धरि धीरजु सिख आसिष दीन्ही ॥
अचल होउ अहिवातु तुम्हारा । जब लागि गंग जमुन जल धारा ॥

दो. सीतहि सासु असीस सिख दीन्हि अनेक प्रकार ।
चली नाइ पद पदुम सिरु अति हित बारहिं बार ॥ ६९ ॥

समाचार जब लछिमन पाए । ब्याकुल बिलख बदन उठि धाए ॥
कंप पुलक तन नयन सनीरा । गहे चरन अति प्रेम अधीरा ॥
कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े । मीनु दीन जनु जल तें काढ़े ॥
सोचु हृदयँ विधि का होनिहारा । सबु सुखु सुकृत सिरान हमारा ॥
मो कहँ काह कहब रघुनाथा । रखिहहिं भवन कि लेहहिं साथा ॥

राम बिलोकि बंधु कर जोरें । देह गेह सब सन तनु तोरें ॥
बोले बचनु राम नय नागर । सील सनेह सरल सुख सागर ॥
तात प्रेम बस जनि कदराहू । समुझि हृदयँ परिनाम उछाहू ॥

दो. मातु पिता गुरु स्वामि सिख सिर धरि करहि सुभायँ ।
लहेउ लाभु तिन्ह जनम कर नतरु जनमु जग जायँ ॥ ७० ॥

अस जियँ जानि सुनहु सिख भाई । करहु मातु पितु पद सेवकाई ॥
भवन भरतु रिपुसूदन नाही । राउ बृद्ध मम दुखु मन माहीं ॥
मैं बन जाउँ तुम्हहि लेइ साथा । होइ सबहि विधि अवध अनाथा ॥
गुरु पितु मातु प्रजा परिवारू । सब कहँ परइ दुसह दुख भारू ॥
रहहु करहु सब कर परितोषू । नतरु तात होइहि बड़ दोषू ॥
जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी । सो नृपु अवसि नरक अधिकारी ॥
रहहु तात असि नीति बिचारी । सुनत लखनु भए ब्याकुल भारी ॥
सिअरें बचन सूखि गए कैसें । परसत तुहिन तामरसु जैसें ॥

दो. उतरु न आवत प्रेम बस गहे चरन अकुलाइ ।
नाथ दासु मैं स्वामि तुम्ह तजहु त काह बसाइ ॥ ७१ ॥

दीन्हि मोहि सिख नीकि गोसाई । लागि अगम अपनी कदराई ॥
नरबर धीर धरम धुर धारी । निगम नीति कहँ ते अधिकारी ॥
मैं सिसु प्रभु सनेहँ प्रतिपाला । मंदरु मेरु कि लेहिं मराला ॥
गुरु पितु मातु न जानउँ काहू । कहउँ सुभाउ नाथ पतिआहू ॥
जहँ लगि जगत सनेह सगाई । प्रीति प्रतीति निगम निजु गाई ॥
मोरें सबइ एक तुम्ह स्वामी । दीनबंधु उर अंतरजामी ॥
धरम नीति उपदेसिअ ताही । कीरति भूति सुगति प्रिय जाही ॥
मन क्रम बचन चरन रत होई । कृपासिंधु परिहरिअ कि सोई ॥

दो. करुनासिंधु सुबंध के सुनि मृदु बचन विनीत ।
समुझाए उर लाइ प्रभु जानि सनेहँ सभित ॥ ७२ ॥

मागहु बिदा मातु सन जाई । आवहु बेगि चलहु बन भाई ॥
मुदित भए सुनि रघुबर बानी । भयउ लाभ बड़ गइ बड़ि हानी ॥
हरषित हृदयँ मातु पहिं आए । मनहुँ अंध फिरि लोचन पाए ।
जाइ जननि पग नायउ माथा । मनु रघुनंदन जानकि साथा ॥
पूछे मातु मलिन मन देखी । लखन कही सब कथा बिसेषी ॥
गई सहमि सुनि बचन कठोरा । मृगी देखि दव जनु चहु ओरा ॥
लखन लखेउ भा अनरथ आजू । एहिं सनेह बस करब अकाजू ॥
मागत बिदा सभय सकुचाहीं । जाइ संग विधि कहिहि कि नाही ॥

दो. समुझि सुमित्राँ राम सिय रूप सुसीलु सुभाउ ।
नृप सनेहु लखि धुनेउ सिरु पापिनि दीन्ह कुदाउ ॥ ७३ ॥

धीरजु धरेउ कुअवसर जानी । सहज सुहृद बोली मृदु बानी ॥
तात तुम्हारि मातु बैदेही । पिता रामु सब भाँति सनेही ॥
अवध तहाँ जहँ राम निवासू । तहँ दिवसु जहँ भानु प्रकासू ॥

जौ पै सीय रामु बन जाहीं । अवध तुम्हार काजु कछु नाहिं ॥
गुर पितु मातु बंधु सुर साई । सेइअहिं सकल प्रान की नाई ॥
रामु प्रानप्रिय जीवन जी के । स्वारथ रहित सखा सबही के ॥
पूजनीय प्रिय परम जहाँ तैं । सब मानिअहिं राम के नातैं ॥
अस जियँ जानि संग बन जाहू । लेहु तात जग जीवन लाहू ॥

दो. भूरि भाग भाजनु भयहु मोहि समेत बलि जाउँ ।
जौम तुम्हरें मन छाड़ि छलु कीन्ह राम पद ठाउँ ॥ ७४ ॥

पुत्रवती जुबती जग सोई । रघुपति भगतु जासु सुतु होई ॥
नतरु बाँझ भलि बादि बिआनी । राम विमुख सुत तैं हित जानी ॥
तुम्हरेहिं भाग रामु बन जाहीं । दूसर हेतु तात कछु नाहीं ॥
सकल सुकृत कर बड़ फलु एहू । राम सीय पद सहज सनेहू ॥
राग रोषु इरिषा मदु मोहू । जनि सपनेहुँ इन्ह के बस होहू ॥
सकल प्रकार बिकार बिहाई । मन क्रम बचन करेहु सेवकाई ॥
तुम्ह कहुँ बन सब भाँति सुपासू । सँग पितु मातु रामु सिय जासू ॥
जेहिं न रामु बन लहहिं कलेसू । सुत सोइ करेहु इहइ उपदेसू ॥

छं. उपदेसु यहु जेहिं तात तुम्हरे राम सिय सुख पावही ।
पितु मातु प्रिय परिवार पुर सुख सुरति बन बिसरावहीं ।
तुलसी प्रभुहि सिख देइ आयसु दीन्ह पुनि आसिष दई ।
रति होउ अबिरल अमल सिय रघुबीर पद नित नित नई ॥

सो. मातु चरन सिरु नाइ चले तुरत संकित हृदयँ ।
बागुर विषम तोराइ मनहुँ भाग मृगु भाग बस ॥ ७५ ॥

गए लखनु जहँ जानकिनाथू । भे मन मुदित पाइ प्रिय साथू ॥
बंदि राम सिय चरन सुहाए । चले संग नृपमंदिर आए ॥
कहहिं परसपर पुर नर नारी । भलि बनाइ विधि बात विगारी ॥
तन कूस दुखु बदन मलीने । बिकल मनहुँ माखी मधु छीने ॥
कर मीजहिं सिरु धुनि पछिताहीं । जनु विन पंख बिहग अकुलाहीं ॥
भइ बड़ि भीर भूप दरबारा । बरनि न जाइ बिषादु अपारा ॥
सचिवँ उठाइ राउ बैठारे । कहि प्रिय बचन रामु पगु धारे ॥
सिय समेत दोउ तनय निहारी । ब्याकुल भयउ भूमिपति भारी ॥

दो. सीय सहित सुत सुभग दोउ देखि देखि अकुलाइ ।
बारहिं बार सनेह बस राउ लेइ उर लाइ ॥ ७६ ॥

सकइ न बोलि बिकल नरनाहू । सोक जनित उर दारुन दाहू ॥
नाइ सीसु पद अति अनुरागा । उठि रघुबीर विदा तब मागा ॥
पितु असीस आयसु मोहि दीजै । हरष समय बिसमउ कत कीजै ॥
तात किएँ प्रिय प्रेम प्रमादू । जसु जग जाइ होइ अपबादू ॥
सुनि सनेह बस उठि नरनाहूँ । बैठारे रघुपति गहि बाहूँ ॥
सुनहु तात तुम्ह कहुँ मुनि कहहीं । रामु चराचर नायक अहहीं ॥
सुभ अरु असुभ करम अनुहारी । ईस देइ फलु हृदयँ बिचारी ॥
करइ जो करम पाव फल सोई । निगम नीति असि कह सबु कोई ॥

दो. -औरु करै अपराधु कोउ और पाव फल भोगु ।
अति बिचित्र भगवंत गति को जग जानै जोगु ॥ ७७ ॥

रायँ राम राखन हित लागी । बहुत उपाय किए छलु त्यागी ॥
लखी राम रुख रहत न जाने । धरम धुरंधर धीर सयाने ॥
तब नृप सीय लाइ उर लीन्ही । अति हित बहुत भाँति सिख दीन्ही ॥
कहि बन के दुख दुसह सुनाए । सासु ससुर पितु सुख समुझाए ॥
सिय मनु राम चरन अनुरागा । घरु न सुगमु बनु बिषमु न लागा ॥
औरउ सबहिं सीय समुझाई । कहि कहि बिपिन बिपति अधिकाई ॥
सचिव नारि गुर नारि सयानी । सहित सनेह कहहिं मृदु बानी ॥
तुम्ह कहुँ तौ न दीन्ह बनबासू । करहु जो कहहिं ससुर गुर सासू ॥

दो. -सिख सीतलि हित मधुर मृदु सुनि सीतहि न सोहानि ।
सरद चंद चंदनि लगत जनु चकई अकुलानि ॥ ७८ ॥

सीय सकुच बस उतरु न देई । सो सुनि तमकि उठी कैकेई ॥
मुनि पट भूषन भाजन आनी । आगेँ धरि बोली मृदु बानी ॥
नृपहि प्रान प्रिय तुम्ह रघुबीरा । सील सनेह न छाड़िहि भीरा ॥
सुकृत सुजसु परलोकु नसाऊ । तुम्हहि जान बन कहिहि न काऊ ॥
अस बिचारि सोइ करहु जो भावा । राम जननि सिख सुनि सुखु पावा ॥
भूपहि बचन बानसम लागे । करहिं न प्रान पयान अभागे ॥
लोग बिकल मुरुछित नरनाहू । काह करिअ कछु सूझ न काहू ॥
रामु तुरत मुनि वेषु बनाई । चले जनक जननिहि सिरु नाई ॥

दो. सजि बन साजु समाजु सबु बनिता बंधु समेत ।
बंदि बिप्र गुर चरन प्रभु चले करि सबहि अचेत ॥ ७९ ॥

निकसि बसिष्ठ द्वार भए ठाढ़े । देखे लोग विरह दव दाढ़े ॥
कहि प्रिय बचन सकल समुझाए । बिप्र बंद रघुबीर बोलाए ॥
गुर सन कहि बरषासन दीन्हे । आदर दान विनय बस कीन्हे ॥
जाचक दान मान संतोषे । मीत पुनीत प्रेम परितोषे ॥
दासी दास बोलाइ बहोरी । गुरहि सौँपि बोले कर जोरी ॥
सब कै सार सँभार गोसाई । करबि जनक जननी की नाई ॥
बारहिं बार जोरि जुग पानी । कहत रामु सब सन मृदु बानी ॥
सोइ सब भाँति मोर हितकारी । जेहि तैं रहै भुआल सुखारी ॥

दो. मातु सकल मोरे बिरहँ जेहिं न होहिं दुख दीन ।
सोइ उपाउ तुम्ह करेहु सब पुर जन परम प्रबीन ॥ ८० ॥

एहि बिधि राम सबहि समुझावा । गुर पद पदुम हरषि सिरु नावा ।
गनपती गौरि गिरीसु मनाई । चले असीस पाइ रघुराई ॥
राम चलत अति भयउ बिषादू । सुनि न जाइ पुर आरत नादू ॥
कुसगुन लंक अवध अति सोकू । हहरष बिषाद बिबस सुरलोकू ॥
गइ मुरुछा तब भूपति जागे । बोलि सुमंत्रु कहन अस लागे ॥
रामु चले बन प्रान न जाहीं । केहि सुख लागि रहत तन माहीं ॥

एहि तें कवन ब्यथा बलवाना । जो दुखु पाइ तजहिं तनु प्राना ॥
पुनि धरि धीर कहइ नरनाहू । लै रथु संग सखा तुम्ह जाहू ॥

दो. -सुठि सुकुमार कुमार दोउ जनकसुता सुकुमारि ।
रथ चढ़ाइ देखराइ बनु फिरेहु गएँ दिन चारि ॥ ८१ ॥

जौ नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई । सत्यसंध दृढ़व्रत रघुनाथ ॥
तौ तुम्ह बिनय करेहु कर जोरी । फेरिअ प्रभु मिथिलेसकिसोरी ॥
जब सिय कानन देखि डेराई । कहेहु मोरि सिख अवसरु पाई ॥
सासु ससुर अस कहेउ सँदेसू । पुत्रि फिरिअ बन बहुत कलेसू ॥
पितृगृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी । रहेहु जहाँ रुचि होइ तुम्हारी ॥
एहि बिधि करेहु उपाय कदंबा । फिरइ त होइ प्रान अवलंबा ॥
नाहिं त मोर मरनु परिनामा । कछु न बसाइ भएँ बिधि वामा ॥
अस कहि मुरुछि परा महि राऊ । रामु लखनु सिय आनि देखाऊ ॥

दो. -पाइ रजायसु नाइ सिरु रथु अति बेग बनाइ ।
गयउ जहाँ बाहेर नगर सीय सहित दोउ भाइ ॥ ८२ ॥

तब सुमंत्र नृप बचन सुनाए । करि बिनती रथ रामु चढ़ाए ॥
चढ़ि रथ सीय सहित दोउ भाई । चले हृदयँ अवधहि सिरु नाई ॥
चलत रामु लखि अवध अनाथा । बिकल लोग सब लागे साथी ॥
कृपासिंधु बहुबिधि समुझावहिं । फिरहिं प्रेम बस पुनि फिरि आवहिं ॥
लागति अवध भयावनि भारी । मानहुँ कालराति अँधिआरी ॥
घोर जंतु सम पुर नर नारी । डरपहिं एकहि एक निहारी ॥
घर मसान परिजन जनु भूता । सुत हित मीत मनहुँ जमदूता ॥
बागन्ह बिटप बेलि कुम्हिलाही । सरित सरोवर देखि न जाही ॥

दो. हय गय कोटिन्ह केलिमृग पुरपसु चातक मोर ।
पिक रथांग सुक सारिका सारस हंस चकोर ॥ ८३ ॥

राम बियोग बिकल सब ठाढ़े । जहँ तहँ मनहुँ चित्र लिखि काढ़े ॥
नगरु सफल बनु गहवर भारी । खग मृग विपुल सकल नर नारी ॥
बिधि कैकेई किरातिनि कीन्ही । जेंहि दव दुसह दसहुँ दिसि दीन्ही ॥
सहि न सके रघुबर बिरहागी । चले लोग सब ब्याकुल भागी ॥
सबहिं बिचार कीन्ह मन माहीं । राम लखन सिय बिनु सुखु नाही ॥
जहाँ रामु तहँ सबुइ समाजू । बिनु रघुबीर अवध नहिं काजू ॥
चले साथ अस मंत्रु दृढ़ाई । सुर दुर्लभ सुख सदन विहाई ॥
राम चरन पंकज प्रिय जिन्हही । बिषय भोग बस करहिं कि तिन्हही ॥

दो. बालक बृद्ध विहाइ गँह लगे लोग सब साथ ।
तमसा तीर निवासु किय प्रथम दिवस रघुनाथ ॥ ८४ ॥

रघुपति प्रजा प्रेमबस देखी । सदय हृदयँ दुखु भयउ बिसेषी ॥
करुनामय रघुनाथ गोसाँई । बेगि पाइअहिं पीर पराई ॥
कहि सप्रेम मृदु बचन सुहाए । बहुबिधि राम लोग समुझाए ॥
किए धरम उपदेस घनेरे । लोग प्रेम बस फिरहिं न फेरे ॥

सीलु सनेहु छाड़ि नहिं जाई । असमंजस बस भे रघुराई ॥
लोग सोग श्रम बस गए सोई । कछुक देवमायाँ मति मोई ॥
जबहिं जाम जुग जामिनि बीती । राम सचिव सन कहेउ सप्रीती ॥
खोज मारि रथु हाँकहु ताता । आन उपायँ बनिहि नहिं बाता ॥

दो. राम लखन सुय जान चढ़ि संभु चरन सिरु नाइ ॥
सचिवँ चलायउ तुरत रथु इत उत खोज दुराई ॥ ८५ ॥

जागे सकल लोग भएँ भोरु । गे रघुनाथ भयउ अति सोरु ॥
रथ कर खोज कतहहुँ नहिं पावहिं । राम राम कहि चहु दिसि धावहिं ॥
मनहुँ बारिनिधि बूड़ जहाजू । भयउ बिकल बड़ बनिक समाजू ॥
एकहि एक देहिं उपदेसू । तजे राम हम जानि कलेसू ॥
निंदहिं आपु सराहहिं मीना । धिग जीवनु रघुबीर बिहीना ॥
जौ पै प्रिय बियोगु बिधि कीन्हा । तौ कस मरनु न मागें दीन्हा ॥
एहि बिधि करत प्रलाप कलापा । आए अवध भरे परितापा ॥
बिषम बियोगु न जाइ बखाना । अवधि आस सब राखहिं प्राना ॥

दो. राम दरस हित नेम ब्रत लगे करन नर नारि ।
मनहुँ कोक कोकी कमल दीन बिहीन तमारि ॥ ८६ ॥

सीता सचिव सहित दोउ भाई । संगबेरपुर पहुँचे जाई ॥
उतरे राम देवसरि देखी । कीन्ह दंडवत हरषु बिसेषी ॥
लखन सचिवँ सियँ किए प्रनामा । सबहि सहित सुखु पायउ रामा ॥
गंग सकल मुद मंगल मूला । सब सुख करनि हरनि सब सूला ॥
कहि कहि कोटिक कथा प्रसंगा । रामु बिलोकहिं गंग तरंगा ॥
सचिवहि अनुजहि प्रियहि सुनाई । बिबुध नदी महिमा अधिकाई ॥
मज्जनु कीन्ह पंथ श्रम गयऊ । सुचि जलु पिअत मुदित मन भयऊ ॥
सुमिरत जाहि मिटइ श्रम भारु । तेहि श्रम यह लौकिक व्यवहारु ॥

दो. सुध्द सचिदानंदमय कंद भानुकुल केतु ।
चरित करत नर अनुहरत संसृति सागर सेतु ॥ ८७ ॥

यह सुधि गुहँ निषाद जब पाई । मुदित लिए प्रिय बंधु बोलाई ॥
लिए फल मूल भेंट भरि भारा । मिलन चलेउ हिँयँ हरषु अपारा ॥
करि दंडवत भेंट धरि आगें । प्रभुहि बिलोकत अति अनुरागें ॥
सहज सनेह बिबस रघुराई । पूँछी कुसल निकट बैठाई ॥
नाथ कुसल पद पंकज देखें । भयउँ भागभाजन जन लेखें ॥
देव धरनि धनु धामु तुम्हारा । मै जनु नीचु सहित परिवारा ॥
कृपा करिअ पुर धारिअ पाऊ । थापिय जनु सबु लोगु सिहाऊ ॥
कहेहु सत्य सबु सखा सुजाना । मोहि दीन्ह पितु आयसु आना ॥

दो. बरष चारिदस बासु बन मुनि ब्रत बेषु अहारु ।
ग्राम बासु नहिं उचित सुनि गुहहि भयउ दुखु भारु ॥ ८८ ॥

राम लखन सिय रूप निहारी । कहहिं सप्रेम ग्राम नर नारी ॥
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे । जिन्ह पठए बन बालक ऐसे ॥

एक कहहिं भल भूपति कीन्हा । लोयन लाहु हमहि बिधि दीन्हा ॥
तब निषादपति उर अनुमाना । तरु सिंसुपा मनोहर जाना ॥
लै रघुनाथहि ठाउँ देखावा । कहेउ राम सब भाँति सुहावा ॥
पुरजन करि जोहारु घर आए । रघुबर संध्या करन सिधाए ॥
गुहँ सँवारि सौथरी डसाई । कुस किसलयमय मृदुल सुहाई ॥
सुचि फल मूल मधुर मृदु जानी । दोना भरि भरि राखेसि पानी ॥

दो. सिय सुमंत्र भ्राता सहित कंद मूल फल खाइ ।
सयन कीन्ह रघुबंसमनि पाय पलोदत भाइ ॥ ८९ ॥

उठे लखनु प्रभु सोवत जानी । कहि सचिवहि सोवन मृदु बानी ॥
कछुक दूर सजि बान सरासन । जागन लगे बैठि बीरासन ॥
गुँह बोलाइ पाहरू प्रतीती । ठावँ ठाँव राखे अति प्रीती ॥
आपु लखन पहिँ बैठेउ जाई । कटि भाथी सर चाप चढाई ॥
सोवत प्रभुहि निहारि निषाद । भयउ प्रेम बस हृदयँ विषाद ॥
तनु पुलकित जलु लोचन बहई । बचन सप्रेम लखन सन कहई ॥
भूपति भवन सुभायँ सुहावा । सुरपति सदन न पटतर पावा ॥
मनिमय रचित चारु चौबारे । जनु रतिपति निज हाथ सँवारे ॥

दो. सुचि सुबिचित्र सुभोगमय सुमन सुगंध सुवास ।
पलँग मंजु मनिदीप जहँ सब बिधि सकल सुपास ॥ ९० ॥

बिबिध बसन उपधान तुराई । छीर फेन मृदु बिसद सुहाई ॥
तहँ सिय रामु सयन निसि करहीं । निज छवि रति मनोज मद्दु हरहीं ॥
ते सिय रामु साथरी सोए । श्रमित बसन विनु जाहिँ न जोए ॥
मातु पिता परिजन पुरबासी । सखा सुसील दास अरु दासी ॥
जोगवहिँ जिन्हहि प्रान की नाई । महि सोवत तेइ राम गोसाई ॥
पिता जनक जग बिदित प्रभाऊ । ससुर सुरेस सखा रघुराऊ ॥
रामचंद्र पति सो वैदेही । सोवत महि बिधि बाम न केही ॥
सिय रघुबीर कि कानन जोगू । करम प्रधान सत्य कह लोगू ॥

दो. कैकयनंदिनि मंदमति कठिन कुटिलपनु कीन्ह ।
जेहीं रघुनंदन जानकिहि सुख अवसर दुखु दीन्ह ॥ ९१ ॥

भइ दिनकर कुल बितप कुठारी । कुमति कीन्ह सब बिस्व दुखारी ॥
भयउ विषादु निषादहि भारी । राम सीय महि सयन निहारी ॥
बोले लखन मधुर मृदु बानी । ग्यान बिराग भगति रस सानी ॥
काहु न कोउ सुख दुख कर दाता । निज कृत करम भोग सबु भ्राता ॥
जोग बियोग भोग भल मंदा । हित अनहित मध्यम भ्रम फंदा ॥
जनमु मरनु जहँ लागि जग जालू । संपती विपति करमु अरु कालू ॥
धरनि धामु धनु पुर परिवारू । सरगु नरकु जहँ लागि व्यवहारू ॥
देखिअ सुनिअ गुनिअ मन माहीं । मोह मूल परमारथु नाही ॥

दो. सपनें होइ भिखारि नृप रंकु नाकपति होइ ।
जागें लाभु न हानि कछु तिमि प्रपंच जियँ जोइ ॥ ९२ ॥

अस विचारि नहिं कीजा रोसू । काहुहि बादि न देइअ दोसू ॥
मोह निसाँ सबु सोवनिहारा । देखिअ सपन अनेक प्रकारा ॥
एहिं जग जामिनि जागहिं जोगी । परमारथी प्रपंच बियोगी ॥
जानिअ तबहिं जीव जग जागा । जब जब विषय बिलास बिरागा ॥
होइ विवेकु मोह भ्रम भागा । तब रघुनाथ चरन अनुरागा ॥
सखा परम परमारथु एहू । मन क्रम बचन राम पद नेहू ॥
राम ब्रह्म परमारथ रूपा । अबिगत अलख अनादि अनूपा ॥
सकल विकार रहित गतभेदा । कहि नित नेति निरूपहिं बेदा ॥

दो. भगत भूमि भूसुर सुरभि सुर हित लागि कृपाल ।
करत चरित धरि मनुज तनु सुनत मिटहि जग जाल ॥ ९३ ॥

मासपारायण, पंद्रहवा विश्राम

सखा समुझि अस परिहरि मोहु । सिय रघुबीर चरन रत होहु ॥
कहत राम गुन भा भिनूसारा । जागे जग मंगल सुखदारा ॥
सकल सोच करि राम नहावा । सुचि सुजान बट छीर मगावा ॥
अनुज सहित सिर जटा बनाए । देखि सुमंत्र नयन जल छाए ॥
हृदयँ दाहु अति बदन मलीना । कह कर जोरि बचन अति दीना ॥
नाथ कहेउ अस कोसलनाथा । लै रथु जाहु राम कें साथा ॥
बनु देखाइ सुरसरि अन्हवाई । आनेहु फेरि बेगि दोउ भाई ॥
लखनु रामु सिय आनेहु फेरी । संसय सकल सँकोच निबेरी ॥

दो. नृप अस कहेउ गोसाईँ जस कहइ करौ बलि सोइ ।
करि बिनती पायन्ह परेउ दीन्ह बाल जिमि रोइ ॥ ९४ ॥

तात कृपा करि कीजिअ सोई । जातें अवध अनाथ न होई ॥
मंत्रहि राम उठाइ प्रबोधा । तात धरम मत्तु तुम्ह सबु सोधा ॥
सिबि दधीचि हरिचंद नरेसा । सहे धरम हित कोटि कलेसा ॥
रतिदेव बलि भूप सुजाना । धरमु धरेउ सहि संकट नाना ॥
धरमु न दूसर सत्य समाना । आगम निगम पुरान बखाना ॥
मैं सोइ धरमु सुलभ करि पावा । तजें तिहूँ पुर अपजसु छावा ॥
संभावित कहूँ अपजस लाहू । मरन कोटि सम दारुन दाहू ॥
तुम्ह सन तात बहुत का कहऊँ । दिऐँ उतरु फिरि पातकु लहऊँ ॥

दो. पितु पद गहि कहि कोटि नति बिनय करब कर जोरि ।
चिंता कवनिहु बात कै तात करिअ जनि मोरि ॥ ९५ ॥

तुम्ह पुनि पितु सम अति हित मोरें । बिनती करउँ तात कर जोरें ॥
सब बिधि सोइ करतव्य तुम्हारें । दुख न पाव पितु सोच हमारें ॥
सुनि रघुनाथ सचिव संबादू । भयउ सपरिजन बिकल निषादू ॥
पुनि कछु लखन कही कटु बानी । प्रभु बरजे बड़ अनुचित जानी ॥
सकुचि राम निज सपथ देवाई । लखन सँदेसु कहिअ जनि जाई ॥
कह सुमंत्र पुनि भूप सँदेसू । सहि न सकिहि सिय बिपिन कलेसू ॥
जेहि विधि अवध आव फिरि सीया । सोइ रघुबरहि तुम्हहि करनीया ॥
नतरु निपट अवलंब बिहीना । मैं न जिअब जिमि जल विनु मीना ॥

दो. मइकेँ ससरें सकल सुख जबहिं जहाँ मनु मान ॥
तँह तब रहिहि सुखेन सिय जब लगि बिपति बिहान ॥ १६ ॥

बिनती भूप कीन्ह जेहि भाँती । आरति प्रीति न सो कहि जाती ॥
पितु सँदेसु सुनि कृपानिधाना । सियहि दीन्ह सिख कोटि विधाना ॥
सासु ससुर गुर प्रिय परिवारू । फिरतु त सब कर मिटै खभारू ॥
सुनि पति बचन कहति बैदेही । सुनहु प्रानपति परम सनेही ॥
प्रभु करुनामय परम बिबेकी । तनु तजि रहति छाँह किमि छेंकी ॥
प्रभा जाइ कहँ भानु बिहाई । कहँ चंद्रिका चंदु तजि जाई ॥
पतिहि प्रेममय बिनय सुनाई । कहति सचिव सन गिरा सुहाई ॥
तुम्ह पितु ससुर सरिस हितकारी । उतरु देउँ फिरि अनुचित भारी ॥

दो. आरति बस सनमुख भइउँ बिलगु न मानव तात ।
आरजसुत पद कमल बिनु बादि जहाँ लगि नात ॥ १७ ॥

पितु बैभव बिलास मैं डीठा । नृप मनि मुकुट मिलित पद पीठा ॥
सुखनिधान अस पितु गृह मोरें । पिय बिहीन मन भाव न भोरें ॥
ससुर चक्कवइ कोसलराऊ । भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ ॥
आगें होइ जेहि सुरपति लेई । अरध सिंघासन आसनु देई ॥
ससुरु एतादस अवध निवासू । प्रिय परिवारु मातु सम सासू ॥
बिनु रघुपति पद पदुम परागा । मोहि केउ सपनेहुँ सुखद न लागा ॥
अगम पंथ बनभूमि पहारा । करि केहरि सर सरित अपारा ॥
कोल किरात कुरंग बिहंगा । मोहि सब सुखद प्रानपति संगी ॥

दो. सासु ससुर सन मोरि हूँति बिनय करबि परि पायँ ॥
मोर सोचु जनि करिअ कछु मैं बन सुखी सुभायँ ॥ १८ ॥

प्राननाथ प्रिय देवर साथी । बीर धुरीन धरें धनु भाथा ॥
नहिं मग भ्रमु भ्रमु दुख मन मोरें । मोहि लगि सोचु करिअ जनि भोरें ॥
सुनि सुमंत्रु सिय सीतलि बानी । भयउ बिकल जनु फनि मनि हानी ॥
नयन सूझ नहिं सुनइ न काना । कहि न सकइ कछु अति अकुलाना ॥
राम प्रबोधु कीन्ह बहु भाँति । तदपि होति नहिं सीतलि छाती ॥
जतन अनेक साथ हित कीन्हे । उचित उतर रघुनंदन दीन्हे ॥
मेटि जाइ नहिं राम रजाई । कठिन करम गति कछु न बसाई ॥
राम लखन सिय पद सिरु नाई । फिरेउ बनि क जिमि मूर गवाँई ॥

दो. -रथ हाँकैउ हय राम तन हेरि हेरि हिहिनाहिं ।
देखि निषाद विषादबस धुनहिं सीस पछिताहिं ॥ १९ ॥

जासु बियोग बिकल पसु ऐसे । प्रजा मातु पितु जीहहिं कैसें ॥
बरबस राम सुमंत्रु पठाए । सुरसरि तीर आपु तब आए ॥
मागी नाव न केवटु आना । कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना ॥
चरन कमल रज कहुँ सबु कहई । मानुष करनि मूरि कछु अहई ॥
छुअत सिला भइ नारि सुहाई । पाहन तें न काठ कठिनाई ॥
तरनिउ मुनि घरिनि होइ जाई । बाट परइ मोरि नाव उड़ाई ॥
एहिं प्रतिपालउँ सबु परिवारू । नहिं जानउँ कछु अउर कवारू ॥

जौ प्रभु पार अवसि गा चहहू । मोहि पद पदुम पखारन कहहू ॥

छं. पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौ ।
मोहि राम राउरि आन दसरथ सपथ सब साची कहौ ॥
बरु तीर मारहुँ लखनु पै जब लगि न पाय पखारिहौ ।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारु उतारिहौ ॥

सो. सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपेटे ।
बिहसे करुनाएन चितइ जानकी लखन तन ॥ १०० ॥

कृपासिंधु बोले मुसुकाई । सोइ करु जेहि तव नाव न जाई ॥
वेगि आनु जल पाय पखारू । होत बिलंबु उतारहि पारू ॥
जासु नाम सुमरत एक बारा । उतरहिं नर भवसिंधु अपारा ॥
सोइ कृपालु केवटहि निहोरा । जेहिं जगु किय तिहु पगहु ते थोरा ॥
पद नख निरखि देवसरि हरषी । सुनि प्रभु बचन मोहँ मति करषी ॥
केवट राम रजायसु पावा । पानि कठवता भरि लेइ आवा ॥
अति आनंद उमगि अनुरागा । चरन सरोज पखारन लागा ॥
बरषि सुमन सुर सकल सिहाही । एहि सम पुन्यपुंज कोउ नाही ॥

दो. पद पखारि जलु पान करि आपु सहित परिवार ।
पितर पारु करि प्रभुहि पुनि मुदित गयउ लेइ पार ॥ १०१ ॥

उतरि ठाड़ भए सुरसरि रेता । सीयराम गुह लखन समेता ॥
केवट उतरि दंडवत कीन्हा । प्रभुहि सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा ॥
पिय हिय की सिय जाननिहारी । मनि मुदरी मन मुदित उतारी ॥
कहेउ कृपाल लेहि उतराई । केवट चरन गहे अकुलाई ॥
नाथ आजु मैं काह न पावा । मिटे दोष दुख दारिद दावा ॥
बहुत काल मैं कीन्हि मजूरी । आजु दीन्ह बिधि बनि भलि भूरी ॥
अब कछु नाथ न चाहिअ मोरें । दीनदयाल अनुग्रह तोरें ॥
फिरती बार मोहि जे देबा । सो प्रसादु मैं सिर धरि लेबा ॥

दो. बहुत कीन्ह प्रभु लखन सियँ नहिं कछु केवटु लेइ ।
बिदा कीन्ह करुनायतन भगति बिमल बरु देइ ॥ १०२ ॥

तब मज्जनु करि रघुकुलनाथा । पूजि पारथिव नायउ माथा ॥
सियँ सुरसरिहि कहेउ कर जोरी । मातु मनोरथ पुरउबि मोरी ॥
पति देवर संग कुसल बहोरी । आइ करौं जेहिं पूजा तोरी ॥
सुनि सिय बिनय प्रेम रस सानी । भइ तब विमल बारि बर बानी ॥
सुनु रघुबीर प्रिया बैदेही । तव प्रभाउ जग विदित न केही ॥
लोकप होहिं बिलोकत तोरें । तोहि सेवहिं सब सिधि कर जोरें ॥
तुम्ह जो हमहि बड़ि बिनय सुनाई । कृपा कीन्हि मोहि दीन्हि बड़ाई ॥
तदपि देवि मैं देवि असीसा । सफल होपन हित निज बागीसा ॥

दो. प्राननाथ देवर सहित कुसल कोसला आइ ।
पूजहि सब मनकामना सुजसु रहिहि जग छाड़ि ॥ १०३ ॥

गंग बचन सुनि मंगल मूला । मुदित सीय सुरसरि अनुकुला ॥
 तब प्रभु गुहहि कहेउ घर जाहू । सुनत सूख मुखु भा उर दाहू ॥
 दीन बचन गुह कह कर जोरी । बिनय सुनहु रघुकुलमनि मोरी ॥
 नाथ साथ रहि पंथु देखाई । करि दिन चारि चरन सेवकाई ॥
 जेहिं बन जाइ रहव रघुराई । परनकुटी मै करबि सुहाई ॥
 तब मोहि कहँ जसि देव रजाई । सोइ करिहउँ रघुबीर दोहाई ॥
 सहज सनेह राम लखि तासु । संग लीन्ह गुह हृदय हुलासू ॥
 पुनि गुहँ ग्याति बोलि सब लीन्हे । करि परितोषु बिदा तब कीन्हे ॥

दो. तब गनपति सिव सुमिरि प्रभु नाइ सुरसरिहि माथ । लृ
 सखा अनुज सिया सहित बन गवनु कीन्ह रघुनाथ ॥ १०४ ॥

तेहि दिन भयउ बिटप तर बासू । लखन सखाँ सब कीन्ह सुपासू ॥
 प्रात प्रातकृत करि रघुसाई । तीरथराजु दीख प्रभु जाई ॥
 सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी । माधव सरिस मीतु हितकारी ॥
 चारि पदारथ भरा भँडारु । पुन्य प्रदेश देस अति चारु ॥
 छेत्र अगम गढु गाढ सुहावा । सपनेहुँ नहिं प्रतिपच्छिन्ह पावा ॥
 सेन सकल तीरथ बर बीरा । कलुष अनीक दलन रनधीरा ॥
 संगमु सिंहासन सुठि सोहा । छत्रु अखयबटु मुनि मनु मोहा ॥
 चवँर जमुन अरु गंग तरंगा । देखि होहिं दुख दारिद भंगा ॥

दो. सेवहिं सुकृति साधु सुचि पावहिं सब मनकाम ।
 बंदी बेद पुरान गन कहहिं बिमल गुन ग्राम ॥ १०५ ॥

को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ । कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ ॥
 अस तीरथपति देखि सुहावा । सुख सागर रघुबर सुखु पावा ॥
 कहि सिय लखनहि सखहि सुनाई । श्रीमुख तीरथराज बड़ाई ॥
 करि प्रनामु देखत बन बागा । कहत महातम अति अनुरागा ॥
 एहि विधि आइ बिलोकी बेनी । सुमिरत सकल सुमंगल देनी ॥
 मुदित नहाइ कीन्हे सिव सेवा । पुजि जथाविधि तीरथ देवा ॥
 तब प्रभु भरद्वाज पहिं आए । करत दंडवत मुनि उर लाए ॥
 मुनि मन मोद न कछु कहि जाइ । ब्रह्मानंद रासि जनु पाई ॥

दो. दीन्हे असीस मुनीस उर अति अनंदु अस जानि ।
 लोचन गोचर सुकृत फल मनहुँ किए विधि आनि ॥ १०६ ॥

कुसल प्रस्न करि आसन दीन्हे । पूजि प्रेम परिपूरन कीन्हे ॥
 कंद मूल फल अंकुर नीके । दिए आनि मुनि मनहुँ अमी के ॥
 सीय लखन जन सहित सुहाए । अति रुचि राम मूल फल खाए ॥
 भए विगतश्रम रामु सुखारे । भरद्वाज मूढु बचन उचारे ॥
 आजु सुफल तपु तीरथ त्यागू । आजु सुफल जप जोग बिरागू ॥
 सफल सकल सुभ साधन साजू । राम तुम्हहि अवलोकत आजू ॥
 लाभ अवधि सुख अवधि न दूजी । तुम्हारें दरस आस सब पूजी ॥
 अब करि कृपा देहु बर एहू । निज पद सरसिज सहज सनेहू ॥

दो. करम बचन मन छाड़ि छलु जब लगि जनु न तुम्हार ।

तब लगि सुखु सपनेहुँ नहीं किएँ कोटि उपचार ॥
 सुनि मुनि बचन रामु सकुचाने । भाव भगति आनंद अचाने ॥
 तब रघुबर मुनि सुजसु सुहावा । कोटि भाँति कहि सबहि सुनावा ॥
 सो बड सो सब गुन गन गेहू । जेहि मुनीस तुम्ह आदर देहू ॥
 मुनि रघुबीर परसपर नवहीं । बचन अगोचर सुखु अनुभवहीं ॥
 यह सुधि पाइ प्रयाग निवासी । बटु तापस मुनि सिद्ध उदासी ॥
 भरद्वाज आश्रम सब आए । देखन दसरथ सुअन सुहाए ॥
 राम प्रनाम कीन्ह सब काहू । मुदित भए लहि लोयन लाहू ॥
 देहिं असीस परम सुखु पाई । फिरे सराहत सुंदरताई ॥

दो. राम कीन्ह विश्राम निसि प्रात प्रयाग नहाइ ।
 चले सहित सिय लखन जन मुददित मुनिहि सिरु नाइ ॥ १०८ ॥

राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीं । नाथ कहिअ हम केहि मग जाहीं ॥
 मुनि मन बिहसि राम सन कहहीं । सुगम सकल मग तुम्ह कहूँ अहहीं ॥
 साथ लागि मुनि सिष्य बोलाए । सुनि मन मुदित पचासक आए ॥
 सबन्हि राम पर प्रेम अपारा । सकल कहहि मगु दीख हमारा ॥
 मुनि बटु चारि संग तब दीन्हे । जिन्ह बहु जनम सुकृत सब कीन्हे ॥
 करि प्रनामु रिषि आयसु पाई । प्रमुदित हृदयँ चले रघुराई ॥
 ग्राम निकट जब निकसहि जाई । देखहि दरसु नारि नर धाई ॥
 होहि सनाथ जनम फलु पाई । फिरहि दुखित मनु संग पठाई ॥

दो. बिदा किए बटु बिनय करि फिरे पाइ मन काम ।
 उतरि नहाए जमुन जल जो सरीर सम स्याम ॥ १०९ ॥

सुनत तीरवासी नर नारी । धाए निज निज काज बिसारी ॥
 लखन राम सिय सुन्दरताई । देखि करहिं निज भाग्य बड़ाई ॥
 अति लालसा बसहिं मन माहीं । नाउँ गाउँ बूझत सकुचाहीं ॥
 जे तिन्ह महुँ बयबिरिध सयाने । तिन्ह करि जुगुति रामु पहिचाने ॥
 सकल कथा तिन्ह सबहि सुनाई । बनहि चले पितु आयसु पाई ॥
 सुनि सविषाद सकल पछिताहीं । रानी रायँ कीन्ह भल नाहीं ॥
 तेहि अवसर एक तापसु आवा । तेजपुंज लघुबयस सुहावा ॥
 कवि अलखित गति बेषु बिरागी । मन क्रम बचन राम अनुरागी ॥

दो. सजल नयन तन पुलकि निज इष्टदेउ पहिचानि ।
 परेउ दंड जिमि धरनितल दसा न जाइ बखानि ॥ ११० ॥

राम सप्रेम पुलकि उर लावा । परम रंक जनु पारसु पावा ॥
 मनहुँ प्रेमु परमारथु दोऊ । मिलत धरे तन कह सबु कोऊ ॥
 बहुरि लखन पायन्ह सोइ लागा । लीन्ह उठाइ उमगि अनुरागा ॥
 पुनि सिय चरन धूरि धरि सीसा । जननि जानि सिसु दीन्हे असीसा ॥
 कीन्ह निषाद दंडवत तेही । मिलेउ मुदित लखि राम सनेही ॥
 पिअत नयन पुट रूपु पियूषा । मुदित सुअसनु पाइ जिमि भूखा ॥
 ते पितु मातु कहहु सखि कैसे । जिन्ह पठए बन बालक ऐसे ॥
 राम लखन सिय रूपु निहारी । होहिं सनेह बिकल नर नारी ॥

दो. तब रघुवीर अनेक विधि सखहि सिखावनु दीन्ह ।
राम रजायसु सीस धरि भवन गवनु तँई कीन्ह ॥ १११ ॥

पुनि सियँ राम लखन कर जोरी । जमुनहि कीन्ह प्रनामु बहोरी ॥
चले ससीय मुदित दोउ भाई । रवितनुजा कइ करत बड़ाई ॥
पथिक अनेक मिलहिं मग जाता । कहहिं सप्रेम देखि दोउ भ्राता ॥
राज लखन सब अंग तुम्हारे । देखि सोचु अति हृदय हमारे ॥
मारग चलहु पयादेहि पाएँ । ज्योतिषु झूठ हमारे भाएँ ॥
अगमु पंथ गिरि कानन भारी । तेहि महँ साथ नारि सुकुमारी ॥
करि केहरि बन जाइ न जोई । हम सँग चलहि जो आयसु होई ॥
जाब जहाँ लागि तहँ पहुँचाई । फिरब बहोरि तुम्हहि सिरु नाई ॥

दो. एहि विधि पूँछहिं प्रेम बस पुलक गात जलु नैन ।
कृपासिंधु फेरहि तिन्हहि कहि विनीत मृदु बैन ॥ ११२ ॥

जे पुर गाँव बसहिं मग माहीं । तिन्हहि नाग सुर नगर सिहाहीं ॥
केहि सुकृती केहि घरी बसाए । धन्य पुन्यमय परम सुहाए ॥
जहँ जहँ राम चरन चलि जाहीं । तिन्ह समान अमरावति नाहीं ॥
पुन्यपुंज मग निकट निवासी । तिन्हहि सराहिं सुरपुरवासी ॥
जे भरि नयन बिलोकहिं रामहि । सीता लखन सहित घनस्यामहि ॥
जे सर सरित राम अवगाहहिं । तिन्हहि देव सर सरित सराहहिं ॥
जेहि तरु तर प्रभु बैठहिं जाई । करहिं कलपतरु तासु बड़ाई ॥
परसि राम पद पदुम परागा । मानति भूमि भूरि निज भागा ॥

दो. छाँह करहि घन विबुधगन बरषहि सुमन सिहाहिं ।
देखत गिरि बन बिहग मृग रामु चले मग जाहिं ॥ ११३ ॥

सीता लखन सहित रघुराई । गाँव निकट जब निकसहिं जाई ॥
सुनि सब बाल बृद्ध नर नारी । चलहिं तुरत गृहकाजु विसारी ॥
राम लखन सिय रूप निहारी । पाइ नयनफलु होहिं सुखारी ॥
सजल बिलोचन पुलक सरीरा । सब भए मगन देखि दोउ बीरा ॥
बरनि न जाइ दसा तिन्ह केरी । लहि जनु रंकन्ह सुरमनि ढेरी ॥
एकन्ह एक बोलि सिख देही । लोचन लाहु लेहु छन एही ॥
रामहि देखि एक अनुरागे । चितवत चले जाहिं सँग लागे ॥
एक नयन मग छवि उर आनी । होहिं सिथिल तन मन बर बानी ॥

दो. एक देखिं बट छाँह भलि डसि मृदुल तन पात ।
कहहिं गवाँइअ छिनुकु श्रमु गवनब अबहिं कि प्रात ॥ ११४ ॥

एक कलस भरि आनहिं पानी । अँचइअ नाथ कहहिं मृदु बानी ॥
सुनि प्रिय बचन प्रीति अति देखी । राम कृपाल सुसील बिसेषी ॥
जानी श्रमित सीय मन माहीं । घरिक बिलंबु कीन्ह बट छाहीं ॥
मुदित नारि नर देखहिं सोभा । रूप अनूप नयन मनु लोभा ॥
एकटक सब सोहहिं चहुँ ओरा । रामचंद्र मुख चंद चकोरा ॥
तरुन तमाल बरन तनु सोहा । देखत कोटि मदन मनु मोहा ॥
दामिनि बरन लखन सुठि नीके । नख सिख सुभग भावते जी के ॥

मुनिपट कटिन्ह कसें तूनीरा । सोहहिं कर कमलिनि धनु तीरा ॥

दो. जटा मुकुट सीसनि सुभग उर भुज नयन बिसाल ।
सरद परब विधु बदन बर लसत स्वेद कन जाल ॥ ११५ ॥

बरनि न जाइ मनोहर जोरी । सोभा बहुत थोरि मति मोरी ॥
राम लखन सिय सुंदरताई । सब चितवहिं चित मन मति लाई ॥
थके नारि नर प्रेम पिआसे । मनहुँ मृगी मृग देखि दिआ से ॥
सीय समीप ग्रामतिय जाहीं । पूँछत अति सनेहँ सकुचाहीं ॥
बार बार सब लागहिं पाएँ । कहहिं बचन मृदु सरल सुभाएँ ॥
राजकुमारि बिनय हम करहीं । तिय सुभायँ कछु पूँछत डरहीं ।
स्वामिनि अबिनय छमबि हमारी । बिलगु न मानब जानि गवाँरी ॥
राजकुअँर दोउ सहज सलोने । इन्ह तँ लही दुति मरकत सोने ॥

दो. स्यामल गौर किसोर बर सुंदर सुषमा ऐन ।
सरद सर्वरीनाथ मुखु सरद सरोरुह नैन ॥ ११६ ॥

मासपारायण, सोलहवाँ विश्राम
नवान्हपारायण, चौथा विश्राम

कोटि मनोज लजावनिहारे । सुमुखि कहहु को आहिं तुम्हारे ॥
सुनि सनेहमय मंजुल बानी । सकुची सिय मन महुँ मुसुकानी ॥
तिन्हहि बिलोकि बिलोकति धरनी । दुहुँ सकुच सकुचित बरबरनी ॥
सकुचि सप्रेम बाल मृग नयनी । बोली मधुर बचन पिकबयनी ॥
सहज सुभाय सुभग तन गोरे । नामु लखनु लघु देवर मोरे ॥
बहुरि बदन विधु अंचल ढाँकी । पिय तन चितइ भौह करि बाँकी ॥
खंजन मंजु तिरिछे नयननि । निज पति कहेउ तिन्हहि सियँ सयननि ॥
भइ मुदित सब ग्रामबधूटी । रंकन्ह राय रासि जनु लूटी ॥

दो. अति सप्रेम सिय पायँ परि बहुविधि देहिं असीस ।
सदा सोहागिनि होहु तुम्ह जब लागि महि अहि सीस ॥ ११७ ॥

पारवती सम पतिप्रिय होहु । देवि न हम पर छाड़ब छोहु ॥
पुनि पुनि बिनय करिअ कर जोरी । जौ एहि मारग फिरिअ बहोरी ॥
दरसन देब जानि निज दासी । लखी सीयँ सब प्रेम पिआसी ॥
मधुर बचन कहि कहि परितोषी । जनु कुमुदिनी कौमुदी पोषी ॥
तबहिं लखन रघुबर रुख जानी । पूँछेउ मगु लोगन्हि मृदु बानी ॥
सुनत नारि नर भए दुखारी । पुलकित गात बिलोचन बारी ॥
मिटा मोदु मन भए मलीने । विधि निधि दीन्ह लेत जनु छीने ॥
समुझि करम गति धीरजु कीन्हा । सोधि सुगम मगु तिन्ह कहि दीन्हा ॥

दो. लखन जानकी सहित तब गवनु कीन्ह रघुनाथ ।
फेरे सब प्रिय बचन कहि लिए लाइ मन साथ ॥ ११८ ॥

फिरत नारि नर अति पछिताही । देअहि दोषु देहिं मन माहीं ॥
सहित बिषाद परसपर कहहीं । विधि करतब उलटे सब अहहीं ॥
निपट निरंकुस निटुर निसंकू । जेहिं ससि कीन्ह सरुज सकलंकू ॥

रूख कलपतरु सागरु खारा । तेहिं पठए बन राजकुमारा ॥
जौं पे इन्हहि दीन्ह बनबासू । कीन्ह बादि विधि भोग बिलासू ॥
ए बिचरहिं मग बिनु पदत्राना । रचे बादि विधि बाहन नाना ॥
ए महि परहिं डसि कुस पाता । सुभग सेज कत सृजत विधाता ॥
तरुवर बास इन्हहि विधि दीन्हा । धवल धाम रचि रचि श्रमु कीन्हा ॥

दो. जौं ए मुनि पट धर जटिल सुंदर सुठि सुकुमार ।
बिबिध भाँति भूषन बसन बादि किए करतार ॥ ११९ ॥

जौं ए कंद मूल फल खाहीं । बादि सुधादि असन जग माहीं ॥
एक कहहिं ए सहज सुहाए । आपु प्रगट भए विधि न बनाए ॥
जहँ लागि बेद कही विधि करनी । श्रवन नयन मन गोचर बरनी ॥
देखहु खोजि भुअन दस चारी । कहँ अस पुरुष कहाँ असि नारी ॥
इन्हहि देखि विधि मनु अनुरागा । पटतर जोग बनावै लागा ॥
कीन्ह बहुत श्रम ऐक न आए । तेहिं इरिषा बन आनि दुराए ॥
एक कहहिं हम बहुत न जानहिं । आपुहि परम धन्य करि मानहिं ॥
ते पुनि पुन्यपुंज हम लेखे । जे देखहिं देखिहहिं जिन्ह देखे ॥

दो. एहि विधि कहि कहि बचन प्रिय लेहिं नयन भरि नीर ।
किमि चलिहहि मारग अगम सुठि सुकुमार सरीर ॥ १२० ॥

नारि सनेह बिकल बस होही । चकई साँझ समय जनु सोही ॥
मृदु पद कमल कठिन मगु जानी । गहबरि हृदयँ कहहिं बर बानी ॥
परसत मृदुल चरन अरुनारे । सकुचति महि जिमि हृदय हमारे ॥
जौं जगदीस इन्हहि बनू दीन्हा । कस न सुमनमय मारगु कीन्हा ॥
जौं मागा पाइअ विधि पाहीं । ए रखिअहिं सखि आँखिन्ह माहीं ॥
जे नर नारि न अवसर आए । तिन्ह सिय रामु न देखन पाए ॥
सुनि सुरूप बूझहिं अकुलाई । अब लागि गए कहाँ लागि भाई ॥
समरथ धाइ बिलोकहिं जाई । प्रमुदित फिरहिं जनमफलु पाई ॥

दो. अबला बालक बृद्ध जन कर मीजहिं पछिताहिं ॥
होहिं प्रेमबस लोग इमि रामु जहाँ जहँ जाहिं ॥ १२१ ॥

गाँव गाँव अस होइ अनंदू । देखि भानुकुल कैरव चंदू ॥
जे कछु समाचार सुनि पावहिं । ते नृप रानिहि दोसु लगावहिं ॥
कहहिं एक अति भल नरनाहू । दीन्ह हमहि जोइ लोचन लाहू ॥
कहहिं परस्पर लोग लोगाई । बातें सरल सनेह सुहाई ॥
ते पितु मातु धन्य जिन्ह जाए । धन्य सो नगरु जहाँ तें आए ॥
धन्य सो देसु सैलु बन गाऊँ । जहँ जहँ जाहिं धन्य सोइ ठाऊँ ॥
सुख पायउ बिरचि रचि तेही । ए जेहि के सब भाँति सनेही ॥
राम लखन पथि कथा सुहाई । रही सकल मग कानन छाई ॥

दो. एहि विधि रघुकुल कमल रबि मग लोगन्ह सुख देत ।
जाहिं चले देखत बिपिन सिय सौमित्रि समेत ॥ १२२ ॥

आगे रामु लखनु बने पाछें । तापस बेष बिराजत काछें ॥

उभय बीच सिय सोहति कैसे । ब्रह्म जीव बिच माया जैसे ॥
बहुरि कहउँ छबि जसि मन बसई । जनु मधु मदन मध्य रति लसई ॥
उपमा बहुरि कहउँ जियँ जोही । जनु बुध बिधु बिच रोहिनि सोही ॥
प्रभु पद रंख बीच बिच सीता । धरति चरन मग चलति सभीता ॥
सीय राम पद अंक बराएँ । लखन चलहिं मगु दाहिन लाएँ ॥
राम लखन सिय प्रीति सुहाई । बचन अगोचर किमि कहि जाई ॥
खग मृग मगन देखि छबि होही । लिए चोरि चित राम बटोही ॥

दो. जिन्ह जिन्ह देखे पथिक प्रिय सिय समेत दोउ भाइ ।
भव मगु अगमु अनंदु तेइ बिनु श्रम रहे सिराइ ॥ १२३ ॥

अजहुँ जासु उर सपनेहुँ काऊ । बसहुँ लखनु सिय रामु बटाऊ ॥
राम धाम पथ पाइहि सोई । जो पथ पाव कबहुँ मुनि कोई ॥
तब रघुवीर श्रमित सिय जानी । देखि निकट बटु सीतल पानी ॥
तहँ बसि कंद मूल फल खाई । प्रात नहाइ चले रघुराई ॥
देखत बन सर सैल सुहाए । बालमीकि आश्रम प्रभु आए ॥
राम दीख मुनि बासु सुहावन । सुंदर गिरि काननु जलु पावन ॥
सरनि सरोज बिटप बन फूले । गुंजत मंजु मधुप रस भूले ॥
खग मृग बिपुल कोलाहल करहीं । बिरहित बैर मुदित मन चरहीं ॥

दो. सुचि सुंदर आश्रमु निरखि हरषे राजिवनेन ।
सुनि रघुबर आगमनु मुनि आगें आयउ लेन ॥ १२४ ॥

मुनि कहूँ राम दंडवत कीन्हा । आसिरबादु विप्रवर दीन्हा ॥
देखि राम छबि नयन जुड़ाने । करि सनमानु आश्रमहिं आने ॥
मुनिवर अतिथि प्रानप्रिय पाए । कंद मूल फल मधुर मगाए ॥
सिय सौमित्रि राम फल खाए । तब मुनि आश्रम दिए सुहाए ॥
बालमीकि मन आनंदु भारी । मंगल मूरति नयन निहारी ॥
तब कर कमल जोरि रघुराई । बोले बचन श्रवन सुखदाई ॥
तुम्ह त्रिकाल दरसी मुनिनाथा । बिस्व बदर जिमि तुम्हरेँ हाथा ॥
अस कहि प्रभु सब कथा बखानी । जेहि जेहि भाँति दीन्ह बनू रानी ॥

दो. तात बचन पुनि मातु हित भाइ भरत अस राउ ।
मो कहूँ दरस तुम्हार प्रभु सबु मम पुन्य प्रभाउ ॥ १२५ ॥

देखि पाय मुनिराय तुम्हारे । भए सुकृत सब सुफल हमारे ॥
अब जहँ राउर आयसु होई । मुनि उदबेगु न पावै कोई ॥
मुनि तापस जिन्ह तें दुखु लहहीं । ते नरेस बिनु पावक दहहीं ॥
मंगल मूल बिप्र परितोषू । दहइ कोटि कुल भूसुर रोषू ॥
अस जियँ जानि कहिअ सोइ ठाऊँ । सिय सौमित्रि सहित जहँ जाऊँ ॥
तहँ रचि रुचिर परन तून साला । बासु करौ कछु काल कृपाला ॥
सहज सरल सुनि रघुबर बानी । साधु साधु बोले मुनि ग्यानी ॥
कस न कहहु अस रघुकुलकेतू । तुम्ह पालक संतत श्रुति सेतू ॥

छं. श्रुति सेतु पालक राम तुम्ह जगदीस माया जानकी ।
जो सृजति जगु पालति हरति रूख पाइ कृपानिधान की ॥

जो सहससीसु अहीसु महिधरु लखनु सचराचर धनी ।
सुर काज धरि नरराज तनु चले दलन खल निसिचर अनी ॥

सो. राम सरुप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धिपर ।
अबिगत अकथ अपार नेति नित निगम कह ॥१२६ ॥

जगु पेखन तुम्ह देखनिहारे । विधि हरि संभु नचावनिहारे ॥
तेउ न जानहिं मरमु तुम्हारा । औरु तुम्हहिं को जाननिहारा ॥
सोइ जानइ जेहि देहु जनाई । जानत तुम्हहिं तुम्हइ होइ जाई ॥
तुम्हरिहिं कृपाँ तुम्हहिं रघुनंदन । जानहिं भगत भगत उर चंदन ॥
चिदानंदमय देह तुम्हारी । बिगत बिकार जान अधिकारी ॥
नर तनु धरेहु संत सुर काजा । कहहु करहु जस प्राकृत राजा ॥
राम देखि सुनि चरित तुम्हारे । जइ मोहहिं बुध होहिं सुखारे ॥
तुम्ह जो कहहु करहु सबु साँचा । जस काछिअ तस चाहिअ नाचा ॥

दो. पूँछेहु मोहि कि रहौं कहँ मैं पूँछत सकुचाउँ ।
जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहिं देखावौं ठाउँ ॥१२७ ॥

सुनि मुनि बचन प्रेम रस साने । सकुचि राम मन महुँ मुसुकाने ॥
बालमीकि हँसि कहहिं बहोरी । बानी मधुर अमिअ रस बोरी ॥
सुनहु राम अब कहउँ निकेता । जहाँ बसहु सिय लखन समेता ॥
जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना । कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना ॥
भरहिं निरंतर होहिं न पूरे । तिन्ह के हिय तुम्ह कहुँ गृह रूरे ॥
लोचन चातक जिन्ह करि राखे । रहहिं दरस जलधर अभिलाषे ॥
निदरहिं सरित सिंधु सर भारी । रूप बिंदु जल होहिं सुखारी ॥
तिन्ह के हृदय सदन सुखदायक । बसहु बंधु सिय सह रघुनायक ॥

दो. जसु तुम्हार मानस विमल हंसिनि जीहा जासु ।
मुकुताहल गुन गन चुनइ राम बसहु हियँ तासु ॥१२८ ॥

प्रभु प्रसाद सुचि सुभग सुबासा । सादर जासु लहइ नित नासा ॥
तुम्हहिं निबेदित भोजन करहीं । प्रभु प्रसाद पट भूषन धरहीं ॥
सीस नवहिं सुर गुरु द्विज देखी । प्रीति सहित करि बिनय बिसेषी ॥
कर नित करहिं राम पद पूजा । राम भरोस हृदयँ नहिं दूजा ॥
चरन राम तीरथ चलि जाहीं । राम बसहु तिन्ह के मन माहीं ॥
मंत्रराजु नित जपहिं तुम्हारा । पूजहिं तुम्हहिं सहित परिवारा ॥
तरपन होम करहिं विधि नाना । विप्र जेवाँइ देहिं बहु दाना ॥
तुम्ह तें अधिक गुरहिं जियँ जानी । सकल भायँ सेवहिं सनमानी ॥

दो. सबु करि मागहिं एक फलु राम चरन रति होउ ।
तिन्ह के मन मंदिर बसहु सिय रघुनंदन दोउ ॥१२९ ॥

काम कोह मद मान न मोहा । लोभ न छोभ न राग न द्रोहा ॥
जिन्ह के कपट दंभ नहिं माया । तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया ॥
सब के प्रिय सब के हितकारी । दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी ॥
कहहिं सत्य प्रिय बचन विचारी । जागत सोवत सरन तुम्हारी ॥

तुम्हहिं छाड़ि गति दूसरि नाही । राम बसहु तिन्ह के मन माहीं ॥
जननी सम जानहिं परनारी । धनु पराव बिष तें बिष भारी ॥
जे हरषहिं पर संपति देखी । दुखित होहिं पर बिपति बिसेषी ॥
जिन्हहिं राम तुम्ह प्रानपिआरे । तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे ॥

दो. स्वामि सखा पितु मातु गुर जिन्ह के सब तुम्ह तात ।
मन मंदिर तिन्ह के बसहु सीय सहित दोउ भ्रात ॥१३० ॥

अवगुन तजि सब के गुन गहहीं । विप्र धेनु हित संकट सहहीं ॥
नीति निपुन जिन्ह कइ जग लीका । घर तुम्हार तिन्ह कर मनु नीका ॥
गुन तुम्हार समुझइ निज दोसा । जेहि सब भाँति तुम्हार भरोसा ॥
राम भगत प्रिय लागहिं जेही । तेहि उर बसहु सहित बैदेही ॥
जाति पाँति धनु धरम बड़ाई । प्रिय परिवार सदन सुखदाई ॥
सब तजि तुम्हहिं रहइ उर लाई । तेहि के हृदयँ रहहु रघुराई ॥
सरगु नरकु अपवरगु समाना । जहँ तहँ देख धरें धनु बाना ॥
करम बचन मन राउर चेरा । राम करहु तेहि के उर डेरा ॥

दो. जाहि न चाहिअ कबहुँ कछु तुम्ह सन सहज सनेहु ।
बसहु निरंतर तासु मन सो राउर निज गेहु ॥१३१ ॥

एहि विधि मुनिबर भवन देखाए । बचन सप्रेम राम मन भाए ॥
कह मुनि सुनहु भानुकुलनायक । आश्रम कहउँ समय सुखदायक ॥
चित्रकूट गिरि करहु निवासू । तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू ॥
सैलु सुहावन कानन चारू । करि केहरि मृग बिहग बिहारू ॥
नदी पुनीत पुरान बखानी । अत्रिप्रिया निज तपबल आनी ॥
सुरसरि धार नाउँ मंदाकिनि । जो सब पातक पोतक डाकिनि ॥
अत्रि आदि मुनिबर बहु बसहीं । करहिं जोग जप तप तन कसहीं ॥
चलहु सफल श्रम सब कर करहु । राम देहु गौरव गिरिबरहु ॥

दो. चित्रकूट महिमा अमित कहीं महामुनि गाइ ।
आए नहाए सरित बर सिय समेत दोउ भाइ ॥१३२ ॥

रघुबर कहेउ लखन भल घाटू । करहु कतहुँ अब ठाहर ठाटू ॥
लखन दीख पय उतर करारा । चहुँ दिसि फिरेउ धनुष जिमि नारा ॥
नदी पनच सर सम दम दाना । सकल कलुष कलि साउज नाना ॥
चित्रकूट जनु अचल अहेरी । चुकइ न घात मार मुठभेरी ॥
अस कहि लखन ठाउँ देखरावा । थलु बिलोकि रघुबर सुखु पावा ॥
रमेउ राम मनु देवन्ह जाना । चले सहित सुर थपति प्रधाना ॥
कोल किरात बेष सब आए । रचे परन तून सदन सुहाए ॥
वरनि न जाहि मंजु दुइ साला । एक ललित लघु एक बिसाला ॥

दो. लखन जानकी सहित प्रभु राजत रुचिर निकेत ।
सोह मदनु मुनि बेष जनु रति रितुराज समेत ॥१३३ ॥

मासपारायण, सत्रहँवा विश्राम
अमर नाग किंनर दिसिपाला । चित्रकूट आए तेहि काला ॥

राम प्रनामु कीन्ह सब काहू । मुदित देव लहि लोचन लाहू ॥
 बरषि सुमन कह देव समाजू । नाथ सनाथ भए हम आजू ॥
 करि बिनती दुख दुसह सुनाए । हरषित निज निज सदन सिधाए ॥
 चित्रकूट रघुनंदनु छाए । समाचार सुनि सुनि मुनि आए ॥
 आवत देखि मुदित मुनिबंदा । कीन्ह दंडवत रघुकुल चंदा ॥
 मुनि रघुवरहि लाइ उर लेही । सुफल होन हित आसिष देही ॥
 सिय सौमित्र राम छबि देखहिं । साधन सकल सफल करि लेखहिं ॥

दो. जथाजोग सनमानि प्रभु विदा किए मुनिबंद ।
 करहि जोग जप जाग तप निज आश्रमनिह सुछंद ॥ १३४ ॥

यह सुधि कोल किरातन्ह पाई । हरषे जनु नव निधि घर आई ॥
 कंद मूल फल भरि भरि दोना । चले रंक जनु लूटन सोना ॥
 तिन्ह महुँ जिन्ह देखे दोउ भ्राता । अपर तिन्हहि पूँछहि मगु जाता ॥
 कहत सुनत रघुबीर निकाई । आइ सबन्हि देखे रघुराई ॥
 करहिं जोहारु भेंट धरि आगे । प्रभुहि बिलोकहिं अति अनुरागे ॥
 चित्र लिखे जनु जहुँ तहुँ ठाढ़े । पुलक सरीर नयन जल बाढ़े ॥
 राम सनेह मगन सब जाने । कहि प्रिय बचन सकल सनमाने ॥
 प्रभुहि जोहारि बहोरि बहोरी । बचन विनीत कहहिं कर जोरी ॥

दो. अब हम नाथ सनाथ सब भए देखि प्रभु पाय ।
 भाग हमारे आगमनु राउर कोसलराय ॥ १३५ ॥

धन्य भूमि बन पंथ पहारा । जहुँ जहुँ नाथ पाउ तुम्ह धारा ॥
 धन्य बिहग मृग काननचारी । सफल जनम भए तुम्हहि निहारी ॥
 हम सब धन्य सहित परिवारा । दीख दरसु भरि नयन तुम्हारा ॥
 कीन्ह बासु भल ठाउँ बिचारी । इहाँ सकल रितु रहब सुखारी ॥
 हम सब भाँति करब सेवकाई । करि केहरि अहि बाघ बराई ॥
 बन बेहड़ गिरि कंदर खोहा । सब हमार प्रभु पग पग जोहा ॥
 तहुँ तहुँ तुम्हहि अहेर खेलाउब । सर निरझर जलठाउँ देखाउब ॥
 हम सेवक परिवार समेता । नाथ न सकुचब आयसु देता ॥

दो. बेद बचन मुनि मन अगम ते प्रभु करुना ऐन ।
 बचन किरातन्ह के सुनत जिमि पितु बालक बैन ॥ १३६ ॥

रामहि केवल प्रेमु पिआरा । जानि लेउ जो जाननिहारा ॥
 राम सकल बनचर तब तोषे । कहि मूढु बचन प्रेम परिपोषे ॥
 विदा किए सिर नाइ सिधाए । प्रभु गुन कहत सुनत घर आए ॥
 एहि विधि सिय समेत दोउ भाई । बसहिं बिपिन सुर मुनि सुखदाई ॥
 जब ते आइ रहे रघुनायकु । तब तें भयउ बनु मंगलदायकु ॥
 फूलहिं फलहिं बिटप बिधि नाना । मंजु बलित बर बेलि बिताना ॥
 सुरतरु सरिस सुभायँ सुहाए । मनहुँ विबुध बन परिहरि आए ॥
 गंज मंजुतर मधुकर श्रेनी । त्रिविध बयारि बहइ सुख देनी ॥

दो. नीलकंठ कलकंठ सुक चातक चक्क चकोर ।
 भाँति भाँति बोलहिं बिहग श्रवन सुखद चित चोर ॥ १३७ ॥

केरि केहरि कपि कोल कुरंगा । बिगतवैर बिचरहिं सब संगी ॥
 फिरत अहेर राम छबि देखी । होहिं मुदित मृगबंद बिसेषी ॥
 विबुध बिपिन जहुँ लगी जग माहीं । देखि राम बनु सकल सिहाहीं ॥
 सुरसरि सरसइ दिनकर कन्या । मेकलसुता गोदावरि धन्या ॥
 सब सर सिंधु नदी नद नाना । मंदाकिनि कर करहिं बखाना ॥
 उदय अस्त गिरि अरु कैलासू । मंदर मेरु सकल सुरबासू ॥
 सैल हिमाचल आदिक जेते । चित्रकूट जसु गावहिं तेते ॥
 विधि मुदित मन सुखु न समाई । श्रम विनु बिपुल बड़ाई पाई ॥

दो. चित्रकूट के बिहग मृग बेलि बिटप तून जाति ।
 पुन्य पुंज सब धन्य अस कहहिं देव दिन राति ॥ १३८ ॥

नयनवंत रघुवरहि बिलोकी । पाइ जनम फल होहिं बिसोकी ॥
 परसि चरन रज अचर सुखारी । भए परम पद के अधिकारी ॥
 सो बनु सैल सुभायँ सुहावन । मंगलमय अति पावन पावन ॥
 महिमा कहिअ कवनि विधि तासू । सुखसागर जहुँ कीन्ह निवासू ॥
 पय पयोधि तजि अवध बिहाई । जहुँ सिय लखनु रामु रहे आई ॥
 कहि न सकहिं सुषमा जसि कानन । जौ सत सहस होहिं सहसानन ॥
 सो मैं बरनि कहौ विधि केहीं । डाबर कमठ कि मंदर लेहीं ॥
 सेवहिं लखनु करम मन बानी । जाइ न सीलु सनेहु बखानी ॥

दो. -छिनु छिनु लखि सिय राम पद जानि आपु पर नेहु ।
 करत न सपनेहुँ लखनु चितु बंधु मातु पितु गेहु ॥ १३९ ॥

राम संग सिय रहति सुखारी । पुर परिजन गृह सुरति बिसारी ॥
 छिनु छिनु पिय बिधु बदनु निहारी । प्रमुदित मनहुँ चकोरकुमारी ॥
 नाह नेहु नित बढ़त बिलोकी । हरषित रहति दिवस जिमि कोकी ॥
 सिय मनु राम चरन अनुरागा । अवध सहस सम बनु प्रिय लागा ॥
 परनकुटी प्रिय प्रियतम संगी । प्रिय परिवारु कुरंग बिहंगा ॥
 सासु ससुर सम मुनितिय मुनिबर । असनु अमिअ सम कंद मूल फर ॥
 नाथ साथ साँथरी सुहाई । मयन सयन सय सम सुखदाई ॥
 लोकप होहिं बिलोकत जासू । तेहि कि मोहि सक बिषय बिलासू ॥

दो. -सुमिरत रामहि तजहिं जन तून सम बिषय बिलासु ।
 रामप्रिया जग जननि सिय कछु न आचरजु तासु ॥ १४० ॥

सीय लखन जेहि विधि सुख लहहीं । सोइ रघुनाथ करहि सोइ कहहीं ॥
 कहहिं पुरातन कथा कहानी । सुनहिं लखनु सिय अति सुखु मानी ॥
 जब जब रामु अवध सुधि करहीं । तब तब बारि बिलोचन भरहीं ॥
 सुमिरि मातु पितु परिजन भाई । भरत सनेहु सीलु सेवकाई ॥
 कृपासिंधु प्रभु होहिं दुखारी । धीरजु धरहिं कुसमउ बिचारी ॥
 लखि सिय लखनु बिकल होइ जाहीं । जिमि पुरुषहि अनुसर परिछाहीं ॥
 प्रिया बंधु गति लखि रघुनंदनु । धीर कृपाल भगत उर चंदनु ॥
 लगे कहन कछु कथा पुनीता । सुनि सुखु लहहिं लखनु अरु सीता ॥

दो. रामु लखन सीता सहित सोहत परन निकेत ।
जिमि बासव बस अमरपुर सची जयंत समेत ॥ १४१ ॥

जोगवहिं प्रभु सिय लखनहिं कैसें । पलक बिलोचन गोलक जैसें ॥
सेवहिं लखनु सीय रघुबीरहि । जिमि अबिबेकी पुरुष सरीरहि ॥
एहि विधि प्रभु बन बसहिं सुखारी । खग मृग सुर तापस हितकारी ॥
कहेउं राम बन गवनु सुहावा । सुनहु सुमंत्र अवध जिमि आवा ॥
फिरेउ निषादु प्रभुहि पहुँचाई । सचिव सहित रथ देखेसि आई ॥
मंत्री बिकल बिलोकि निषादु । कहि न जाइ जस भयउ बिषादु ॥
राम राम सिय लखन पुकारी । परेउ धरनितल ब्याकुल भारी ॥
देखि दखिन दिसि हय हिहिनाहीं । जनु विनु पंख बिहग अकुलाहीं ॥

दो. नहिं तून चरहिं पिअहिं जलु मोचहिं लोचन बारि ।
ब्याकुल भए निषाद सब रघुबर बाजि निहारि ॥ १४२ ॥

धरि धीरज तब कहइ निषादु । अब सुमंत्र परिहरहु बिषादु ॥
तुम्ह पंडित परमारथ गयाता । धरहु धीर लखि विमुख बिधाता ॥
बिबिध कथा कहि कहि मृदु बानी । रथ बैठारेउ बरबस आनी ॥
सोक सिधिल रथ सकइ न हाँकी । रघुबर बिरह पीर उर बाँकी ॥
चरफराहिं मग चलहिं न घोरे । बन मृग मनहुँ आनि रथ जोरे ॥
अदुकि परहिं फिरि हेरहिं पीछे । राम बियोगि बिकल दुख तीछे ॥
जो कह रामु लखनु बैदेही । हिंकरि हिंकरि हित हेरहिं तेही ॥
बाजि बिरह गति कहि किमि जाती । विनु मनि फनिक बिकल जेहि भाँती ॥

दो. भयउ निषाद बिषादबस देखत सचिव तुरंग ।
बोलि सुसेवक चारि तब दिए सारथी संग ॥ १४३ ॥

गुह सारथिहि फिरेउ पहुँचाई । बिरहु बिषादु बरनि नहिं जाई ॥
चले अवध लेइ रथहि निषादा । होहि छनहिं छन मगन बिषादा ॥
सोच सुमंत्र बिकल दुख दीना । धिग जीवन रघुबीर बिहीना ॥
रहिहि न अंतहुँ अधम सरीरु । जसु न लहेउ बिछुरत रघुबीरु ॥
भए अजस अध भाजन प्राना । कवन हेतु नहिं करत पयाना ॥
अहह मंद मनु अवसर चूका । अजहुँ न हृदय होत दुइ टूका ॥
मीजि हाथ सिरु धुनि पछिताई । मनहुँ कृपन धन रासि गवाँई ॥
बिरिद बाँधि बर बीरु कहाई । चलेउ समर जनु सुभट पराई ॥

दो. विप्र बिबेकी बेदविद संमत साधु सुजाति ।
जिमि धोखें मदपान कर सचिव सोच तेहि भाँति ॥ १४४ ॥

जिमि कुलीन तिय साधु सयानी । पतिदेवता करम मन बानी ॥
रहै करम बस परिहरि नाहू । सचिव हृदयँ तिमि दारुन दाहू ॥
लोचन सजल डीठि भइ थोरी । सुनइ न श्रवन बिकल मति भोरी ॥
सूखहिं अधर लागि मुहँ लाटी । जिउ न जाइ उर अवधि कपाटी ॥
बिबरन भयउ न जाइ निहारी । मारेसि मनहुँ पिता महतारी ॥
हानि गलानि बिपुल मन ब्यापी । जमपुर पंथ सोच जिमि पापी ॥
बचनु न आव हृदयँ पछिताई । अवध काह मै देखब जाई ॥

राम रहित रथ देखिहि जोई । सकुचिहि मोहि बिलोकत सोई ॥

दो. -धाइ पूँछिहहिं मोहि जब बिकल नगर नर नारि ।
उतरु देब मै सबहि तब हृदयँ बज्जु बैठारि ॥ १४५ ॥

पुछिहहिं दीन दुखित सब माता । कहब काह मै तिन्हहि बिधाता ॥
पूँछिहि जबहिं लखन महतारी । कहिहउं कवन सँदेस सुखारी ॥
राम जननि जब आइहि धाई । सुमिरि बच्छु जिमि धेनु लवाई ॥
पूँछत उतरु देब मै तेही । गे बन राम लखनु बैदेही ॥
जोइ पूँछिहि तेहि ऊतरु देवा जाइ अवध अब यहू सुखु लेवा ॥
पूँछिहि जबहिं राउ दुख दीना । जिवनु जासु रघुनाथ अधीना ॥
देहउं उतरु कौनु मुहु लाई । आयउं कुसल कुअँर पहुँचाई ॥
सुनत लखन सिय राम सँदेसू । तून जिमि तनु परिहरिहि नरेसू ॥

दो. -हृदउ न बिदरेउ पंक जिमि बिछुरत प्रीतमु नीरु ॥
जानत हौं मोहि दीन्ह विधि यहू जातना सरीरु ॥ १४६ ॥

एहि विधि करत पंथ पछितावा । तमसा तीर तुरत रथु आवा ॥
बिदा किए करि विनय निषादा । फिरे पायँ परि बिकल बिषादा ॥
पैठत नगर सचिव सकुचाई । जनु मारेसि गुर बाँभन गाई ॥
बैठि बिटप तर दिवसु गवाँवा । साँझ समय तब अवसर पावा ॥
अवध प्रबेसु कीन्ह अँधिआरें । पैठ भवन रथु राखि दुआरें ॥
जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाए । भूप द्वार रथु देखन आए ॥
रथु पहिचानि बिकल लखि घोरे । गरहिं गात जिमि आतप ओरे ॥
नगर नारि नर ब्याकुल कैसें । निघटत नीर मीनगन जैसें ॥

दो. -सचिव आगमनु सुनत सबु बिकल भयउ रनिवासु ।
भवन भयंकरु लाग तेहि मानहुँ प्रेत निवासु ॥ १४७ ॥

अति आरति सब पूँछहिं रानी । उतरु न आव बिकल भइ बानी ॥
सुनइ न श्रवन नयन नहिं सूझा । कहहु कहाँ नृप तेहि तेहि बूझा ॥
दासिन्ह दीख सचिव बिकलाई । कौसल्या गृहँ गई लवाई ॥
जाइ सुमंत्र दीख कस राजा । अमिअ रहित जनु चंदु बिराजा ॥
आसन सयन बिभूषन हीना । परेउ भूमितल निपट मलीना ॥
लेइ उसासु सोच एहि भाँती । सुरपुर तें जनु खँसेउ जजाती ॥
लेत सोच भरि छिनु छिनु छाती । जनु जरि पंख परेउ संपाती ॥
राम राम कह राम सनेही । पुनि कह राम लखन बैदेही ॥

दो. देखि सचिवँ जय जीव कहि कीन्हेउ दंड प्रनामु ।
सुनत उठेउ ब्याकुल नृपति कहू सुमंत्र कहँ रामु ॥ १४८ ॥

भूप सुमंत्रु लीन्ह उर लाई । बूड़त कछु अधार जनु पाई ॥
सहित सनेह निकट बैठारी । पूँछत राउ नयन भरि बारी ॥
राम कुसल कहू सखा सनेही । कहँ रघुनाथु लखनु बैदेही ॥
आने फेरि कि बनहि सिधाए । सुनत सचिव लोचन जल छाए ॥
सोक बिकल पुनि पूँछ नरेसू । कहू सिय राम लखन सँदेसू ॥

राम रूप गुन सील सुभाऊ । सुमिरि सुमिरि उर सोचत राऊ ॥
राऊ सुनाइ दीन्ह बनबासू । सुनि मन भयउ न हरषु हराँसू ॥
सो सुत बिछुरत गए न प्राना । को पापी बड़ मोहि समाना ॥

दो. सखा रामु सिय लखनु जहँ तहाँ मोहि पहुँचाउ ।
नाहिं त चाहत चलन अब प्रान कहउँ सतिभाउ ॥ १४९ ॥

पुनि पुनि पूँछत मंत्रहि राऊ । प्रियतम सुअन सँदेस सुनाऊ ॥
करहि सखा सोइ बेगि उपाऊ । रामु लखनु सिय नयन देखाऊ ॥
सचिव धीर धरि कह मुद्दु बानी । महाराज तुम्ह पंडित ग्यानी ॥
बीर सुधीर धुरंधर देवा । साधु समाजु सदा तुम्ह सेवा ॥
जनम मरन सब दुख भोगा । हानि लाभ प्रिय मिलन बियोगा ॥
काल करम बस होहि गोसाईं । बरबस राति दिवस की नाई ॥
सुख हरषहिं जड़ दुख बिलखाही । दोउ सम धीर धरहिं मन माहीं ॥
धीरज धरहु विवेकु विचारी । छाड़िअ सोच सकल हितकारी ॥

दो. प्रथम बासु तमसा भयउ दूसर सुरसरि तीर ।
न्हाई रहे जलपानु करि सिय समेत दोउ बीर ॥ १५० ॥

केवट कीन्हि बहुत सेवकाई । सो जामिनि सिंगरौर गवाँई ॥
होत प्रात बट छीरु मगावा । जटा मुकुट निज सीस बनावा ॥
राम सखाँ तब नाव मगाई । प्रिया चढ़ाई चढ़े रघुराई ॥
लखन बान धनु धरे बनाई । आपु चढ़े प्रभु आयसु पाई ॥
बिकल बिलोकि मोहि रघुबीरा । बोले मधुर बचन धरि धीरा ॥
तात प्रनामु तात सन कहेहु । बार बार पद पंकज गहेहु ॥
करबि पायँ परि बिनय बहोरी । तात करिअ जनि चिंता मोरी ॥
बन मग मंगल कुसल हमारें । कृपा अनुग्रह पुन्य तुम्हारें ॥

छं. तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब सुखु पाइहौ ।
प्रतिपालि आयसु कुसल देखन पाय पुनि फिरि आइहौ ॥
जननी सकल परितोषि परि परि पायँ करि बिनती धनी ।
तुलसी करेहु सोइ जतनु जेहिं कुसली रहहिं कोसल धनी ॥

सो. गुर सन कहब सँदेसु बार बार पद पदुम गहि ।
करब सोइ उपदेसु जेहिं न सोच मोहि अवधपति ॥ १५१ ॥

पुरजन परिजन सकल निहोरी । तात सुनाएहु बिनती मोरी ॥
सोइ सब भाँति मोर हितकारी । जातें रह नरनाहु सुखारी ॥
कहब सँदेसु भरत के आएँ । नीति न तजिअ राजपदु पाएँ ॥
पालेहु प्रजहि करम मन बानी । सेएहु मातु सकल सम जानी ॥
ओर निबाहेहु भायप भाई । करि पितु मातु सुजन सेवकाई ॥
तात भाँति तेहि राखब राऊ । सोच मोर जेहिं करै न काऊ ॥
लखन कहे कछु बचन कठोरा । बरजि राम पुनि मोहि निहोरा ॥
बार बार निज सपथ देवाई । कहबि न तात लखन लरिकाई ॥

दो. कहि प्रनाम कछु कहन लिय सिय भइ सिथिल सनेह ।

थकित बचन लोचन सजल पुलक पल्लवित देह ॥ १५२ ॥

तेहि अवसर रघुबर रूख पाई । केवट पारहि नाव चलाई ॥
रघुकुलतिलक चले एहि भाँती । देखउँ टाढ़ कुलिस धरि छाती ॥
मैं आपन किमि कहौ कलेसू । जिअत फिरैउँ लेइ राम सँदेसू ॥
अस कहि सचिव बचन रहि गयऊ । हानि गलानि सोच बस भयऊ ॥
सुत बचन सुनतहिं नरनाहु । परेउ धरनि उर दारुन दाहु ॥
तलफत बिषम मोह मन मापा । माजा मनहुँ मीन कहुँ ब्यापा ॥
करि बिलाप सब रोवहिं रानी । महा बिपति किमि जाइ बखानी ॥
सुनि बिलाप दुखहु दुखु लागा । धीरजहु कर धीरजु भागा ॥

दो. भयउ कोलाहलु अवध अति सुनि नृप राउर सोरु ।
विपुल बिहग बन परेउ निसि मानहुँ कुलिस कठोरु ॥ १५३ ॥

प्रान कंठगत भयउ भुआलू । मनि बिहीन जनु ब्याकुल ब्यालू ॥
इद्री सकल बिकल भई भारी । जनु सर सरसिज बनु बिनु बारी ॥
कौसल्याँ नृपु दीख मलाना । रबिकुल रबि अँथयउ जियँ जाना ॥
उर धरि धीर राम महतारी । बोली बचन समय अनुसारी ॥
नाथ समुझि मन करिअ बिचारू । राम बियोग पयोधि अपारू ॥
करनधार तुम्ह अवध जहाजू । चढ़ेउ सकल प्रिय पथिक समाजू ॥
धीरजु धरिअ त पाइअ पारू । नाहिं त बूड़िहि सबु परिवारू ॥
जौ जियँ धरिअ बिनय पिय मोरी । रामु लखनु सिय मिलहिं बहोरी ॥

दो. -प्रिया बचन मृदु सुनत नृपु चितयउ अँखि उघारि ।
तलफत मीन मलीन जनु सीचत सीतल बारि ॥ १५४ ॥

धरि धीरजु उठी बैठ भुआलू । कहु सुमंत्र कहँ राम कृपालू ॥
कहाँ लखनु कहँ रामु सनेही । कहँ प्रिय पुत्रबधू बैदेही ॥
बिलपत राउ बिकल बहु भाँती । भइ जुग सरिस सिराति न राती ॥
तापस अंध साप सुधि आई । कौसल्यहि सब कथा सुनाई ॥
भयउ बिकल बरनत इतिहासा । राम रहित धिग जीवन आसा ॥
सो तनु राखि करब मैं काहा । जेहि न प्रेम पनु मोर निबाहा ॥
हा रघुनंदन प्रान पिरीते । तुम्ह बिनु जिअत बहुत दिन बीते ॥
हा जानकी लखन हा रघुबर । हा पितु हित चित चातक जलधर ॥

दो. राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम ।
तनु परिहरि रघुबर बिरहँ राउ गयउ सुरधाम ॥ १५५ ॥

जिअन मरन फलु दसरथ पावा । अंड अनेक अमल जसु छावा ॥
जिअत राम बिधु बदनु निहारा । राम बिरह करि मरनु सँवारा ॥
सोक बिकल सब रोवहिं रानी । रूपु सील बलु तेजु बखानी ॥
करहिं बिलाप अनेक प्रकारा । परहीं भूमितल बारहिं बारा ॥
बिलपहिं बिकल दास अरु दासी । घर घर रुदनु करहिं पुरबासी ॥
अँथयउ आजु भानुकुल भानू । धरम अवधि गुन रूपु निधानू ॥
गारी सकल कैकइहि देहीं । नयन बिहीन कीन्ह जग जेहीं ॥
एहि बिधि बिलपत रैन बिहानी । आए सकल महामुनि ग्यानी ॥

दो. तब बसिष्ठ मुनि समय सम कहि अनेक इतिहास ।
सोक नेवारेउ सबहि कर निज बिग्यान प्रकास ॥ १५६ ॥

तेल नाँव भरि नृप तनु राखा । दूत बोलाइ बहुरि अस भाषा ॥
धावहु बेगि भरत पहिं जाहू । नृप सुधि कतहुँ कहहु जनि काहू ॥
एतनेइ कहेहु भरत सन जाई । गुर बोलाई पठयउ दोउ भाई ॥
सुनि मुनि आयसु धावन धाए । चले बेग बर बाजि लजाए ॥
अनरथु अवध अरंभेउ जब तें । कुसगुन होहिं भरत कहुँ तब तें ॥
देखहिं राति भयानक सपना । जागि करहिं कटु कोटि कलपना ॥
विप्र जेवाँइ देहिं दिन दाना । सिव अभिषेक करहिं बिधि नाना ॥
मागहिं हृदयँ महेस मनाई । कुसल मातु पितु परिजन भाई ॥

दो. एहि बिधि सोचत भरत मन धावन पहुँचे आइ ।
गुर अनुसासन श्रवन सुनि चले गनेसु मनाइ ॥ १५७ ॥

चले समीर बेग ह्य हाँके । नाघत सरित सैल बन बाँके ॥
हृदयँ सोचु बड़ कछु न सोहाई । अस जानहिं जियँ जाउँ उड़ाई ॥
एक निमेष बरस सम जाई । एहि बिधि भरत नगर निअराई ॥
असगुन होहिं नगर पैठारा । रटहिं कुभाँति कुखेत करारा ॥
खर सिआर बोलहिं प्रतिकूला । सुनि सुनि होइ भरत मन सूला ॥
श्रीहत सर सरिता बन बागा । नगरु बिसेषि भयावनु लागा ॥
खग मृग ह्य गय जाहिं न जोए । राम बियोग कुरोग बिगोए ॥
नगर नारि नर निपट दुखारी । मनहुँ सबन्हि सब संपति हारी ॥

दो. पुरजन मिलिहिं न कहहिं कछु गवाँहिं जोहारहिं जाहिं ।
भरत कुसल पूँछि न सकहिं भय विषाद मन माहिं ॥ १५८ ॥

हाट बाट नहिं जाइ निहारी । जनु पुर दहँ दिसि लागि दवारी ॥
आवत सुत सुनि कैकयनंदिनि । हरषी रबिकुल जलरुह चंदिनि ॥
सजि आरती मुदित उठि धाई । द्वारेहिं भेंटि भवन लेइ आई ॥
भरत दुखित परिवारु निहारा । मानहुँ तुहिन बनज बनू मारा ॥
कैकेई हरषित एहि भाँति । मनहुँ मुदित दव लाइ किराती ॥
सुतहि ससोच देखि मनु मारें । पूँछति नैहर कुसल हमारें ॥
सकल कुसल कहि भरत सुनाई । पूँछी निज कुल कुसल भलाई ॥
कहु कहुँ तात कहाँ सब माता । कहुँ सिय राम लखन प्रिय भ्राता ॥

दो. सुनि सुत बचन सनेहमय कपट नीर भरि नैन ।
भरत श्रवन मन सूल सम पापिनि बोली बैन ॥ १५९ ॥

तात बात मैं सकल सँवारी । भै मंथरा सहाय बिचारी ॥
कछुक काज बिधि बीच बिगारेउ । भूपति सुरपति पुर पगु धारेउ ॥
सुनत भरतु भए विबस विषादा । जनु सहमेउ करि केहरि नादा ॥
तात तात हा तात पुकारी । परे भूमितल ब्याकुल भारी ॥
चलत न देखन पायउँ तोही । तात न रामहि सौँपेहु मोही ॥
बहुरि धीर धरि उठे सँभारी । कहु पितु मरन हेतु महतारी ॥

सुनि सुत बचन कहति कैकेई । मरमु पाँछि जनु माहुर देई ॥
आदिहु तें सब आपनि करनी । कुटिल कठोर मुदित मन बरनी ॥

दो. भरतहि बिसरेउ पितु मरन सुनत राम बन गौनु ।
हेतु अपनपउ जानि जियँ थकित रहे धरि मौनु ॥ १६० ॥

बिकल बिलोकि सुतहि समुझावति । मनहुँ जरे पर लोनु लगावति ॥
तात राउ नहिं सोचे जोगू । बिद्वइ सुकृत जसु कीन्हेउ भोगू ॥
जीवत सकल जनम फल पाए । अंत अमरपति सदन सिधाए ॥
अस अनुमानि सोच परिहरहू । सहित समाज राज पुर करहू ॥
सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारू । पाकें छत जनु लाग अँगारू ॥
धीरज धरि भरि लेहिं उसासा । पापनि सबहि भाँति कुल नासा ॥
जौ पै कुरुचि रही अति तोही । जनमत काहे न मारे मोही ॥
पेड़ काटि तें पालउ सीचा । मीन जिअन निति बारि उलीचा ॥

दो. हंसबंसु दसरथु जनकु राम लखन से भाइ ।
जननी तूँ जननी भई बिधि सन कछु न बसाइ ॥ १६१ ॥

जब तें कुमति कुमत जियँ ठयऊ । खंड खंड होइ हृदउ न गयऊ ॥
बर मागत मन भइ नहिं पीरा । गरि न जीह मुहँ परेउ न कीरा ॥
भूपँ प्रतीत तोरि किमि कीन्ही । मरन काल बिधि मति हरि लीन्ही ॥
बिधिहुँ न नारि हृदय गति जानी । सकल कपट अघ अवगुन खानी ॥
सरल सुसील धरम रत राऊ । सो किमि जानै तीय सुभाऊ ॥
अस को जीव जंतु जग माहीं । जेहि रघुनाथ प्रानप्रिय नाहीं ॥
भे अति अहित रामु तेउ तोही । को तू अहसि सत्य कहु मोही ॥
जो हसि सो हसि मुहँ मसि लाई । औँसि ओट उठि बैठहिं जाई ॥

दो. राम बिरोधी हृदय तें प्रगट कीन्ह बिधि मोहि ।
मो समान को पातकी वादि कहउँ कछु तोहि ॥ १६२ ॥

सुनि सत्रुघुन मातु कुटिलाई । जरहिं गात रिस कछु न बसाई ॥
तेहि अवसर कुबरी तहँ आई । बसन बिभूषन बिबिध बनाई ॥
लखि रिस भरेउ लखन लघु भाई । बरत अनल घृत आहुति पाई ॥
हुमगि लात तकि कूबर मारा । परि मुह भर महि करत पुकारा ॥
कूबर टूटेउ फूट कपारू । दलित दसन मुख रुधिर प्रचारू ॥
आह दइअ मैं काह नसावा । करत नीक फलु अनइस पावा ॥
सुनि रिपुहन लखि नख सिख खोटी । लगे घसीटन धरि धरि झोटी ॥
भरत दयानिधि दीन्हि छुड़ाई । कौसल्या पहिं गे दोउ भाई ॥

दो. मलिन बसन विवरन बिकल कूस सरीर दुख भार ।
कनक कलप बर बेलि बन मानहुँ हनी तुसार ॥ १६३ ॥

भरतहि देखि मातु उठि धाई । मुरुछित अवनि परी झइँ आई ॥
देखत भरतु बिकल भए भारी । परे चरन तन दसा बिसारी ॥
मातु तात कहुँ देहि देखाई । कहुँ सिय रामु लखनु दोउ भाई ॥
कैकइ कत जनमी जग माझा । जौ जनमि त भइ काहे न बाँझा ॥

कुल कलंकु जेहिं जनमेउ मोही । अपजस भाजन प्रियजन द्रोही ॥
को तिभुवन मोहि सरिस अभागी । गति असि तोरि मातु जेहि लागी ॥
पितु सुरपुर बन रघुबर केतू । मैं केवल सब अनरथ हेतु ॥
धिग मोहि भयउँ बेनु बन आगी । दुसह दाह दुख दूषन भागी ॥

दो. मातु भरत के बचन मृदु सुनि सुनि उठी सँभारि ॥
लिए उठाइ लगाइ उर लोचन मोचति बारि ॥ १६४ ॥

सरल सुभाय मायँ हियँ लाए । अति हित मनहुँ राम फिरि आए ॥
भेंटेउ बहुरि लखन लघु भाई । सोकु सनेहु न हृदयँ समाई ॥
देखि सुभाउ कहत सबु कोई । राम मातु अस काहे न होई ॥
माताँ भरतु गोद बैठारे । आँसु पौँछि मृदु बचन उचारे ॥
अजहुँ बच्छ बलि धीरज धरहु । कुसमउ समुझि सोक परिहरहु ॥
जनि मानहु हियँ हानि गलानी । काल करम गति अघटित जानि ॥
काहुहि दोसु देहु जनि ताता । भा मोहि सब विधि बाम बिधाता ॥
जो एतेहुँ दुख मोहि जिआवा । अजहुँ को जानइ का तेहि भावा ॥

दो. पितु आयस भूषन बसन तात तजे रघुबीर ।
बिसमउ हरषु न हृदयँ कछु पहिरे बलकल चीर । १६५ ॥

मुख प्रसन्न मन रंग न रोषू । सब कर सब विधि करि परितोषू ॥
चले विपिन सुनि सिय संग लागी । रहइ न राम चरन अनुरागी ॥
सुनतहिं लखनु चले उठि साथा । रहहिं न जतन किए रघुनाथा ॥
तब रघुपति सबही सिरु नाई । चले संग सिय अरु लघु भाई ॥
रामु लखनु सिय बनहि सिधाए । गइउँ न संग न प्रान पठाए ॥
यहु सबु भा इन्ह आँखिन्ह आगे । तउ न तजा तनु जीव अभागें ॥
मोहि न लाज निज नेहु निहारी । राम सरिस सुत मैं महतारी ॥
जिए मरै भल भूपति जाना । मोर हृदय सत कुलिस समाना ॥

दो. कौसल्या के बचन सुनि भरत सहित रनिवास ।
व्याकुल बिलपत राजगृह मानहुँ सोक नेवासु ॥ १६६ ॥

बिलपहिं बिकल भरत दोउ भाई । कौसल्याँ लिए हृदयँ लगाई ॥
भाँति अनेक भरतु समुझाए । कहि विवेकमय बचन सुनाए ॥
भरतहुँ मातु सकल समुझाई । कहि पुरान श्रुति कथा सुहाई ॥
छुल बिहीन सुचि सरल सुबानी । बोले भरत जोरि जुग पानी ॥
जे अघ मातु पिता सुत मारें । गाइ गोठ महिसुर पुर जारें ॥
जे अघ तिय बालक बध कीन्हें । मीत महीपति माहुर दीन्हें ॥
जे पातक उपपातक अहहीं । करम बचन मन भव कवि कहहीं ॥
ते पातक मोहि होहुँ बिधाता । जौ यहु होइ मोर मत माता ॥

दो. जे परिहरि हरि हर चरन भजहिं भूतगन घोर ।
तेहि कइ गति मोहि देउ विधि जौ जननी मत मोर ॥ १६७ ॥

बेचहिं बेदु धरमु दुहि लेहीं । पिसुन पराय पाप कहि देहीं ॥
कपटी कुटिल कलहप्रिय क्रोधी । बेद बिदूषक बिस्व बिरोधी ॥

लोभी लंपट लोलुपचारा । जे ताकहिं परधनु परदारा ॥
पावौँ मैं तिन्ह के गति घोरा । जौ जननी यहु संमत मोरा ॥
जे नहिं साधुसंग अनुरागे । परमारथ पथ बिमुख अभागे ॥
जे न भजहिं हरि नरतनु पाई । जिन्हहि न हरि हर सुजसु सोहाई ॥
तजि श्रुतिपंथु बाम पथ चलहीं । बंचक विरचि बेष जगु छलहीं ॥
तिन्ह कै गति मोहि संकर देऊ । जननी जौ यहु जानौ भेऊ ॥

दो. मातु भरत के बचन सुनि साँचे सरल सुभायँ ।
कहति राम प्रिय तात तुम्ह सदा बचन मन कायँ ॥ १६८ ॥

राम प्रानहु तें प्रान तुम्हारे । तुम्ह रघुपतिहि प्रानहु तें प्यारे ॥
बिधु बिष चवै स्ववै हिमु आगी । होइ बारिचर बारि बिरागी ॥
भएँ ग्यानु बरु मिटै न मोहू । तुम्ह रामहि प्रतिकूल न होहू ॥
मत तुम्हार यहु जो जग कहहीं । सो सपनेहुँ सुख सुगति न लहहीं ॥
अस कहि मातु भरतु हियँ लाए । धन पय स्ववहिं नयन जल छाए ॥
करत बिलाप बहुत यहि भाँती । बैठेहिं बीति गइ सब राती ॥
बामदेउ बसिष्ठ तब आए । सचिव महाजन सकल बोलाए ॥
मुनि बहु भाँति भरत उपदेसे । कहि परमारथ बचन सुदेसे ॥

दो. तात हृदयँ धीरजु धरहु करहु जो अवसर आजु ।
उठे भरत गुर बचन सुनि करन कहेउ सबु साजु ॥ १६९ ॥

नृपतनु वेद विदित अन्हवावा । परम बिचित्र बिमानु बनावा ॥
गहि पद भरत मातु सब राखी । रहीं रानि दरसन अभिलाषी ॥
चंदन अगर भार बहु आए । अमित अनेक सुगंध सुहाए ॥
सरजु तीर रचि चिता बनाई । जनु सुरपुर सोपान सुहाई ॥
एहि बिधि दाह क्रिया सब कीन्ही । बिधिवत न्हाइ तिलांजुलि दीन्ही ॥
सोधि सुमृति सब बेद पुराना । कीन्ह भरत दसगात बिधाना ॥
जहँ जस मुनिबर आयसु दीन्हा । तहँ तस सहस भाँति सबु कीन्हा ॥
भए बिसुद्ध दिए सब दाना । धेनु बाजि गज बाहन नाना ॥

दो. सिंघासन भूषन बसन अन्न धरनि धन धाम ।
दिए भरत लहि भूमिसुर भे परिपूरन काम ॥ १७० ॥

पितु हित भरत कीन्हि जसि करनी । सो मुख लाख जाइ नहिं बरनी ॥
सुदिनु सोधि मुनिबर तब आए । सचिव महाजन सकल बोलाए ॥
बैठे राजसभाँ सब जाई । पठए बोलि भरत दोउ भाई ॥
भरतु बसिष्ठ निकट बैठारे । नीति धरममय बचन उचारे ॥
प्रथम कथा सब मुनिबर बरनी । कैकइ कुटिल कीन्हि जसि करनी ॥
भूप धरमब्रतु सत्य सराहा । जेहिं तनु परिहरि प्रेमु निबाहा ॥
कहत राम गुन सील सुभाऊ । सजल नयन पुलकेउ मुनिराऊ ॥
बहुरि लखन सिय प्रीति बखानी । सोक सनेह मगन मुनि ग्यानी ॥

दो. सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ ।
हानि लाभु जीवन मरनु जसु अपजसु बिधि हाथ ॥ १७१ ॥

अस बिचारि केहि देइअ दोसू । ब्यरथ काहि पर कीजिअ रोसू ॥
तात बिचारु केहि करहु मन माहीं । सोच जोगु दसरथु नृपु नाहीं ॥
सोचिअ बिप्र जो बेद बिहीना । तजि निज धरमु बिषय लयलीना ॥
सोचिअ नृपति जो नीति न जाना । जेहि न प्रजा प्रिय प्रान समाना ॥
सोचिअ बयसु कृपन धनवानू । जो न अतिथि सिव भगति सुजानू ॥
सोचिअ सूदू बिप्र अवमानी । मुखर मानप्रिय ग्यान गुमानी ॥
सोचिअ पुनि पति बंचक नारी । कुटिल कलहप्रिय इच्छाचारी ॥
सोचिअ बटु निज ब्रतु परिहरई । जो नहिं गुर आयसु अनुसरई ॥

दो. सोचिअ गृही जो मोह बस करइ करम पथ त्याग ।
सोचिअ जति प्रंपच रत विगत बिबेक बिराग ॥ १७२ ॥

बैखानस सोइ सोचै जोगु । तपु बिहाइ जेहि भावइ भोगू ॥
सोचिअ पिसुन अकारन क्रोधी । जननि जनक गुर बंधु बिरोधी ॥
सब बिधि सोचिअ पर अपकारी । निज तनु पोषक निरदय भारी ॥
सोचनीय सबहि बिधि सोई । जो न छाड़ि छलु हरि जन होई ॥
सोचनीय नहिं कोसलराऊ । भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ ॥
भयउ न अहइ न अब होनिहारा । भूप भरत जस पिता तुम्हारा ॥
बिधि हरि हरु सुरपति दिसिनाथा । बरनहिं सब दसरथ गुन गाथा ॥

दो. कहहु तात केहि भाँति कोउ करिहि बड़ाई तासु ।
राम लखन तुम्ह सत्रुहन सरिस सुअन सुचि जासु ॥ १७३ ॥

सब प्रकार भूपति बड़भागी । बादि बिषादु करिअ तेहि लागी ॥
यहु सुनि समुझि सोचु परिहरहु । सिर धरि राज रजायसु करहु ॥
राँय राजपदु तुम्ह कहूँ दीन्हा । पिता बचनु फुर चाहिअ कीन्हा ॥
तजे रामु जेहिं बचनहि लागी । तनु परिहरेउ राम बिरहागी ॥
नृपहि बचन प्रिय नहिं प्रिय प्राना । करहु तात पितु बचन प्रवाना ॥
करहु सीस धरि भूप रजाई । हइ तुम्ह कहूँ सब भाँति भलाई ॥
परसुराम पितु अग्या राखी । मारी मातु लोक सब साखी ॥
तनय जजातिहि जौबनु दयऊ । पितु अग्याँ अघ अजसु न भयऊ ॥

दो. अनुचित उचित बिचारु तजि जे पालहिं पितु बैन ।
ते भाजन सुख सुजस के बसहिं अमरपति ऐन ॥ १७४ ॥

अवसि नरेस बचन फुर करहु । पालहु प्रजा सोकु परिहरहु ॥
सुरपुर नृप पाइहि परितोषू । तुम्ह कहूँ सुकृत सुजसु नहिं दोषू ॥
बेद बिदित संमत सबही का । जेहि पितु देइ सो पावइ टीका ॥
करहु राजु परिहरहु गलानी । मानहु मोर बचन हित जानी ॥
सुनि सुख लहब राम बैदेही । अनुचित कहब न पंडित केही ॥
कौसल्यादि सकल महतारी । तेउ प्रजा सुख होहिं सुखारी ॥
परम तुम्हार राम कर जानिहि । सो सब बिधि तुम्ह सन भल मानिहि ॥
सौपेहु राजु राम के आएँ । सेवा करेहु सनेह सुहाएँ ॥

दो. कीजिअ गुर आयसु अवसि कहहिं सचिव कर जोरि ।
रघुपति आएँ उचित जस तस तब करब बहोरि ॥ १७५ ॥

कौसल्या धरि धीरजु कहई । पूत पथ्य गुर आयसु अहई ॥
सो आदरिअ करिअ हित मानी । तजिअ बिषादु काल गति जानी ॥
बन रघुपति सुरपति नरनाहु । तुम्ह एहि भाँति तात कदराहु ॥
परिजन प्रजा सचिव सब अंबा । तुम्हही सुत सब कहूँ अवलंबा ॥
लखि बिधि बाम कालु कठिनाई । धीरजु धरहु मातु बलि जाई ॥
सिर धरि गुर आयसु अनुसरहु । प्रजा पालि परिजन दुखु हरहु ॥
गुर के बचन सचिव अभिनंदनु । सुने भरत हिय हित जनु चंदनु ॥
सुनी बहोरि मातु मृदु बानी । सील सनेह सरल रस सानी ॥

छं. सानी सरल रस मातु बानी सुनि भरत व्याकुल भए ।
लोचन सरोरुह स्ववत सींचत बिरह उर अंकुर नए ॥
सो दसा देखत समय तेहि बिसरी सबहि सुधि देह की ।
तुलसी सराहत सकल सादर सीवँ सहज सनेह की ॥

सो. भरतु कमल कर जोरि धीर धुरंधर धीर धरि ।
बचन अमिअँ जनु बोरि देत उचित उत्तर सबहि ॥ १७६ ॥

मासपारायण, अठारहवाँ विश्राम

मोहि उपदेसु दीन्ह गुर नीका । प्रजा सचिव संमत सबही का ॥
मातु उचित धरि आयसु दीन्हा । अवसि सीस धरि चाहउँ कीन्हा ॥
गुर पितु मातु स्वामि हित बानी । सुनि मन मुदित करिअ भलि जानी ॥
उचित कि अनुचित किऐँ बिचारू । धरमु जाइ सिर पातक भारू ॥
तुम्ह तौ देहु सरल सिख सोई । जो आचरत मोर भल होई ॥
जद्यपि यह समुझत हउँ नीकें । तदपि होत परितोषु न जी कें ॥
अब तुम्ह बिनय मोरि सुनि लेहु । मोहि अनुहरत सिखावनु देहु ॥
ऊतरु देउँ छमब अपराधू । दुखित दोष गुन गनहिं न साधू ॥

दो. पितु सुरपुर सिय रामु बन करन कहहु मोहि राजु ।
एहि तें जानहु मोर हित कै आपन बड़ काजु ॥ १७७ ॥

हित हमार सियपति सेवकाई । सो हरि लीन्ह मातु कुटिलाई ॥
मैं अनुमानि दीख मन माहीं । आन उपायँ मोर हित नाहीं ॥
सोक समाजु राजु केहि लेखें । लखन राम सिय बिनु पद देखें ॥
बादि बसन बिनु भूषन भारू । बादि बिरति बिनु ब्रह्म बिचारू ॥
सरुज सरीर बादि बहु भोगा । बिनु हरिभगति जायँ जप जोगा ॥
जायँ जीव बिनु देह सुहाई । बादि मोर सबु बिनु रघुराई ॥
जाउँ राम पहिं आयसु देहु । एकहिं आँक मोर हित एहु ॥
मोहि नृप करि भल आपन चहहु । सोउ सनेह जड़ता बस कहहु ॥

दो. कैकेई सुअ कुटिलमति राम बिमुख गतलाज ।
तुम्ह चाहत सुखु मोहबस मोहि से अधम कें राज ॥ १७८ ॥

कहउँ साँचु सब सुनि पतिआहु । चाहिअ धरमसील नरनाहु ॥
मोहि राजु हठि देइहु जबहीं । रसा रसातल जाइहि तबहीं ॥
मोहि समान को पाप निवासू । जेहि लगि सीय राम बनबासू ॥

रायँ राम कहँ काननु दीन्हा । बिछुरत गमनु अमरपुर कीन्हा ॥
 मैं सठु सब अनरथ कर हेतू । बैठ बात सब सुनउँ सचेतू ॥
 बिनु रघुवीर बिलोकि अबासू । रहे प्रान सहि जग उपहासू ॥
 राम पुनीत बिषय रस रूखे । लोलुप भूमि भोग के भूखे ॥
 कहँ लागि कहौ हृदय कठिनाई । निदरि कुलिसु जेहिं लही बड़ाई ॥

दो. कारन तें कारजु कठिन होइ दोसु नहि मोर ।
 कुलिस अस्थि तें उपल तें लोह कराल कठोर ॥ १७९ ॥

कैकेई भव तनु अनुरागे । पाँवर प्रान अघाइ अभागे ॥
 जौ प्रिय बिरहँ प्रान प्रिय लागे । देखब सुनब बहुत अब आगे ॥
 लखन राम सिय कहँ बनू दीन्हा । पठइ अमरपुर पति हित कीन्हा ॥
 लीन्ह बिधवपन अपजसु आपू । दीन्हेउ प्रजहि सोकु संतापू ॥
 मोहि दीन्ह सुखु सुजसु सुराजू । कीन्ह कैकेई सब कर काजू ॥
 एहि तें मोर काह अब नीका । तेहि पर देन कहहु तुम्ह टीका ॥
 कैकेई जठर जनमि जग माहीं । यह मोहि कहँ कछु अनुचित नाहीं ॥
 मोरि बात सब बिधिहिं बनाई । प्रजा पाँच कत करहु सहाई ॥

दो. ग्रह ग्रहीत पुनि बात बस तेहि पुनि बीछी मार ।
 तेहि पिआइअ बारुनी कहहु काह उपचार ॥ १८० ॥

कैकेइ सुअन जोगु जग जोई । चतुर बिरचि दीन्ह मोहि सोई ॥
 दसरथ तनय राम लघु भाई । दीन्ह मोहि बिधि वादि बड़ाई ॥
 तुम्ह सब कहहु कदावन टीका । राय रजायसु सब कहँ नीका ॥
 उतरु देउँ केहि बिधि केहि केही । कहहु सुखेन जथा रुचि जेही ॥
 मोहि कुमातु समेत बिहाई । कहहु कहिहि के कीन्ह भलाई ॥
 मो बिनु को सचराचर माहीं । जेहि सिय रामु प्रानप्रिय नाहीं ॥
 परम हानि सब कहँ बड़ लाहू । अदिनु मोर नहि दूषन काहू ॥
 संसय सील प्रेम बस अहहू । सबुइ उचित सब जो कछु कहहू ॥

दो. राम मातु सुठि सरलचित मो पर प्रेमु बिसेषि ।
 कहइ सुभाय सनेह बस मोरि दीनता देखि ॥ १८१ ॥

गुर बिबेक सागर जगु जाना । जिन्हहि बिस्व कर बदर समाना ॥
 मो कहँ तिलक साज सज सोऊ । भाँ बिधि बिमुख बिमुख सबु कोऊ ॥
 परिहरि रामु सीय जग माहीं । कोउ न कहिहि मोर मत नाहीं ॥
 सो मैं सुनब सहब सुखु मानी । अंतहुँ कीच तहाँ जहँ पानी ॥
 डरु न मोहि जग कहिहि कि पोचू । परलोकहु कर नाहिन सोचू ॥
 एकइ उर बस दुसह दवारी । मोहि लागि भे सिय रामु दुखारी ॥
 जीवन लाहु लखन भल पावा । सबु तजि राम चरन मनु लावा ॥
 मोर जनम रघुबर बन लागी । झूठ काह पछिताउँ अभागी ॥

दो. आपनि दारुन दीनता कहउँ सबहि सिरु नाइ ।
 देखें बिनु रघुनाथ पद जिय कै जरनि न जाइ ॥ १८२ ॥

आन उपाउ मोहि नहि सूझा । को जिय कै रघुबर बिनु बूझा ॥

एकहिं आँक इहइ मन माहीं । प्रातकाल चलिहउँ प्रभु पाहीं ॥
 जद्यपि मैं अनभल अपराधी । भै मोहि कारन सकल उपाधी ॥
 तदपि सरन सनमुख मोहि देखी । छमि सब करिहहिं कृपा बिसेषी ॥
 सील सकुच सुठि सरल सुभाऊ । कृपा सनेह सदन रघुराऊ ॥
 अरिहुक अनभल कीन्ह न रामा । मैं सिसु सेवक जद्यपि बामा ॥
 तुम्ह पै पाँच मोर भल मानी । आयसु आसिष देहु सुबानी ॥
 जेहिं सुनि बिनय मोहि जनु जानी । आवहिं बहुरि रामु रजधानी ॥

दो. जद्यपि जनमु कुमातु तें मैं सठु सदा सदोस ।
 आपन जानि न त्यागिहहिं मोहि रघुवीर भरोस ॥ १८३ ॥

भरत बचन सब कहँ प्रिय लागे । राम सनेह सुधाँ जनु पागे ॥
 लोग बियोग बिषम बिष दागे । मंत्र सबीज सुनत जनु जागे ॥
 मातु सचिव गुर पुर नर नारी । सकल सनेहँ बिकल भए भारी ॥
 भरतहि कहहि सराहि सराही । राम प्रेम मूरति तनु आही ॥
 तात भरत अस काहे न कहहू । प्रान समान राम प्रिय अहहू ॥
 जो पावरु अपनी जड़ताई । तुम्हहि सुगाइ मातु कुटिलाई ॥
 सो सठु कोटिक पुरुष समेता । बसिहि कलप सत नरक निकेता ॥
 अहि अघ अवगुन नहि मनि गहई । हरइ गरल दुख दारिद दहई ॥

दो. अवसि चलिअ बन रामु जहँ भरत मंत्रु भल कीन्ह ।
 सोक सिंधु बूड़त सबहि तुम्ह अवलंबनु दीन्ह ॥ १८४ ॥

भा सब के मन मोदु न थोरा । जनु घन धुनि सुनि चातक मोरा ॥
 चलत प्रात लखि निरनउ नीके । भरतु प्रानप्रिय भे सबही के ॥
 मुनिहि बंदि भरतहि सिरु नाई । चले सकल घर बिदा कराई ॥
 धन्य भरत जीवनु जग माहीं । सीलु सनेहु सराहत जाहीं ॥
 कहहि परसपर भा बड़ काजू । सकल चलै कर साजहिं साजू ॥
 जेहि राखहिं रहु घर रखवारी । सो जानइ जनु गरदनि मारी ॥
 कोउ कह रहन कहिअ नहिं काहू । को न चहइ जग जीवन लाहू ॥

दो. जरउ सो संपति सदन सुखु सुहद मातु पितु भाइ ।
 सनमुख होत जो राम पद करै न सहस सहाइ ॥ १८५ ॥

घर घर साजहिं बाहन नाना । हरषु हृदयँ परभात पयाना ॥
 भरत जाइ घर कीन्ह बिचारू । नगरु बाजि गज भवन भँडारू ॥
 संपति सब रघुपति कै आही । जौ बिनु जतन चलौ तजि ताही ॥
 तौ परिनाम न मोरि भलाई । पाप सिरोमनि साईं दोहाई ॥
 करइ स्वामि हित सेवकु सोई । दूषन कोटि देइ किन कोई ॥
 अस बिचारि सुचि सेवक बोले । जे सपनेहुँ निज धरम न डोले ॥
 कहि सबु मरमु धरमु भल भाषा । जो जेहि लायक सो तेहिं राखा ॥
 करि सबु जतनु राखि रखवारे । राम मातु पहिं भरतु सिधारे ॥

दो. आरत जननी जानि सब भरत सनेह सुजान ।
 कहेउ बनावन पालकीं सजन सुखासन जान ॥ १८६ ॥

चक्क चक्कि ज्जिमि पुर नर नारी । चहत प्रात उर आरत भारी ॥
जागत सब निसि भयउ बिहाना । भरत बोलाए सचिव सुजाना ॥
कहेउ लेहु सबु तिलक समाजू । बनहिं देब मुनि रामहिं राजू ॥
बेगि चलहु सुनि सचिव जोहारे । तुरत तुरग रथ नाग सँवारे ॥
अरुंधती अरु अगिनि समाऊ । रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराऊ ॥
विप्र बृंद चढ़ि बाहन नाना । चले सकल तप तेज निधाना ॥
नगर लोग सब सजि सजि जाना । चित्रकूट कहँ कीन्ह पयाना ॥
सिबिका सुभग न जाहिं बखानी । चढ़ि चढ़ि चलत भई सब रानी ॥

दो. सौँपि नगर सुचि सेवकनि सादर सकल चलाइ ।
सुमिरि राम सिय चरन तब चले भरत दोउ भाइ ॥ १८७ ॥

राम दरस बस सब नर नारी । जनु करि करिनि चले तकि बारी ॥
बन सिय रामु समुझि मन माहीं । सानुज भरत पयादेहिं जाहीं ॥
देखि सनेहु लोग अनुरागे । उतरि चले हय गय रथ त्यागे ॥
जाइ समीप राखि निज डोली । राम मातु मृदु बानी बोली ॥
तात चढ़हु रथ बलि महतारी । होइहि प्रिय परिवारु दुखारी ॥
तुम्हरे चलत चलिहि सबु लोगू । सकल सोक कूस नहिं मग जोगू ॥
सिर धरि बचन चरन सिरु नाई । रथ चढ़ि चलत भए दोउ भाई ॥
तमसा प्रथम दिवस करि बासू । दूसर गोमति तीर निवासू ॥

दो. पय अहार फल असन एक निसि भोजन एक लोग ।
करत राम हित नेम व्रत परिहरि भूषन भोग ॥ १८८ ॥

सई तीर बसि चले बिहाने । संगबेरपुर सब निअराने ॥
समाचार सब सुने निषादा । हृदयँ बिचार करइ सबिषादा ॥
कारन कवन भरतु बन जाहीं । है कछु कपट भाउ मन माहीं ॥
जौँ पै जियँ न होति कुटिलाई । तौ कत लीन्ह संग कटकाई ॥
जानहिं सानुज रामहि मारी । करउँ अकंटक राजु सुखारी ॥
भरत न राजनीति उर आनी । तब कलंकु अब जीवन हानी ॥
सकल सुरासुर जुरहिं जुझारा । रामहि समर न जीतनिहारा ॥
का आचरजु भरतु अस करहीं । नहिं बिष बेलि अमिअ फल फरहीं ॥

दो. अस बिचारि गुहँ ग्याति सन कहेउ सजग सब होहु ।
हथवाँसहु बोरहु तरनि कीजिअ घाटारोहु ॥ १८९ ॥

होहु सँजोइल रोकहु घाटा । ठाटहु सकल मरै के ठाटा ॥
सनमुख लोह भरत सन लेऊँ । जिअत न सुरसरि उतरन देऊँ ॥
समर मरनु पुनि सुरसरि तीरा । राम काजु छनभंगु सरीरा ॥
भरत भाइ नृपु मै जन नीचू । बड़े भाग असि पाइअ मीचू ॥
स्वामि काज करिहउँ रन रारी । जस धवलिहउँ भुवन दस चारी ॥
तजउँ प्रान रघुनाथ निहोरे । दुहँ हाथ मुद मोदक मोरे ॥
साधु समाज न जाकर लेखा । राम भगत महुँ जासु न रेखा ॥
जायँ जिअत जग सो महि भारू । जननी जौवन बिटप कुठारू ॥

दो. बिगत बिषाद निषादपति सबहि बड़ाइ उछाहु ।

सुमिरि राम मागेउ तुरत तरकस धनुष सनाहु ॥ १९० ॥

बेगहु भाइहु सजहु सँजोऊ । सुनि रजाइ कदराइ न कोऊ ॥
भलेहिं नाथ सब कहहिं सहरषा । एकहिं एक बड़ावइ करषा ॥
चले निषाद जोहारि जोहारी । सूर सकल रन रूचइ रारी ॥
सुमिरि राम पद पंकज पनहीं । भाथी बाँधि चढ़ाइन्हि धनहीं ॥
अँगरी पहिरि कूँडि सिर धरहीं । फरसा बाँस सेल सम करहीं ॥
एक कुसल अति ओड़न खाँडे । कूदहि गगन मनहुँ छिति छाँडे ॥
निज निज साजु समाजु बनाई । गुह राउतहि जोहारे जाई ॥
देखि सुभट सब लायक जाने । लै लै नाम सकल सनमाने ॥

दो. भाइहु लावहु धोख जनि आजु काज बड़ मोहि ।
सुनि सरोष बोले सुभट बीर अधीर न होहि ॥ १९१ ॥

राम प्रताप नाथ बल तोरे । करहिं कटकु विनु भट विनु घोरे ॥
जीवत पाउ न पाछें धरहीं । रुंड मुंडमय मेदिनि करहीं ॥
दीख निषादनाथ भल टोलू । कहेउ बजाउ जुझाऊ ढोलू ॥
एतना कहत छीक भइ बाँए । कहेउ सगुनिअन्ह खेत सुहाए ॥
बूढु एकु कह सगुन बिचारी । भरतहि मिलिअ न होइहि रारी ॥
रामहि भरतु मनावन जाहीं । सगुन कहइ अस बिग्रहु नाही ॥
सुनि गुह कहइ नीक कह बूढा । सहसा करि पछिताहिं बिमूढा ॥
भरत सुभाउ सीलु विनु बूझें । बड़ि हित हानि जानि विनु जूझें ॥

दो. गहहु घाट भट समिटि सब लेउँ मरम मिलि जाइ ।
बूझि मित्र अरि मध्य गति तस तब करिहउँ आइ ॥ १९२ ॥

लखन सनेहु सुभायँ सुहाएँ । बैरु प्रीति नहिं दुरइँ दुराएँ ॥
अस कहि भेंट सँजोवन लागे । कंद मूल फल खग मृग मागे ॥
मीन पीन पाठीन पुराने । भरि भरि भार कहारन्ह आने ॥
मिलन साजु सजि मिलन सिधाए । मंगल मूल सगुन सुभ पाए ॥
देखि दूरि तें कहि निज नामू । कीन्ह मुनीसहि दंड प्रनामू ॥
जानि रामप्रिय दीन्हि असीसा । भरतहि कहेउ बुझाइ मुनीसा ॥
राम सखा सुनि संदनु त्यागा । चले उतरि उमगत अनुरागा ॥
गाउँ जाति गुहँ नाउँ सुनाई । कीन्ह जोहारु माथ महि लाई ॥

दो. करत दंडवत देखि तेहि भरत लीन्ह उर लाइ ।
मनहुँ लखन सन भेंट भइ प्रेम न हृदयँ समाइ ॥ १९३ ॥

भेंटत भरतु ताहि अति प्रीती । लोग सिहाहिं प्रेम कै रीती ॥
धन्य धन्य धुनि मंगल मूला । सुर सराहि तेहि बरिसहिं फूला ॥
लोक बेद सब भाँतिहिं नीचा । जासु छाँह छुइ लेइअ सीचा ॥
तेहि भरि अंक राम लघु भ्राता । मिलत पुलक परिपूरित गाता ॥
राम राम कहि जे जमुहाहीं । तिन्हहि न पाप पुंज समुहाहीं ॥
यह तौ राम लाइ उर लीन्हा । कुल समेत जगु पावन कीन्हा ॥
करमनास जलु सुरसरि परई । तेहि को कहहु सीस नहिं धरई ॥
उलटा नामु जपत जगु जाना । बालमीकि भए ब्रह्म समाना ॥

दो. स्वपच सबर खस जमन जड़ पावरँ कोल किरात ।
रामु कहत पावन परम होत भुवन बिख्यात ॥ १९४ ॥

नहिं अचिरजु जुग जुग चलि आई । केहि न दीन्ह रघुवीर बड़ाई ॥
राम नाम महिमा सुर कहही । सुनि सुनि अवधलोग सुखु लहहीं ॥
रामसखहि मिलि भरत सप्रेमा । पूँछी कुसल सुमंगल खेमा ॥
देखि भरत कर सील सनेहू । भा निषाद तेहि समय बिदेहू ॥
सकुच सनेहु मोदु मन बाढा । भरतहि चितवत एकटक ठाढा ॥
धरि धीरजु पद बंदि बहोरी । बिनय सप्रेम करत कर जोरी ॥
कुसल मूल पद पंकज पेखी । मैं तिहुँ काल कुसल निज लेखी ॥
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरें । सहित कोटि कुल मंगल मोरें ॥

दो. समुझि मोरि करतूति कुलु प्रभु महिमा जियँ जोड़ ।
जो न भजइ रघुवीर पद जग बिधि बंचित सोड़ ॥ १९५ ॥

कपटी कायर कुमति कुजाती । लोक बेद बाहेर सब भाँती ॥
राम कीन्ह आपन जबही तें । भयउँ भुवन भूषन तबही तें ॥
देखि प्रीति सुनि बिनय सुहाई । मिलेउ बहोरि भरत लघु भाई ॥
कहि निषाद निज नाम सुबानी । सादर सकल जोहारी रानी ॥
जानि लखन सम देहिं असीसा । जिअहु सुखी सय लाख बरीसा ॥
निरखि निषादु नगर नर नारी । भए सुखी जनु लखनु निहारी ॥
कहहिं लहेउ एहिं जीवन लाहू । भेटेउ रामभद्र भरि बाहू ॥
सुनि निषादु निज भाग बड़ाई । प्रमुदित मन लइ चलेउ लेवाई ॥

दो. सनकारे सेवक सकल चले स्वामि रुख पाइ ।
घर तरु तर सर बाग बन बास बनाएन्हि जाइ ॥ १९६ ॥

संगवेरपुर भरत दीख जब । भे सनेहँ सब अंग सिथिल तब ॥
सोहत दिऐँ निषादहि लागू । जनु तनु धरें बिनय अनुरागू ॥
एहि बिधि भरत सेनु सबु संग । दीखि जाइ जग पावनि गंगा ॥
रामघाट कहँ कीन्ह प्रनामू । भा मनु मगनु मिले जनु रामू ॥
करहिं प्रनाम नगर नर नारी । मुदित ब्रह्ममय बारि निहारी ॥
करि मज्जनु मागहिं कर जोरी । रामचंद्र पद प्रीति न थोरी ॥
भरत कहेउ सुरसरि तव रेनू । सकल सुखद सेवक सुरधेनू ॥
जोरि पानि बर मागउँ एहू । सीय राम पद सहज सनेहू ॥

दो. एहि बिधि मज्जनु भरतु करि गुर अनुसासन पाइ ।
मातु नहानी जानि सब डेरा चले लवाइ ॥ १९७ ॥

जहँ तहँ लोगन्ह डेरा कीन्हा । भरत सोधु सबही कर लीन्हा ॥
सुर सेवा करि आयसु पाई । राम मातु पहिं गे दोउ भाई ॥
चरन चाँपि कहि कहि मूढु बानी । जननी सकल भरत सनमानी ॥
भाइहि सौँपि मातु सेवकाई । आपु निषादहि लीन्ह बोलाई ॥
चले सखा कर सौँ कर जोरें । सिथिल सरीर सनेह न थोरें ॥
पूँछत सखहि सो ठाउँ देखाऊ । नेकु नयन मन जरनि जुड़ाऊ ॥

जहँ सिय रामु लखनु निसि सोए । कहत भरे जल लोचन कोए ॥
भरत बचन सुनि भयउ बिषादू । तुरत तहाँ लइ गयउ निषादू ॥

दो. जहँ सिंसुपा पुनीत तर रघुबर किय विश्रामु ।
अति सनेहँ सादर भरत कीन्हेउ दंड प्रनामु ॥ १९८ ॥

कुस साँथरीलूनिहारि सुहाई । कीन्ह प्रनामु प्रदच्छिन जाई ॥
चरन रेख रज आँखिन्ह लाई । बनइ न कहत प्रीति अधिकाई ॥
कनक बिंदु दुइ चारिक देखे । राखे सीस सीय सम लेखे ॥
सजल बिलोचन हृदयँ गलानी । कहत सखा सन बचन सुबानी ॥
श्रीहत सीय बिरहँ दुतिहीना । जथा अवध नर नारि बिलीना ॥
पिता जनक देउँ पटतर केही । करतल भोगु जोगु जग जेही ॥
ससुर भानुकुल भानु भुआलू । जेहि सिहात अमरावतिपालू ॥
प्राननाथु रघुनाथ गोसाई । जो बड़ होत सो राम बड़ाई ॥

दो. पति देवता सुतीय मनि सीय साँथरी देखि ।
बिहरत हृदउ न हहरि हर पवि तें कठिन बिसेषि ॥ १९९ ॥

लालन जोगु लखन लघु लोने । भे न भाइ अस अहहिं न होने ॥
पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारे । सिय रघुबरहि प्रानपिआरे ॥
मूढु मूरति सुकुमार सुभाऊ । तात बाउ तन लाग न काऊ ॥
ते बन सहहिं बिपति सब भाँती । निदरे कोटि कुलिस एहिं छाती ॥
राम जनमि जगु कीन्ह उजागर । रूप सील सुख सब गुन सागर ॥
पुरजन परिजन गुर पितु माता । राम सुभाउ सबहि सुखदाता ॥
बैरिउ राम बड़ाई करही । बोलनि मिलनि बिनय मन हरही ॥
सारद कोटि कोटि सत सेवा । करि न सकहिं प्रभु गुन गन लेखा ॥

दो. सुखस्वरुप रघुबंसमनि मंगल मोद निधान ।
ते सोवत कुस डसि महि बिधि गति अति बलवान ॥ २०० ॥

राम सुना दुखु कान न काऊ । जीवनतरु जिमि जोगवइ राऊ ॥
पलक नयन फनि मनि जेहि भाँती । जोगवहिं जननि सकल दिन राती ॥
ते अब फिरत बिपिन पदचारी । कंद मूल फल फूल अहारी ॥
धिग कैकेई अमंगल मूला । भइसि प्रान प्रियतम प्रतिकूला ॥
मैं धिग धिग अघ उदधि अभागी । सबु उतपातु भयउ जेहि लागी ॥
कुल कलंकु करि सृजेउ बिधाताँ । साइँदोह मोहि कीन्ह कुमाताँ ॥
सुनि सप्रेम समुझाव निषादू । नाथ करिअ कत बादि बिषादू ॥
राम तुम्हहि प्रिय तुम्ह प्रिय रामहि । यह निरजोसु दोसु बिधि बामहि ॥

छं. बिधि बाम की करनी कठिन जेहिं मातु कीन्ही बावरी ।
तेहि राति पुनि पुनि करहिं प्रभु सादर सरहना रावरी ॥
तुलसी न तुम्ह सो राम प्रीतमु कहतु हौँ सौहें किऐँ ।
परिनाम मंगल जानि अपने आनिए धीरजु हिऐँ ॥

सो. अंतरजामी रामु सकुच सप्रेम कृपायतन ।
चलिअ करिअ विश्रामु यह बिचारि दूढ आनि मन ॥ २०१ ॥

सखा बचन सुनि उर धरि धीरा। बास चले सुमिरत रघुबीरा ॥
 यह सुधि पाइ नगर नर नारी। चले विलोकन आरत भारी ॥
 परदखिना करि करहिं प्रनामा। देहिं कैकइहि खोरि निकामा ॥
 भरी भरि बारि विलोचन लेहीं। वाम विधाताहि दूषन देहीं ॥
 एक सराहहिं भरत सनेहू। कोउ कह नृपति निबाहेउ नेहू ॥
 निंदहिं आपु सराहि निषादहि। को कहि सकइ विमोह विषादहि ॥
 एहि बिधि राति लोगु सबु जागा। भा भिनुसार गुदारा लागा ॥
 गुरहि सुनावँ चढ़ाइ सुहाई। नई नाव सब मातु चढ़ाई ॥
 दंड चारि महँ भा सबु पारा। उतरि भरत तब सबहि सँभारा ॥

दो. प्रातक्रिया करि मातु पद बंदि गुरहि सिरु नाइ।
 आगें किए निषाद गन दीन्हेउ कटकु चलाइ ॥ २०२ ॥

कियउ निषादनाथु अगुआई। मातु पालकी सकल चलाई ॥
 साथ बोलाइ भाइ लघु दीन्हा। विप्रन्ह सहित गवनु गुर कीन्हा ॥
 आपु सुरसरिहि कीन्ह प्रनामू। सुमिरे लखन सहित सिय रामू ॥
 गवने भरत पयोदेहिं पाए। कोतल संग जाहिं डोरिआए ॥
 कहहिं सुसेवक बारहिं बारा। होइअ नाथ अस्व असवारा ॥
 रामु पयोदेहि पायँ सिधाए। हम कहँ रथ गज बाजि बनाए ॥
 सिर भर जाउँ उचित अस मोरा। सब तें सेवक धरमु कठोरा ॥
 देखि भरत गति सुनि मृदु बानी। सब सेवक गन गरहिं गलानी ॥

दो. भरत तीसरे पहर कहँ कीन्ह प्रबेसु प्रयाग।
 कहत राम सिय राम सिय उमगि उमगि अनुराग ॥ २०३ ॥

झलका झलकत पायन्ह कैसैं। पंकज कोस ओस कन जैसैं ॥
 भरत पयादेहिं आए आजू। भयउ दुखित सुनि सकल समाजू ॥
 खबरि लीन्ह सब लोग नहाए। कीन्ह प्रनामु त्रिवेनिहिं आए ॥
 सबिधि सितासित नीर नहाने। दिए दान महिसुर सनमाने ॥
 देखत स्यामल धवल हलोरे। पुलकि सरीर भरत कर जोरे ॥
 सकल काम प्रद तीरथराऊ। बेद विदित जग प्रगट प्रभाऊ ॥
 मागउँ भीख त्यागि निज धरमू। आरत काह न करइ कुकरमू ॥
 अस जियँ जानि सुजान सुदानी। सफल करहिं जग जाचक बानी ॥

दो. अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहउँ निरबान।
 जनम जनम रति राम पद यह बरदानु न आन ॥ २०४ ॥

जानहुँ रामु कुटिल करि मोही। लोग कहउ गुर साहिब द्रोही ॥
 सीता राम चरन रति मोरें। अनुदिन बढ़उ अनुग्रह तोरें ॥
 जलदु जनम भरि सुरति बिसारउ। जाचत जलु पबि पाहन डारउ ॥
 चातकु रटनि घटें घटि जाई। बढ़े प्रेमु सब भाँति भलाई ॥
 कनकहिं बान चढ़इ जिमि दाहें। तिमि प्रियतम पद नेम निबाहें ॥
 भरत बचन सुनि माझ त्रिवेनी। भइ मृदु बानि सुमंगल देनी ॥
 तात भरत तुम्ह सब बिधि साधू। राम चरन अनुराग अगाधू ॥
 बाद गलानि करहु मन माहीं। तुम्ह सम रामहि कोउ प्रिय नाहीं ॥

दो. तनु पुलकेउ हियँ हरषु सुनि बेनि बचन अनुकूल।
 भरत धन्य कहि धन्य सुर हरषित बरषहिं फूल ॥ २०५ ॥

प्रमुदित तीरथराज निवासी। बैखानस बटु गृही उदासी ॥
 कहहिं परसपर मिलि दस पाँचा। भरत सनेह सीलु सुचि साँचा ॥
 सुनत राम गुन ग्राम सुहाए। भरद्वाज मुनिबर पहिं आए ॥
 दंड प्रनामु करत मुनि देखे। मूरतिमंत भाग्य निज लेखे ॥
 धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हे। दीन्हि असीस कृतारथ कीन्हे ॥
 आसनु दीन्ह नाइ सिरु बैठे। चहत सकुच गृहँ जनु भजि पैठे ॥
 मुनि पूँछव कछु यह बड़ सोचू। बोले रिषि लखि सीलु सँकोचू ॥
 सुनहु भरत हम सब सुधि पाई। बिधि करतब पर किछु न बसाई ॥

दो. तुम्ह गलानि जियँ जनि करहु समुझी मातु करतूति।
 तात कैकइहि दोसु नहिं गई गिरा मति धूति ॥ २०६ ॥

यहउ कहत भल कहिहि न कोऊ। लोको बेद बुध संमत दोऊ ॥
 तात तुम्हार बिमल जसु गाई। पाइहि लोकउ बेदु बड़ाई ॥
 लोक बेद संमत सबु कहई। जेहि पितु देइ राजु सो लहई ॥
 राउ सत्यव्रत तुम्हहि बोलाई। देत राजु सुखु धरमु बड़ाई ॥
 राम गवनु बन अनरथ मूला। जो सुनि सकल विस्व भइ सूला ॥
 सो भावी बस रानि अयानी। करि कुचालि अंतहुँ पछितानी ॥
 तहँउ तुम्हार अलप अपराधू। कहै सो अधम अयान असाधू ॥
 करतेहु राजु त तुम्हहि न दोषू। रामहि होत सुनत संतोषू ॥

दो. अब अति कीन्हेहु भरत भल तुम्हहि उचित मत एहु।
 सकल सुमंगल मूल जग रघुबर चरन सनेहु ॥ २०७ ॥

सो तुम्हार धनु जीवनु प्राना। भूरिभाग को तुम्हहि समाना ॥
 यह तम्हार आचरजु न ताता। दसरथ सुअन राम प्रिय भ्राता ॥
 सुनहु भरत रघुबर मन माहीं। पेम पावु तुम्ह सम कोउ नाहीं ॥
 लखन राम सीतहि अति प्रीती। निसि सब तुम्हहि सराहत बीती ॥
 जाना मरमु नहात प्रयागा। मगन होहिं तुम्हरेँ अनुरागा ॥
 तुम्ह पर अस सनेहु रघुबर केँ। सुख जीवन जग जस जड़ नर केँ ॥
 यह न अधिक रघुबीर बड़ाई। प्रनत कुटुंब पाल रघुराई ॥
 तुम्ह तौ भरत मोर मत एहु। धरें देह जनु राम सनेहु ॥

दो. तुम्ह कहँ भरत कलंक यह हम सब कहँ उपदेसु।
 राम भगति रस सिद्धि हित भा यह समउ गनेसु ॥ २०८ ॥

नव बिधु बिमल तात जसु तोरा। रघुबर किंकर कुमुद चकोरा ॥
 उदित सदा अँधइहि कबहुँ ना। घटिहि न जग नभ दिन दिन दूना ॥
 कोक तिलोक प्रीति अति करिही। प्रभु प्रताप रवि छबिहि न हरिही ॥
 निसि दिन सुखद सदा सब काहू। ग्रसिहि न कैकइ करतबु राहू ॥
 पूरन राम सुपेम पियूषा। गुर अवमान दोष नहिं दूषा ॥
 राम भगत अब अमिअँ अघाहूँ। कीन्हेहु सुलभ सुधा बसुधाहूँ ॥

भूप भगीरथ सुरसरि आनी । सुमिरत सकल सुमंगल खानी ॥
दसरथ गुन गन बरनि न जाहीं । अधिकु कहा जेहि सम जग नाही ॥

दो. जासु सनेह सकोच बस राम प्रगट भए आइ ॥
जे हर हिय नयननि कबहुँ निरखे नही अघाइ ॥ २०९ ॥

कीरति बिधु तुम्ह कीन्ह अनूपा । जहँ बस राम पेम मृगरूपा ॥
तात गलानि करहु जियँ जाएँ । डरहु दरिद्रहि पारसु पाएँ ॥ ॥
सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं । उदासीन तापस बन रहहीं ॥
सब साधन कर सुफल सुहावा । लखन राम सिय दरसनु पावा ॥
तेहि फल कर फलु दरस तुम्हारा । सहित पयाग सुभाग हमारा ॥
भरत धन्य तुम्ह जसु जगु जयऊ । कहि अस पेम मगन पुनि भयऊ ॥
सुनि मुनि बचन सभासद हरषे । साधु सराहि सुमन सुर बरषे ॥
धन्य धन्य धुनि गगन पयागा । सुनि सुनि भरतु मगन अनुरागा ॥

दो. पुलक गात हियँ रामु सिय सजल सरोरुह नैन ।
करि प्रनामु मुनि मंडलिहि बोले गदगद बैन ॥ २१० ॥

मुनि समाजु अरु तीरथराजू । साँचिहुँ सपथ अघाइ अकाजू ॥
एहिं थल जौ किछु कहिअ बनाई । एहिं सम अधिक न अघ अधमाई ॥
तुम्ह सर्वग्य कहउँ सतिभाऊ । उर अंतरजामी रघुराऊ ॥
मोहि न मातु करतब कर सोचू । नहिं दुखु जियँ जगु जानिहि पोचू ॥
नाहिन डरु बिगरिहि परलोक् । पितहु मरन कर मोहि न सोक् ॥
सुकृत सुजस भरि भुअन सुहाए । लछिमन राम सरिस सुत पाए ॥
राम बिरहँ तजि तनु छनभंगू । भूप सोच कर कवन प्रसंगू ॥
राम लखन सिय विनु पग पनहीं । करि मुनि बेष फिरहिं बन बनही ॥

दो. अजिन बसन फल असन महि सयन डसि कुस पात ।
बसि तरु तर नित सहत हिम आतप बरषा बात ॥ २११ ॥

एहि दुख दाहँ दहइ दिन छाती । भूख न बासर नीद न राती ॥
एहि कुरोग कर औषधु नाही । सोधेउँ सकल बिस्व मन माहीं ॥
मातु कुमत बढई अघ मूला । तेहिं हमार हित कीन्ह बँसूला ॥
कलि कुकाठ कर कीन्ह कुजंत्रु । गाड़ि अवधि पढ़ि कठिन कुमंत्रु ॥
मोहि लागि यहु कुठाटु तेहिं ठाटा । घालेसि सब जगु बारहबाटा ॥
मिटइ कुजोगु राम फिरि आएँ । बसइ अवध नहिं आन उपाएँ ॥
भरत बचन सुनि मुनि सुखु पाई । सबहिं कीन्ह बहु भाँति बड़ाई ॥
तात करहु जनि सोचु बिसेषी । सब दुखु मिटहि राम पग देखी ॥

दो. करि प्रबोध मुनिबर कहेउ अतिथि पेमप्रिय होहु ।
कंद मूल फल फूल हम देहिं लेहु करि छोहु ॥ २१२ ॥

सुनि मुनि बचन भरत हियँ सोचू । भयउ कुअवसर कठिन सँकोचू ॥
जानि गरुड गुर गिरा बहोरी । चरन बंदि बोले कर जोरी ॥
सिर धरि आयसु करिअ तुम्हारा । परम धरम यहु नाथ हमारा ॥
भरत बचन मुनिबर मन भाए । सुचि सेवक सिष निकट बोलाए ॥

चाहिए कीन्ह भरत पहुनाई । कंद मूल फल आनहु जाई ॥
भलेहीं नाथ कहि तिन्ह सिर नाए । प्रमुदित निज निज काज सिधाए ॥
मुनिहि सोच पाहुन बड़ नेवता । तसि पूजा चाहिअ जस देवता ॥
सुनि रिधि सिधि अनिमादिक आई । आयसु होइ सो करहिं गोसाई ॥

दो. राम बिरह ब्याकुल भरतु सानुज सहित समाज ।
पहुनाई करि हरहु श्रम कहा मुदित मुनिराज ॥ २१३ ॥

रिधि सिधि सिर धरि मुनिबर बानी । बड़भागिनि आपुहि अनुमानी ॥
कहहिं परसपर सिधि समुदाई । अतुलित अतिथि राम लघु भाई ॥
मुनि पद बंदि करिअ सोइ आजू । होइ सुखी सब राज समाजू ॥
अस कहि रचेउ रुचिर गृह नाना । जेहि बिलोकि बिलखाहिं बिमाना ॥
भोग बिभूति भूरि भरि राखे । देखत जिन्हहि अमर अभिलाषे ॥
दासी दास साजु सब लीन्हें । जोगवत रहहिं मनहि मनु दीन्हें ॥
सब समाजु सजि सिधि पल माहीं । जे सुख सुरपुर सपनेहुँ नाही ॥
प्रथमहिं बास दिए सब केही । सुंदर सुखद जथा रुचि जेही ॥

दो. बहुरि सपरिजन भरत कहुँ रिषि अस आयसु दीन्ह ।
विधि बिसमय दायकु बिभव मुनिबर तपबल कीन्ह ॥ २१४ ॥

मुनि प्रभाउ जब भरत बिलोका । सब लघु लगे लोकपति लोका ॥
सुख समाजु नहिं जाइ बखानी । देखत बिरति बिसारहीं ग्यानी ॥
आसन सयन सुबसन बिताना । बन बाटिका बिहग मृग नाना ॥
सुरभि फूल फल अमिअ समाना । बिमल जलासय बिबिध बिधाना ॥
असन पान सुच अमिअ अमी से । देखि लोग सकुचात जमी से ॥
सुर सुरभी सुरतरु सबही के । लखि अभिलाषु सुरेस सची के ॥
रितु बसंत बहु त्रिविध बयारी । सब कहँ सुलभ पदारथ चारी ॥
स्वक चंदन बनितादिक भोगा । देखि हरष बिसमय बस लोगा ॥

दो. संपत चकई भरतु चक मुनि आयस खेलवार ॥
तेहि निसि आश्रम पिंजरौं राखे भा भिनुसार ॥ २१५ ॥

मासपारायण, उन्नीसवाँ विश्राम
कीन्ह निमज्जनु तीरथराजा । नाइ मुनिहि सिर सहित समाजा ॥
रिषि आयसु असीस सिर राखी । करि दंडवत बिनय बहु भाषी ॥
पथ गति कुसल साथ सब लीन्हे । चले चित्रकूटहिं चितु दीन्हें ॥
रामसखा कर दीन्हें लागू । चलत देह धरि जनु अनुरागू ॥
नहिं पद त्रान सीस नहिं छाया । पेमु नेमु ब्रतु धरमु अमाया ॥
लखन राम सिय पंथ कहानी । पूँछत सखहि कहत मृदु बानी ॥
राम बास थल बिटप बिलोकें । उर अनुराग रहत नहिं रोकें ॥
दैखि दसा सुर बरिसहिं फूला । भइ मृदु महि मगु मंगल मूला ॥

दो. किएँ जाहिं छाया जलद सुखद बहइ बर बात ।
तस मगु भयउ न राम कहँ जस भा भरतहि जात ॥ २१६ ॥

जड़ चेतन मग जीव घनेरे । जे चितए प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे ॥

ते सब भए परम पद जोगू। भरत दरस मेटा भव रोगू ॥
 यह बड़ि बात भरत कइ नाहीं। सुमिरत जिनहि रामु मन माहीं ॥
 बारक राम कहत जग जेऊ। होत तरन तारन नर तेऊ ॥
 भरतु राम प्रिय पुनि लघु भ्राता। कस न होइ मगु मंगलदाता ॥
 सिद्ध साधु मुनिबर अस कहहीं। भरतहि निरखि हरषु हियँ लहहीं ॥
 देखि प्रभाउ सुरेसहि सोचू। जगु भल भलेहि पोच कहूँ पोचू ॥
 गुर सन कहेउ करिअ प्रभु सोई। रामहि भरतहि भेंट न होई ॥

दो. रामु सँकोची प्रेम बस भरत सपेम पयोधि।
 बनी बात बेगरन चहति करिअ जतनु छलु सोधि ॥ २१७ ॥

बचन सुनत सुरगुरु मुसकाने। सहसनयन बिनु लोचन जाने ॥
 मायापति सेवक सन माया। करइ त उलटि परइ सुरराया ॥
 तब किछु कीन्ह राम रुख जानी। अब कुचालि करि होइहि हानी ॥
 सुनु सुरेस रघुनाथ सुभाऊ। निज अपराध रिसाहिं न काऊ ॥
 जो अपराधु भगत कर करई। राम रोष पावक सो जरई ॥
 लोकहुँ बेद बिदित इतिहासा। यह महिमा जानहिं दुरबासा ॥
 भरत सरिस को राम सनेही। जगु जप राम रामु जप जेही ॥

दो. मनहुँ न आनिअ अमरपति रघुबर भगत अकाजु।
 अजसु लोक परलोक दुख दिन दिन सोक समाजु ॥ २१८ ॥

सुनु सुरेस उपदेसु हमारा। रामहि सेवकु परम पिआरा ॥
 मानत सुसु सेवक सेवकाई। सेवक बैर बैरु अधिकाई ॥
 जद्यपि सम नहिं राग न रोषू। गहहिं न पाप पूनु गुन दोषू ॥
 करम प्रधान बिस्व करि राखा। जो जस करइ सो तस फलु चाखा ॥
 तदपि करहिं सम बिषम बिहारा। भगत अभगत हृदय अनुसार ॥
 अगुन अलेप अमान एकरस। रामु सगुन भए भगत पेम बस ॥
 राम सदा सेवक रुचि राखी। बेद पुरान साधु सुर साखी ॥
 अस जियँ जानि तजहु कुटिलाई। करहु भरत पद प्रीति सुहाई ॥

दो. राम भगत परहित निरत पर दुख दुखी दयाल।
 भगत सिरोमनि भरत तें जनि डरपहु सुरपाल ॥ २१९ ॥

सत्यसंध प्रभु सुर हितकारी। भरत राम आयस अनुसारी ॥
 स्वारथ बिबस बिकल तुम्ह होहू। भरत दोसु नहिं राउर मोहू ॥
 सुनि सुरबर सुरगुर बर बानी। भा प्रमोदु मन मिटी गलानी ॥
 बरषि प्रसून हरषि सुरराऊ। लगे सराहन भरत सुभाऊ ॥
 एहि बिधि भरत चले मग जाहीं। दसा देखि मुनि सिद्ध सिहाहीं ॥
 जबहिं रामु कहि लेहिं उसासा। उमगत पेमु मनहुँ चहु पासा ॥
 द्रवहिं बचन सुनि कुलिस पषाना। पुरजन पेमु न जाइ बखाना ॥
 बीच बास करि जमुनिहिं आए। निरखि नीरु लोचन जल छाए ॥

दो. रघुबर बरन बिलोकि बर बारि समेत समाज।
 होत मगन बारिधि बिरह चढ़े बिबेक जहाज ॥ २२० ॥

जमुन तीर तेहि दिन करि बासू। भयउ समय सम सबहि सुपासू ॥
 रातहिं घाट घाट की तरनी। आई अगनित जाहिं न बरनी ॥
 प्रात पार भए एकहि खेवाँ। तोषे रामसखा की सेवाँ ॥
 चले नहाइ नदिहि सिर नाई। साथ निषादनाथ दोउ भाई ॥
 आगें मुनिबर बाहन आछें। राजसमाज जाइ सबु पाछें ॥
 तेहिं पाछें दोउ बंधु पयादें। भूषन बसन बेष सुठि सादें ॥
 सेवक सुहृद सचिवसुत साथ। सुमिरत लखनु सीय रघुनाथा ॥
 जहँ जहँ राम बास बिश्रामा। तहँ तहँ करहिं सप्रेम प्रनामा ॥

दो. मगबासी नर नारि सुनि धाम काम तजि धाइ।
 देखि सरूप सनेह सब मुदित जनम फलु पाइ ॥ २२१ ॥

कहहिं सपेम एक एक पाहीं। रामु लखनु सखि होहिं कि नाहीं ॥
 बय बपु बरन रूप सोइ आली। सीलु सनेहु सरिस सम चाली ॥
 बेषु न सो सखि सीय न संग। आगें अनी चली चतुरंगा ॥
 नहिं प्रसन्न मुख मानस खेदा। सखि संदेहु होइ एहिं भेदा ॥
 तासु तरक तियगन मन मानी। कहहिं सकल तेहि सम न सयानी ॥
 तेहि सराहि बानी फुरि पूजी। बोली मधुर बचन तिय दूजी ॥
 कहि सपेम सब कथाप्रसंगू। जेहि बिधि राम राज रस भंगू ॥
 भरतहि बहुरि सराहन लागी। सील सनेह सुभाय सुभागी ॥

दो. चलत पयादें खात फल पिता दीन्ह तजि राजु।
 जात मनावन रघुबरहि भरत सरिस को आजु ॥ २२२ ॥

भायप भगति भरत आचरनू। कहत सुनत दुख दूषन हरनू ॥
 जो कछु कहब थोर सखि सोई। राम बंधु अस काहे न होई ॥
 हम सब सानुज भरतहि देखें। भइन्ह धन्य जुबती जन लेखें ॥
 सुनि गुन देखि दसा पछितहीं। कैकइ जननि जोगु सुतु नाहीं ॥
 कोउ कह दूषनु रानिहि नाहिन। बिधि सबु कीन्ह हमहि जो दाहिन ॥
 कहँ हम लोक बेद बिधि हीनी। लघु तिय कुल करतूति मलीनी ॥
 बसहिं कुदेस कुगाँव कुबामा। कहँ यह दरसु पुन्य परिनामा ॥
 अस अनंदु अचिरिजु प्रति ग्रामा। जनु मरुभूमि कलपतरु जामा ॥

दो. भरत दरसु देखत खुलेउ मग लोगन्ह कर भागु।
 जनु सिंघलबासिन्ह भयउ बिधि बस सुलभ प्रयागु ॥ २२३ ॥

निज गुन सहित राम गुन गाथा। सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथा ॥
 तीरथ मुनि आश्रम सुरधामा। निरखि निमज्जहिं करहिं प्रनामा ॥
 मनहीं मन मागहिं बरु एहू। सीय राम पद पदुम सनेहू ॥
 मिलहिं किरात कोल बनबासी। बैखानस बटु जती उदासी ॥
 करि प्रनामू पूँछहिं जेहिं तेही। केहि बन लखनु रामु बैदेही ॥
 ते प्रभु समाचार सब कहहीं। भरतहि देखि जनम फलु लहहीं ॥
 जे जन कहहिं कुसल हम देखे। ते प्रिय राम लखन सम लेखे ॥
 एहि बिधि बूझत सबहि सुबानी। सुनत राम बनबास कहानी ॥

दो. तेहि बासर बसि प्रातहीं चले सुमिरि रघुनाथ।

राम दरस की लालसा भरत सरिस सब साथ ॥ २२४ ॥

मंगल सगुन होहिं सब काहू। फरकहिं सुखद बिलोचन बाहू ॥
भरतहि सहित समाज उछाहू। मिलिहहिं रामु मिटहि दुख दाहू ॥
करत मनोरथ जस जियँ जाके। जाहिं सनेह सुराँ सब छुके ॥
सिधिल अंग पग मग डगि डोलहिं। बिहवल बचन पेम बस बोलहिं ॥
रामसखाँ तेहि समय देखावा। सैल सिरोमनि सहज सुहावा ॥
जासु समीप सरित पय तीरा। सीय समेत बसहिं दोउ बीरा ॥
देखि करहिं सब दंड प्रनामा। कहि जय जानकि जीवन रामा ॥
प्रेम मगन अस राज समाजू। जनु फिरि अवध चले रघुराजू ॥

दो. भरत प्रेमु तेहि समय जस तस कहि सकइ न सेषु।
कबिहिं अगम जिमि ब्रह्मसुख अह मम मलिन जनेषु ॥ २२५ ॥

सकल सनेह सिधिल रघुबर के। गए कोस दुइ दिनकर ढरके ॥
जलु थलु देखि बसे निंसि बीते। कीन्ह गवन रघुनाथ पिरीते ॥
उहाँ रामु रजनी अवसेषा। जागे सीयँ सपन अस देखा ॥
सहित समाज भरत जनु आए। नाथ बियोग ताप तन ताए ॥
सकल मलिन मन दीन दुखारी। देखी सासु आन अनुहारी ॥
सुनि सिय सपन भरे जल लोचन। भए सोचबस सोच विमोचन ॥
लखन सपन यह नीक न होई। कठिन कुचाह सुनाइहि कोई ॥
अस कहि बंधु समेत नहाने। पूजि पुरारि साधु सनमाने ॥

छं. सनमानि सुर मुनि बंदि बैठे उत्तर दिसि देखत भए।
नभ धूरि खग मृग भूरि भागे बिकल प्रभु आश्रम गए ॥
तुलसी उठे अवलोकि कारनु काह चित सचकित रहे।
सब समाचार किरात कोलन्हि आइ तेहि अवसर कहे ॥

दो. सुनत सुमंगल बैन मन प्रमोद तन पुलक भर।
सरद सरोरुह नैन तुलसी भरे सनेह जल ॥ २२६ ॥

बहुरि सोचबस भे सियरवन्। कारन कवन भरत आगवन् ॥
एक आइ अस कहा बहोरी। सेन संग चतुरंग न थोरी ॥
सो सुनि रामहि भा अति सोचू। इत पितु बच इत बंधु सकोचू ॥
भरत सुभाउ समुझि मन माहीं। प्रभु चित हित थिति पावत नाही ॥
समाधान तब भा यह जाने। भरतु कहे महुँ साधु सयाने ॥
लखन लखेउ प्रभु हृदयँ खभारू। कहत समय सम नीति विचारू ॥
बिनु पूँछ कछु कहउँ गोसाई। सेवकु समयँ न ढीठ ढिठाई ॥
तुम्ह सर्वग्य सिरोमनि स्वामी। आपनि समुझि कहउँ अनुगामी ॥

दो. नाथ सुहृद सुठि सरल चित सील सनेह निधान ॥
सब पर प्रीति प्रतीति जियँ जानिअ आपु समान ॥ २२७ ॥

बिषई जीव पाइ प्रभुताई। मूढ मोह बस होहिं जनाई ॥
भरतु नीति रत साधु सुजाना। प्रभु पद प्रेम सकल जगु जाना ॥
तेऊ आजु राम पदु पाई। चले धरम मरजाद मेटाई ॥

कुटिल कुबंध कुअवसरु ताकी। जानि राम बनवास एकाकी ॥
करि कुमंत्रु मन साजि समाजू। आए करै अकंटक राजू ॥
कोटि प्रकार कल्पि कुटलाई। आए दल बटोरि दोउ भाई ॥
जौ जियँ होति न कपट कुचाली। केहि सोहाति रथ बाजि गजाली ॥
भरतहि दोसु देइ को जाएँ। जग बौराइ राज पदु पाएँ ॥

दो. ससि गुर तिय गामी नघुषु चढ़ेउ भूमिसुर जान।
लोक बेद तें विमुख भा अधम न बेन समान ॥ २२८ ॥

सहसबाहु सुरनाथु त्रिसंकू। केहि न राजमद दीन्ह कलंकू ॥
भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ। रिपु रिन रंच न राखब काऊ ॥
एक कीन्हि नहिं भरत भलाई। निदरे रामु जानि असहाई ॥
समुझि परिहि सोउ आजु बिसेषी। समर सरोष राम मुखु पेखी ॥
एतना कहत नीति रस भूला। रन रस बिटपु पुलक मिस फूला ॥
प्रभु पद बंदि सीस रज राखी। बोले सत्य सहज बलु भाषी ॥
अनुचित नाथ न मानब मोरा। भरत हमहि उपचार न थोरा ॥
कहँ लगि सहिअ रहिअ मनु मारें। नाथ साथ धनु हाथ हमारें ॥

दो. छत्रि जाति रघुकुल जनमु राम अनुग जगु जान।
लातहुँ मारें चढ़ति सिर नीच को धूरि समान ॥ २२९ ॥

उठि कर जोरि रजायसु मागा। मनहुँ बीर रस सोवत जागा ॥
बाँधि जटा सिर कसि कटि भाथा। साजि सरासनु सायकु हाथा ॥
आजु राम सेवक जसु लेऊँ। भरतहि समर सिखावन देऊँ ॥
राम निरादर कर फलु पाई। सोवहुँ समर सेज दोउ भाई ॥
आइ बना भल सकल समाजू। प्रगट करउँ रिस पाछिल आजू ॥
जिमि करि निकर दलइ मृगराजू। लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू ॥
तैसेहिं भरतहि सेन समेता। सानुज निदरि निपातउँ खेता ॥
जौ सहाय कर संकरु आई। तौ मारउँ रन राम दोहाई ॥

दो. अति सरोष माखे लखनु लखि सुनि सपथ प्रवान।
सभय लोक सब लोकपति चाहत भभरि भगान ॥ २३० ॥

जगु भय मगन गगन भइ बानी। लखन बाहुबलु बिपुल बखानी ॥
तात प्रताप प्रभाउ तुम्हारा। को कहि सकइ को जाननिहारा ॥
अनुचित उचित काजु किछु होऊ। समुझि करिअ भल कह सबु कोऊ ॥
सहसा करि पाछैँ पछिताही। कहहिं बेद बुध ते बुध नाही ॥
सुनि सुर बचन लखन सकुचाने। राम सीयँ सादर सनमाने ॥
कही तात तुम्ह नीति सुहाई। सब तें कठिन राजमदु भाई ॥
जो अचवँत नृप मातहिं तेई। नाहिन साधुसभा जेहिं सेई ॥
सुनहु लखन भल भरत सरीसा। बिधि प्रपंच महुँ सुना न दीसा ॥

दो. भरतहि होइ न राजमदु बिधि हरि हर पद पाइ ॥
कवहुँ कि काँजी सीकरनि छीरसिंधु बिनसाइ ॥ २३१ ॥

तिमिरु तरुन तरनिहि मकु गिलई। गगनु मगन मकु मेघहिं मिलई ॥

गोपद जल बूझिं घटजोनी । सहज छमा बरु छाड़ै छोनी ॥
 मसक फूँक मकु मेरु उड़ाई । होइ न नृपमदु भरतहि भाई ॥
 लखन तुम्हार सपथ पितु आना । सुचि सुबंधु नहिं भरत समाना ॥
 सगुन खीरु अवगुन जलु ताता । मिलइ रचइ परपंचु बिधाता ॥
 भरतु हंस रबिबंस तड़ागा । जनमि कीन्ह गुन दोष बिभागा ॥
 गहि गुन पय तजि अवगुन बारी । निज जस जगत कीन्ह उजिआरी ॥
 कहत भरत गुन सीलु सुभाऊ । पेम पयोधि मगन रघुराऊ ॥

दो. सुनि रघुबर बानी बिबुध देखि भरत पर हेतु ।
 सकल सराहत राम सो प्रभु को कृपानिकेतु ॥ २३२ ॥

जौ न होत जग जनम भरत को । सकल धरम धुर धरनि धरत को ॥
 कबि कुल अगम भरत गुन गाथा । को जानइ तुम्ह विनु रघुनाथा ॥
 लखन राम सियँ सुनि सुर बानी । अति सुखु लहेउ न जाइ बखानी ॥
 इहाँ भरतु सब सहित सहाए । मंदाकिनी पुनीत नहाए ॥
 सरित समीप राखि सब लोगा । मागि मातु गुर सचिव नियोगा ॥
 चले भरतु जहँ सिय रघुराई । साथ निषादनाथु लघु भाई ॥
 समुझि मातु करतब सकुचाहीं । करत कुतरक कोटि मन माहीं ॥
 रामु लखनु सिय सुनि मम नाऊँ । उठि जनि अनत जाहिं तजि ठाऊँ ॥

दो. मातु मते महुँ मानि मोहि जो कछु करहिं सो थोर ।
 अघ अवगुन छमि आदरहिं समुझि आपनी ओर ॥ २३३ ॥

जौ परिहरहिं मलिन मनु जानी । जौ सनमानहिं सेवकु मानी ॥
 मोरें सरन रामहि की पनही । राम सुस्वामि दोसु सब जनही ॥
 जग जस भाजन चातक मीना । नेम पेम निज निपुन नबीना ॥
 अस मन गुनत चले मग जाता । सकुच सनेहुँ सिथिल सब गाता ॥
 फेरत मनहुँ मातु कृत खोरी । चलत भगति बल धीरज धोरी ॥
 जब समुझत रघुनाथ सुभाऊ । तब पथ परत उताइल पाऊ ॥
 भरत दसा तेहि अवसर कैसी । जल प्रवाहुँ जल अलि गति जैसी ॥
 देखि भरत कर सोचु सनेहू । भा निषाद तेहि समयँ बिदेहू ॥

दो. लगे होन मंगल सगुन सुनि गुनि कहत निषादु ।
 मिटिहि सोचु होइहि हरषु पुनि परिनाम बिषादु ॥ २३४ ॥

सेवक बचन सत्य सब जाने । आश्रम निकट जाइ निअराने ॥
 भरत दीख बन सैल समाजू । मुदित छुधित जनु पाइ सुनाजू ॥
 ईति भीति जनु प्रजा दुखारी । त्रिविध ताप पीड़ित ग्रह मारी ॥
 जाइ सुराज सुदेस सुखारी । होहिं भरत गति तेहि अनुहारी ॥
 राम बास बन संपति भ्राजा । सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा ॥
 सचिव बिरागु बिबेकु नरेसू । बिपिन सुहावन पावन देसू ॥
 भट जम नियम सैल रजधानी । सांति सुमति सुचि सुंदर रानी ॥
 सकल अंग संपन्न सुराऊ । राम चरन आश्रित चित चाऊ ॥

दो. जीति मोह महिपालु दल सहित बिबेक भुआलु ।
 करत अकंटक राजु पुरँ सुख संपदा सुकालु ॥ २३५ ॥

बन प्रदेस मुनि बास घनेरे । जनु पुर नगर गाउँ गन खेरे ॥
 विपुल बिचित्र बिहग मृग नाना । प्रजा समाजु न जाइ बखाना ॥
 खगहा करि हरि बाघ बराहा । देखि महिष वृष साजु सराहा ॥
 वयरु बिहाइ चरहिं एक संगी । जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरंगी ॥
 झरना झरहिं मत्त गज गाजहिं । मनहुँ निसान बिबिधि बिधि बाजहिं ॥
 चक चकोर चातक सुक पिक गन । कूजत मंजु मराल मुदित मन ॥
 अलिगन गावत नाचत मोरा । जनु सुराज मंगल चहु ओरा ॥
 बेलि बिटप तून सफल सफूला । सब समाजु मुद मंगल मूला ॥
 दो. राम सैल सोभा निरखि भरत हृदयँ अति पेम ।
 तापस तप फलु पाइ जिमि सुखी सिरानें नेमु ॥ २३६ ॥

मासपारायण, बीसवाँ विश्राम
 नवाह्नपारायण, पाँचवाँ विश्राम

तब केवट ऊँचें चढ़ि धाई । कहेउ भरत सन भुजा उठाई ॥
 नाथ देखिअहिं बिटप बिसाला । पाकरि जंबु रसाल तमाला ॥
 जिन्ह तरुबरन्ह मध्य बटु सोहा । मंजु बिसाल देखि मनु मोहा ॥
 नील सघन पल्लव फल लाला । अबिरल छाहुँ सुखद सब काला ॥
 मानहुँ तिमिर अरुनमय रासी । बिरची बिधि सँकेलि सुषमा सी ॥
 ए तरु सरित समीप गोसाँई । रघुबर परनकुटी जहँ छाई ॥
 तुलसी तरुबर बिबिध सुहाए । कहुँ कहुँ सियँ कहुँ लखन लगाए ॥
 बट छायाँ बेदिका बनाई । सियँ निज पानि सरोज सुहाई ॥

दो. जहाँ बैठि मुनिगन सहित नित सिय रामु सुजान ।
 सुनिहिं कथा इतिहास सब आगम निगम पुरान ॥ २३७ ॥

सखा बचन सुनि बिटप निहारी । उमगे भरत बिलोचन बारी ॥
 करत प्रनाम चले दोउ भाई । कहत प्रीति सारद सकुचाई ॥
 हरषहिं निरखि राम पद अंका । मानहुँ पारसु पायउ रंका ॥
 रज सिर धरि हियँ नयनन्हि लावहिं । रघुबर मिलन सरिस सुख पावहिं ॥
 देखि भरत गति अकथ अतीवा । प्रेम मगन मृग खग जड़ जीवा ॥
 सखहि सनेह बिबस मग भूला । कहि सुपंथ सुर वरषहिं फूला ॥
 निरखि सिद्ध साधक अनुरागे । सहज सनेहु सराहन लागे ॥
 होत न भूतल भाउ भरत को । अचर सचर चर अचर करत को ॥

दो. पेम अमिअ मंदरु बिरहु भरतु पयोधि गँभीर ।
 मथि प्रगटेउ सुर साधु हित कृपासिंधु रघुवीर ॥ २३८ ॥

सखा समेत मनोहर जोटा । लखेउ न लखन सघन बन ओटा ॥
 भरत दीख प्रभु आश्रमु पावन । सकल सुमंगल सदन सुहावन ॥
 करत प्रबेस मिटे दुख दावा । जनु जोगी परमारथु पावा ॥
 देखे भरत लखन प्रभु आगे । पूँछे बचन कहत अनुरागे ॥
 सीस जटा कटि मुनि पट बाँधें । तून कसैं कर सरु धनु काँधें ॥
 बेदी पर मुनि साधु समाजू । सीय सहित राजत रघुराजू ॥
 बलकल बसन जटिल तनु स्यामा । जनु मुनि वेष कीन्ह रति कामा ॥

कर कमलनि धनु सायकु फेरत । जिय की जरनि हरत हँसि हेरत ॥

दो. लसत मंजु मुनि मंडली मध्य सीय रघुचंदु ।
ग्यान सभाँ जनु तनु धरे भगति सच्चिदानंद ॥ २३९ ॥

सानुज सखा समेत मगन मन । बिसरे हरष सोक सुख दुख गन ॥
पाहि नाथ कहि पाहि गोसाई । भूतल परे लकुट की नाई ॥
बचन सपेम लखन पहिचाने । करत प्रनामु भरत जियँ जाने ॥
बंधु सनेह सरस एहि ओरा । उत साहिब सेवा बस जोरा ॥
मिलि न जाइ नहिं गुदरत बनई । सुकवि लखन मन की गति भनई ॥
रहे राखि सेवा पर भारू । चढ़ी चंग जनु खैच खेलारू ॥
कहत सप्रेम नाइ महि माथा । भरत प्रनाम करत रघुनाथा ॥
उठे रामु सुनि पेम अधीरा । कहूँ पट कहूँ निषंग धनु तीरा ॥

दो. बरबस लिए उठाइ उर लाए कृपानिधान ।
भरत राम की मिलनि लखि बिसरे सबहि अपान ॥ २४० ॥

मिलनि प्रीति किमि जाइ बखानी । कबिकुल अगम करम मन बानी ॥
परम पेम पूरन दोउ भाई । मन बुधि चित अहमिति बिसराई ॥
कहहु सुपेम प्रगट को करई । केहि छाया कवि मति अनुसरई ॥
कविहि अरथ आखर बलु साँचा । अनुहरि ताल गतिहि नटु नाचा ॥
अगम सनेह भरत रघुबर को । जहँ न जाइ मनु बिधि हरि हर को ॥
सो मै कुमति कहौँ केहि भाँती । बाज सुराग कि गाँडर ताँती ॥
मिलनि बिलोकि भरत रघुबर की । सुरगन सभय धकधकी धरकी ॥
समुझाए सुरगुरु जड़ जागे । बरषि प्रसून प्रसंसन लागे ॥

दो. मिलि सपेम रिपुसूदनहि केवटु भेंटेउ राम ।
भूरि भायँ भेंटे भरत लछिमन करत प्रनाम ॥ २४१ ॥

भेंटेउ लखन ललकि लघु भाई । बहुरि निषादु लीन्ह उर लाई ॥
पुनि मुनिगन दुहुँ भाइन्ह बंदे । अभिमत आसिष पाइ अनंदे ॥
सानुज भरत उमगि अनुरागा । धरि सिर सिय पद पदुम परागा ॥
पुनि पुनि करत प्रनाम उठाए । सिर कर कमल परसि बैठाए ॥
सीयँ असीस दीन्ह मन माहीं । मगन सनेहँ देह सुधि नाहीं ॥
सब बिधि सानुकूल लखि सीता । भे निसोच उर अपडर बीता ॥
कोउ किछु कहइ न कोउ किछु पूँछा । प्रेम भरा मन निज गति छूँछा ॥
तेहि अवसर केवटु धीरजु धरि । जोरि पानि बिनवत प्रनामु करि ॥

दो. नाथ साथ मुनिनाथ के मातु सकल पुर लोग ।
सेवक सेनप सचिव सब आए बिकल बियोग ॥ २४२ ॥

सीलसिंधु सुनि गुर आगवनू । सिय समीप राखे रिपुदवनू ॥
चले सबेग रामु तेहि काला । धीर धरम धुर दीनदयाला ॥
गुरहि देखि सानुज अनुरागे । दंड प्रनाम करन प्रभु लागे ॥
मुनिबर धाइ लिए उर लाई । प्रेम उमगि भेंटे दोउ भाई ॥
प्रेम पुलकि केवट कहि नामू । कीन्ह दूरि तें दंड प्रनामू ॥

रामसखा रिषि बरबस भेंटा । जनु महि लुठत सनेह समेटा ॥
रघुपति भगति सुमंगल मूला । नभ सराहि सुर बरिसहिं फूला ॥
एहि सम निपट नीच कोउ नाहीं । बड़ बसिष्ठ सम को जग माहीं ॥

दो. जेहि लखि लखनहु तें अधिक मिले मुदित मुनिराउ ।
सो सीतापति भजन को प्रगट प्रताप प्रभाउ ॥ २४३ ॥

आरत लोग राम सबु जाना । करुनाकर सुजान भगवाना ॥
जो जेहि भायँ रहा अभिलाषी । तेहि तेहि कै तसि तसि रुख राखी ॥
सानुज मिलि पल महु सब काहू । कीन्ह दूरि दुखु दारुन दाहू ॥
यह बड़ि बातँ राम कै नाहीं । जिमि घट कोटि एक रबि छाहीं ॥
मिलि केवटिहि उमगि अनुरागा । पुरजन सकल सराहहिं भागा ॥
देखी राम दुखित महतारी । जनु सुबलि अवली हिम मारी ॥
प्रथम राम भेंटी कैकेई । सरल सुभायँ भगति मति भेई ॥
पग परि कीन्ह प्रबोधु बहोरी । काल करम बिधि सिर धरि खोरी ॥

दो. भेटी रघुबर मातु सब करि प्रबोधु परितोषु ॥
अंब ईस आधीन जगु काहु न देइअ दोषु ॥ २४४ ॥

गुरतिय पद बंदे दुहु भाई । सहित बिप्रतिय जे सँग आई ॥
गंग गौरि सम सब सनमानी ॥ देहिं असीस मुदित मूदु बानी ॥
गहि पद लगे सुमित्रा अंका । जनु भेटी संपति अति रंका ॥
पुनि जननि चरननि दोउ भ्राता । परे पेम ब्याकुल सब गाता ॥
अति अनुराग अंब उर लाए । नयन सनेह सलिल अन्हवाए ॥
तेहि अवसर कर हरष बिषादू । किमि कवि कहै मूक जिमि स्वादू ॥
मिलि जननहि सानुज रघुराऊ । गुर सन कहेउ कि धारिअ पाऊ ॥
पुरजन पाइ मुनीस नियोगू । जल थल तकि तकि उतरेउ लोगू ॥

दो. महिसुर मंत्री मातु गुर गने लोग लिए साथ ॥
पावन आश्रम गवनु किय भरत लखन रघुनाथ ॥ २४५ ॥

सीय आइ मुनिबर पग लागी । उचित असीस लही मन मागी ॥
गुरपतिनिहि मुनितियन्ह समेटा । मिली पेमु कहि जाइ न जेता ॥
बंदि बंदि पग सिय सबही के । आसिरबचन लहे प्रिय जी के ॥
सासु सकल जब सीयँ निहारी । मूदे नयन सहमि सुकुमारी ॥
परी बधिक बस मनहुँ मराली । काह कीन्ह करतार कुचाली ॥
तिन्ह सिय निरखि निपट दुखु पावा । सो सबु सहिअ जो दैउ सहावा ॥
जनकसुता तब उर धरि धीरा । नील नलिन लोयन भरि नीरा ॥
मिली सकल सासुन्ह सिय जाई । तेहि अवसर करुना महि छाई ॥

दो. लागि लागि पग सबनि सिय भेंटति अति अनुराग ॥
हृदयँ असीसहिं पेम बस रहिअहु भरी सोहाग ॥ २४६ ॥

बिकल सनेहँ सीय सब रानी । बैठन सबहि कहेउ गुर ग्यानी ॥
कहि जग गति मायिक मुनिनाथा । कहे कछुक परमारथ गाथा ॥
नृप कर सुरपुर गवनु सुनावा । सुनि रघुनाथ दुसह दुखु पावा ॥

मरन हेतु निज नेहु बिचारी । भे अति बिकल धीर धुर धारी ॥
कुलिस कठोर सुनत कटु बानी । बिलपत लखन सीय सब रानी ॥
सोक बिकल अति सकल समाजू । मानहुँ राजु अकाजेउ आजू ॥
मुनिबर बहुरि राम समुझाए । सहित समाज सुसरित नहाए ॥
व्रतु निरंबु तेहि दिन प्रभु कीन्हा । मुनिहु कहेँ जलु काहुँ न लीन्हा ॥

दो. भोरु भएँ रघुनंदनहि जो मुनि आयसु दीन्ह ॥
श्रद्धा भगति समेत प्रभु सो सबु सादरु कीन्ह ॥ २४७ ॥

करि पितु क्रिया बेद जसि बरनी । भे पुनीत पातक तम तरनी ॥
जासु नाम पावक अघ तूला । सुमिरत सकल सुमंगल मूला ॥
सुद्ध सो भयउ साधु संमत अस । तीरथ आवाहन सुरसरि जस ॥
सुद्ध भएँ दुइ बासर बीते । बोले गुर सन राम पिरीते ॥
नाथ लोग सब निपट दुखारी । कंद मूल फल अंबु अहारी ॥
सानुज भरतु सचिव सब माता । देखि मोहि पल जिमि जुग जाता ॥
सब समेत पुर धारिअ पाऊ । आपु इहाँ अमरावति राऊ ॥
बहुत कहेउँ सब कियउँ ढिठाई । उचित होइ तस करिअ गोसाँई ॥

दो. धर्म सेतु करुनायतन कस न कहहु अस राम ।
लोग दुखित दिन दुइ दरस देखि लहहुँ विश्राम ॥ २४८ ॥

राम बचन सुनि सभय समाजू । जनु जलनिधि महुँ बिकल जहाजू ॥
सुनि गुर गिरा सुमंगल मूला । भयउ मनहुँ मारुत अनुकुला ॥
पावन पर्यँ तिहुँ काल नहाहीं । जो बिलोकि अंघ ओघ नसाहीं ॥
मंगलमूरति लोचन भरि भरि । निरखहिं हरषि दंडवत करि करि ॥
राम सैल बन देखन जाहीं । जहँ सुख सकल सकल दुख नाही ॥
झरना झरिहिं सुधासम बारी । त्रिविध तापहर त्रिविध बयारी ॥
बिटप बेलि तून अगनित जाती । फल प्रसून पल्लव बहु भाँती ॥
सुंदर सिला सुखद तरु छाहीं । जाइ बरनि बन छबि केहि पाहीं ॥

दो. सरनि सरोरुह जल बिहग कूजत गुंजत भृंग ।
बैर बिगत बिहरत बिपिन मृग बिहंग बहुरंग ॥ २४९ ॥

कोल किरात भिल्ल बनबासी । मधु सुचि सुंदर स्वादु सुधा सी ॥
भरि भरि परन पुटी रचि रुरी । कंद मूल फल अंकुर जूरी ॥
सबहि देहिं करि बिनय प्रनामा । कहि कहि स्वाद भेद गुन नामा ॥
देहिं लोग बहु मोल न लेहीं । फेरत राम दोहाई देहीं ॥
कहहिं सनेह मगन मृदु बानी । मानत साधु पेम पहिचानी ॥
तुम्ह सुकृती हम नीच निषादा । पावा दरसनु राम प्रसादा ॥
हमहि अगम अति दरसु तुम्हारा । जस मरु धरनि देवधुनि धारा ॥
राम कृपाल निषाद नेवाजा । परिजन प्रजउ चहिअ जस राजा ॥

दो. यह जिँयँ जानि सँकोचु तजि करिअ छोहु लखि नेहु ।
हमहि कृतारथ करन लागि फल तून अंकुर लेहु ॥ २५० ॥

तुम्ह प्रिय पाहुने बन पगु धारे । सेवा जोगु न भाग हमारे ॥

देव काह हम तुम्हहि गोसाँई । ईधनु पात किरात मिताई ॥
यह हमारि अति बड़ि सेवकाई । लेहि न बासन बसन चोराई ॥
हम जड़ जीव जीव गन घाती । कुटिल कुचाली कुमति कुजाती ॥
पाप करत निसि बासर जाहीं । नहिं पट कटि नहि पेट अघाहीं ॥
सपोनेहुँ धरम बुद्धि कस काऊ । यह रघुनंदन दरस प्रभाऊ ॥
जब तें प्रभु पद पदुम निहारे । मिटे दुसह दुख दोष हमारे ॥
बचन सुनत पुरजन अनुरागे । तिन्ह के भाग सराहन लागे ॥

छं. लागे सराहन भाग सब अनुराग बचन सुनावहीं ।
बोलनि मिलनि सिय राम चरन सनेहु लखि सुखु पावहीं ॥
नर नारि निदरहिं नेहु निज सुनि कोल भिल्लनि की गिरा ।
तुलसी कृपा रघुबंसमनि की लोह लै लौका तिरा ॥

सो. बिहरहिं बन चहु ओर प्रतिदिन प्रमुदित लोग सब ।
जल ज्यों दादुर मोर भए पीन पावस प्रथम ॥ २५१ ॥

पुर जन नारि मगन अति प्रीती । बासर जाहिं पलक सम बीती ॥
सीय सासु प्रति बेष बनाई । सादर करइ सरिस सेवकाई ॥
लखा न मरमु राम बिनु काहुँ । माया सब सिय माया माहुँ ॥
सीयँ सासु सेवा बस कीन्हीं । तिन्ह लहि सुख सिख आसिष दीन्हीं ॥
लखि सिय सहित सरल दोउ भाई । कुटिल रानि पछितानि अघाई ॥
अवनि जमहि जाचति कैकेई । महि न बीचु बिधि मीचु न देई ॥
लोकहुँ बेद विदित कवि कहहीं । राम बिमुख थलु नरक न लहहीं ॥
यहु संसउ सब के मन माहीं । राम गवनु बिधि अवध कि नाही ॥

दो. निसि न नीद नहिं भूख दिन भरतु बिकल सुचि सोच ।
नीच कीच बिच मगन जस मीनहि सलिल सँकोच ॥ २५२ ॥

कीन्हीं मातु मिस काल कुचाली । ईति भीति जस पाकत साली ॥
केहि बिधि होइ राम अभिषेकू । मोहि अवकलत उपाउ न एकू ॥
अवसि फिरहिं गुर आयसु मानी । मुनि पुनि कहब राम रुचि जानी ॥
मातु कहेहुँ बहुरहिं रघुराऊ । राम जननि हठ करबि कि काऊ ॥
मोहि अनुचर कर केतिक बाता । तेहि महुँ कुसमउ बाम बिधाता ॥
जौ हठ करउँ त निपट कुकरमू । हरगिरि तें गुरु सेवक धरमू ॥
एकउ जुगुति न मन ठहरानी । सोचत भरतहि रैन बिहानी ॥
प्रात नहाइ प्रभुहि सिर नाई । बैठत पठए रिषयँ बोलाई ॥

दो. गुर पद कमल प्रनामु करि बैठे आयसु पाइ ।
बिप्र महाजन सचिव सब जुरे सभासद आइ ॥ २५३ ॥

बोले मुनिबरु समय समाना । सुनहु सभासद भरत सुजाना ॥
धरम धुरीन भानुकुल भानू । राजा रामु स्वबस भगवानू ॥
सत्यसंध पालक श्रुति सेतू । राम जनमु जग मंगल हेतू ॥
गुर पितु मातु बचन अनुसारी । खल दलु दलन देव हितकारी ॥
नीति प्रीति परमारथ स्वारथु । कोउ न राम सम जान जथारथु ॥
बिधि हरि हरु ससि रबि दिसिपाला । माया जीव करम कुलि काला ॥

अहिप महिप जहँ लगि प्रभुताई । जोग सिद्धि निगमागम गाई ॥
करि बिचार जियँ देखहु नीकें । राम रजाइ सीस सबही कें ॥

दो. राखें राम रजाइ रुख हम सब कर हित होइ ।
समुझि सयाने करहु अब सब मिलि संमत सोइ ॥ २५४ ॥

सब कहँ सुखद राम अभिषेकू । मंगल मोद मूल मग एकू ॥
केहि बिधि अवध चलहिं रघुराऊ । कहहु समुझि सोइ करिअ उपाऊ ॥
सब सादर सुनि मुनिबर बानी । नय परमारथ स्वारथ सानी ॥
उतरु न आव लोग भए भोरे । तब सिरु नाइ भरत कर जोरे ॥
भानुवंस भए भूप घनेरे । अधिक एक तें एक बड़ेरे ॥
जनमु हेतु सब कहँ पितु माता । करम सुभासुभ देइ बिधाता ॥
दलि दुख सजइ सकल कल्याना । अस असीस राउरि जगु जाना ॥
सो गोसाईं बिधि गति जेहिं छेंकी । सकइ को टारि टेक जो टेकी ॥

दो. बुझिअ मोहि उपाउ अब सो सब मोर अभागु ।
सुनि सनेहमय बचन गुर उर उमगा अनुरागु ॥ २५५ ॥

तात बात फुरि राम कृपाहीं । राम बिमुख सिधि सपनेहुँ नाहीं ॥
सकुचउँ तात कहत एक बाता । अरध तजहिं बुध सरबस जाता ॥
तुम्ह कानन गवनहु दोउ भाई । फेरिअहिं लखन सीय रघुराई ॥
सुनि सुबचन हरषे दोउ भ्राता । भे प्रमोद परिपूरन गाता ॥
मन प्रसन्न तन तेजु बिराजा । जनु जिय राउ रामु भए राजा ॥
बहुत लाभ लोगन्ह लघु हानी । सम दुख सुख सब रोवहिं रानी ॥
कहहिं भरतु मुनि कहा सो कीन्हे । फलु जग जीवन्ह अभिमत दीन्हे ॥
कानन करउँ जनम भरि बासू । एहिं तें अधिक न मोर सुपासू ॥

दो. अंतरजामी रामु सिय तुम्ह सरबग्य सुजान ।
जो फुर कहहु त नाथ निज कीजिअ बचनु प्रवान ॥ २५६ ॥

भरत बचन सुनि देखि सनेहू । सभा सहित मुनि भए बिदेहू ॥
भरत महा महिमा जलरासी । मुनि मति ठाढ़ि तीर अबला सी ॥
गा चह पार जतनु हियँ हेरा । पावति नाव न बोहितु बेरा ॥
औरु करिहि को भरत बड़ाई । सरसी सीपि कि सिंधु समाई ॥
भरतु मुनिहि मन भीतर भाए । सहित समाज राम पहिँ आए ॥
प्रभु प्रनामु करि दीन्ह सुआसनु । बैठे सब सुनि मुनि अनुसासनु ॥
बोले मुनिबरु बचन बिचारी । देस काल अवसर अनुहारी ॥
सुनहु राम सरबग्य सुजाना । धरम नीति गुन ग्यान निधाना ॥

दो. सब के उर अंतर बसहु जानहु भाउ कुभाउ ।
पुरजन जननी भरत हित होइ सो कहिअ उपाउ ॥ २५७ ॥

आरत कहहिं बिचारि न काऊ । सूझ जूआरिहि आपन दाऊ ॥
सुनि मुनि बचन कहत रघुराऊ । नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ ॥
सब कर हित रुख राउरि राखें । आयसु किऐं मुदित फुर भाषें ॥
प्रथम जो आयसु मो कहँ होई । माथँ मानि करौ सिख सोई ॥

पुनि जेहि कहँ जस कहब गोसाईं । सो सब भाँति घटिहि सेवकाईं ॥
कह मुनि राम सत्य तुम्ह भाषा । भरत सनेहँ बिचारु न राखा ॥
तेहि तें कहउँ बहोरि बहोरी । भरत भगति बस भइ मति मोरी ॥
मोरें जान भरत रुचि राखि । जो कीजिअ सो सुभ सिव साखी ॥

दो. भरत बिनय सादर सुनिअ करिअ बिचारु बहोरि ।
करब साधुमत लोकमत नृपनय निगम निचोरि ॥ २५८ ॥

गुरु अनुराग भरत पर देखी । राम हृदयँ आनंदु बिसेषी ॥
भरतहि धरम धुरंधर जानी । निज सेवक तन मानस बानी ॥
बोले गुर आयस अनुकूला । बचन मंजु मृदु मंगलमूला ॥
नाथ सपथ पितु चरन दोहाई । भयउ न भुअन भरत सम भाई ॥
जे गुर पद अंबुज अनुरागी । ते लोकहुँ बेदहुँ बड़भागी ॥
राउर जा पर अस अनुरागू । को कहि सकइ भरत कर भागू ॥
लखि लघु बंधु बुद्धि सकुचाई । करत बदन पर भरत बड़ाई ॥
भरतु कहही सोइ किऐं भलाई । अस कहि राम रहे अरगाई ॥

दो. तब मुनि बोले भरत सन सब सँकोचु तजि तात ।
कृपासिंधु प्रिय बंधु सन कहहु हृदय कै बात ॥ २५९ ॥

सुनि मुनि बचन राम रुख पाई । गुरु साहिब अनुकूल अघाई ॥
लखि अपने सिर सबु छरु भारू । कहि न सकहिं कछु करहिं बिचारू ॥
पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े । नीरज नयन नेह जल बाढ़े ॥
कहब मोर मुनिनाथ निवाहा । एहि तें अधिक कहौं मैं काहा ॥
मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ । अपराधिहु पर कोह न काऊ ॥
मो पर कृपा सनेह बिसेषी । खेलत सुनिस न कबहुँ देखी ॥
सिसुपन तेम परिहरेउँ न संगू । कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू ॥
मैं प्रभु कृपा रीति जियँ जोही । हारेहुँ खेल जितावहिं मोही ॥

दो. महुँ सनेह सकोच बस सनमुख कही न बैन ।
दरसन तृपित न आजु लगि पेम पिआसे नैन ॥ २६० ॥

बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा । नीच बीचु जननी मिस पारा ।
यहउ कहत मोहि आजु न सोभा । अपनी समुझि साधु सुचि को भा ॥
मातु मंदि मैं साधु सुचाली । उर अस आनत कोटि कुचाली ॥
फरइ कि कोदव बालि सुसाली । मुकुता प्रसव कि संबुक काली ॥
सपनेहुँ दोसक लेसु न काहू । मोर अभाग उदधि अवगाहू ॥
बिनु समुझें निज अघ परिपाकू । जारिउँ जायँ जननि कहि काकू ॥
हृदयँ हेरि हारेउँ सब ओरा । एकहि भाँति भलेहिं भल मोरा ॥
गुर गोसाईं साहिब सिय रामू । लागत मोहि नीक परिनामू ॥

दो. साधु सभा गुर प्रभु निकट कहउँ सुथल सति भाउ ।
प्रेम प्रपंचु कि झूठ फुर जानहिं मुनि रघुराउ ॥ २६१ ॥

भूपति मरन पेम पनु राखी । जननी कुमति जगतु सबु साखी ॥
देखि न जाहि बिकल महतारी । जरहिं दुसह जर पुर नर नारी ॥

महीं सकल अनरथ कर मूला । सो सुनि समुझि सहिउँ सब सूला ॥
 सुनि बन गवनु कीन्ह रघुनाथा । करि मुनि बेष लखन सिय साथा ॥
 विनु पानहिन्ह पयादेहि पाएँ । संकरु साखि रहेउँ एहि घाएँ ॥
 बहुरि निहार निषाद सनेहू । कुलिस कठिन उर भयउ न बेहू ॥
 अब सबु आँखिन्ह देखेउँ आई । जिअत जीव जड़ सबइ सहाई ॥
 जिन्हहि निरखि मग साँपनि बीछी । तजहिं बिषम बिषु तामस तीछी ॥

दो. तेइ रघुनंदनु लखनु सिय अनहित लागे जाहि ।
 तासु तनय तजि दुसह दुख दैउ सहावइ काहि ॥ २६२ ॥

सुनि अति बिकल भरत बर बानी । आरति प्रीति बिनय नय सानी ॥
 सोक मगन सब सभाँ खभारू । मनहुँ कमल बन परेउ तुसारू ॥
 कहि अनेक विधि कथा पुरानी । भरत प्रबोधु कीन्ह मुनि ग्यानी ॥
 बोले उचित बचन रघुनंदू । दिनकर कुल कैरव बन चंदू ॥
 तात जाँय जियँ करहु गलानी । ईस अधीन जीव गति जानी ॥
 तीनि काल तिभुअन मत मोरें । पुन्यसिलोक तात तर तोरे ॥
 उर आनत तुम्ह पर कुटिलाई । जाइ लोकु परलोकु नसाई ॥
 दोसु देहिं जननिहि जड़ तेई । जिन्ह गुर साधु सभा नहिं सेई ॥

दो. मिटिहहिं पाप प्रपंच सब अखिल अमंगल भार ।
 लोक सुजसु परलोक सुखु सुमिरत नामु तुम्हार ॥ २६३ ॥

कहउँ सुभाउ सत्य सिव साखी । भरत भूमि रह राउरि राखी ॥
 तात कुतरक करहु जनि जाएँ । बैर पेम नहि दुरइ दुराएँ ॥
 मुनि गन निकट बिहग मृग जाही । बाधक बधिक बिलोकि पराही ॥
 हित अनहित पसु पच्छिउ जाना । मानुष तनु गुन ग्यान निधाना ॥
 तात तुम्हहि मै जानउँ नीकें । करौ काह असमंजस जीकें ॥
 राखेउ रायँ सत्य मोहि त्यागी । तनु परिहरेउ पेम पन लागी ॥
 तासु बचन मेटत मन सोचू । तेहि तें अधिक तुम्हार सँकोचू ॥
 ता पर गुर मोहि आयसु दीन्हा । अवसि जो कहहु चहउँ सोइ कीन्हा ॥

दो. मनु प्रसन्न करि सकुच तजि कहहु करौ सोइ आजु ।
 सत्यसंध रघुबर बचन सुनि भा सुखी समाजु ॥ २६४ ॥

सुर गन सहित सभय सुरराजू । सोचहिं चाहत होन अकाजू ॥
 बनत उपाउ करत कछु नाही । राम सरन सब गे मन माही ॥
 बहुरि बिचारि परस्पर कहही । रघुपति भगत भगति बस अहही ।
 सुधि करि अंबरीष दुरबासा । भे सुर सुरपति निपट निरासा ॥
 सहे सुरन्ह बहु काल बिषादा । नरहरि किए प्रगत प्रह्लादा ॥
 लगि लगि कान कहहिं धुनि माथा । अब सुर काज भरत के हाथा ॥
 आन उपाउ न देखिअ देवा । मानत रामु सुसेवक सेवा ॥
 हियँ सपेम सुमिरहु सब भरतहि । निज गुन सील राम बस करतहि ॥

दो. सुनि सुर मत सुरगुर कहेउ भल तुम्हार बड़ भागु ।
 सकल सुमंगल मूल जग भरत चरन अनुरागु ॥ २६५ ॥

सीतापति सेवक सेवकाई । कामधेनु सय सरिस सुहाई ॥
 भरत भगति तुम्हरें मन आई । तजहु सोचु बिधि बात बनाई ॥
 देखु देवपति भरत प्रभाऊ । सहज सुभायँ बिबस रघुराऊ ॥
 मन थिर करहु देव डरु नाही । भरतहि जानि राम परिछाही ॥
 सुनो सुरगुर सुर संमत सोचू । अंतरजामी प्रभुहि सकोचू ॥
 निज सिर भारु भरत जियँ जाना । करत कोटि बिधि उर अनुमाना ॥
 करि बिचारु मन दीन्ही ठीका । राम रजायस आपन नीका ॥
 निज पन तजि राखेउ पनु मोरा । छोहु सनेहु कीन्ह नहिं थोरा ॥

दो. कीन्ह अनुग्रह अमित अति सब बिधि सीतानाथ ।
 करि प्रनामु बोले भरतु जोरि जलज जुग हाथ ॥ २६६ ॥

कहौ कहावौ का अब स्वामी । कृपा अंबुनिधि अंतरजामी ॥
 गुर प्रसन्न साहिब अनुकूला । मिटी मलिन मन कलपित सूला ॥
 अपडर डरेउँ न सोच समूलें । रबिहि न दोसु देव दिसि भूलें ॥
 मोर अभागु मातु कुटिलाई । बिधि गति बिषम काल कठिनाई ॥
 पाउ रोपि सब मिलि मोहि घाला । प्रनतपाल पन आपन पाला ॥
 यह नइ रीति न राउरि होई । लोकहुँ बेद बिदित नहिं गोई ॥
 जगु अनभल भल एकु गोसाई । कहिअ होइ भल कासु भलाई ॥
 देउ देवतरु सरिस सुभाऊ । सनमुख बिमुख न काहुहि काऊ ॥

दो. जाइ निकट पहिचानि तर छाहँ समनि सब सोच ।
 मागत अभिमत पाव जग राउ रंकु भल पोच ॥ २६७ ॥

लखि सब बिधि गुर स्वामि सनेहू । मिटेउ छोभु नहिं मन सदेहू ॥
 अब करुनाकर कीजिअ सोई । जन हित प्रभु चित छोभु न होई ॥
 जो सेवकु साहिबहि सँकोची । निज हित चहइ तासु मति पोची ॥
 सेवक हित साहिब सेवकाई । करै सकल सुख लोभ बिहाई ॥
 स्वारथु नाथ फिरें सबही का । किएँ रजाइ कोटि बिधि नीका ॥
 यह स्वारथ परमारथ सारु । सकल सुकृत फल सुगति सिंगारु ॥
 देव एक बिनती सुनि मोरी । उचित होइ तस करब बहोरी ॥
 तिलक समाजु साजि सबु आना । करिअ सुफल प्रभु जौँ मनु माना ॥

दो. सानुज पठइअ मोहि बन कीजिअ सबहि सनाथ ।
 नतरु फेरिअहिं बंधु दोउ नाथ चलौँ मै साथ ॥ २६८ ॥

नतरु जाहिं बन तीनिउ भाई । बहुरिअ सीय सहित रघुराई ॥
 जेहि बिधि प्रभु प्रसन्न मन होई । करुना सागर कीजिअ सोई ॥
 देवँ दीन्ह सबु मोहि अमारु । मोरें नीति न धरम बिचारु ॥
 कहउँ बचन सब स्वारथ हेतू । रहत न आरत केँ चित चेतू ॥
 उतरु देइ सुनि स्वामि रजाई । सो सेवकु लखि लाज लजाई ॥
 अस मै अवगुन उदधि अगाधू । स्वामि सनेहँ सराहत साधू ॥
 अब कृपाल मोहि सो मत भावा । सकुच स्वामि मन जाई न पावा ॥
 प्रभु पद सपथ कहउँ सति भाऊ । जग मंगल हित एक उपाऊ ॥

दो. प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि जो जेहि आयसु देव ।

सो सिर धरि धरि करिहि सबु मिटिहि अनट अवरेब ॥ २६९ ॥

भरत बचन सुचि सुनि सुर हरषे । साधु सराहि सुमन सुर बरषे ॥
असमंजस बस अवध नेवासी । प्रमुदित मन तापस बनबासी ॥
चुपहिं रहे रघुनाथ सँकोची । प्रभु गति देखि सभा सब सोची ॥
जनक दूत तेहि अवसर आए । मुनि बसिष्ठ सुनि बेगि बोलाए ॥
करि प्रनाम तिन्ह रामु निहारे । बेषु देखि भए निपट दुखारे ॥
दूतन्ह मुनिबर बूझी बाता । कहहु बिदेह भूप कुसलाता ॥
सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा । बोले चर बर जोरें हाथा ॥
बूझब राउर सादर साई । कुसल हेतु सो भयउ गोसाई ॥

दो. नाहि त कोसल नाथ कें साथ कुसल गइ नाथ ।
मिथिला अवध बिसेष तें जगु सब भयउ अनाथ ॥ २७० ॥

कोसलपति गति सुनि जनकौरा । भे सब लोक सोक बस बौरा ॥
जेहिं देखे तेहि समय बिदेहू । नामु सत्य अस लाग न केहू ॥
रानि कुचालि सुनत नरपालहि । सूझ न कछु जस मनि विनु ब्यालहि ॥
भरत राज रघुबर बनबासू । भा मिथिलेसहि हृदयँ हराँसू ॥
नृप बूझे बुध सचिव समाजू । कहहु बिचारि उचित का आजू ॥
समुझि अवध असमंजस दोऊ । चलिअ कि रहिअ न कह कछु कोऊ ॥
नृपहि धीर धरि हृदयँ बिचारी । पठए अवध चतुर चर चारी ॥
बूझि भरत सति भाउ कुभाऊ । आएहु बेगि न होइ लखाऊ ॥

दो. गए अवध चर भरत गति बूझि देखि करतूति ।
चले चित्रकूटहि भरतु चार चले तेरहूति ॥ २७१ ॥

दूतन्ह आइ भरत कइ करनी । जनक समाज जथामति बरनी ॥
सुनि गुर परिजन सचिव महीपति । भे सब सोच सनेहँ बिकल अति ॥
धरि धीरजु करि भरत बड़ाई । लिए सुभट साहनी बोलाई ॥
घर पुर देस राखि रखवारे । हय गय रथ बहु जान सँवारे ॥
दुधरी साधि चले ततकाला । किए विश्रामु न मग महीपाला ॥
भोरहिं आजु नहाइ प्रयागा । चले जमुन उतरन सबु लागा ॥
खबरि लेन हम पठए नाथा । तिन्ह कहि अस महि नायउ माथा ॥
साथ किरात छ सातक दीन्हे । मुनिबर तुरत बिदा चर कीन्हे ॥

दो. सुनत जनक आगवनु सबु हरषेउ अवध समाजु ।
रघुनंदनहि सकोचु बड़ सोच विबस सुरराजु ॥ २७२ ॥

गरइ गलानि कुटिल कैकेई । काहि कहै केहि दूषनु देई ॥
अस मन आनि मुदित नर नारी । भयउ बहोरि रहब दिन चारी ॥
एहि प्रकार गत बासर सोऊ । प्रात नहान लाग सबु कोऊ ॥
करि मज्जनु पूजहिं नर नारी । गनप गौरि तिपुरारि तमारी ॥
रमा रमन पद बंदि बहोरी । विनवहिं अंजुलि अंचल जोरी ॥
राजा रामु जानकी रानी । आनंद अवधि अवध रजधानी ॥
सुबस बसउ फिरि सहित समाजा । भरतहि रामु करहुँ जुबराजा ॥
एहि सुख सुधाँ सींची सब काहू । देव देहु जग जीवन लाहू ॥

दो. गुर समाज भाइन्ह सहित राम राजु पुर होउ ।
अछुत राम राजा अवध मरिअ माग सबु कोउ ॥ २७३ ॥

सुनि सनेहमय पुरजन बानी । निंदहिं जोग बिरति मुनि ग्यानी ॥
एहि बिधि नित्यकरम करि पुरजन । रामहिं करहिं प्रनाम पुलकि तन ॥
ऊँच नीच मध्यम नर नारी । लहहिं दरसु निज निज अनुहारी ॥
सावधान सबही सनमानहिं । सकल सराहत कृपानिधानहिं ॥
लरिकाइहि ते रघुबर बानी । पालत नीति प्रीति पहिचानी ॥
सील सकोच सिंधु रघुराऊ । सुमुख सुलोचन सरल सुभाऊ ॥
कहत राम गुन गन अनुरागे । सब निज भाग सराहन लागे ॥
हम सम पुन्य पुंज जग थोरे । जिन्हहिं रामु जानत करि मोरे ॥

दो. प्रेम मगन तेहि समय सब सुनि आवत मिथिलेसु ।
सहित सभा संभ्रम उठेउ रबिकुल कमल दिनेसु ॥ २७४ ॥

भाइ सचिव गुर पुरजन साथ । आगें गवनु कीन्ह रघुनाथा ॥
गिरिबरु दीख जनकपति जबहीं । करि प्रनाम रथ त्यागेउ तबहीं ॥
राम दरस लालसा उछाहू । पथ श्रम लेसु कलेसु न काहू ॥
मन तहँ जहँ रघुबर बैदेही । विनु मन तन दुख सुख सुधि केही ॥
आवत जनकु चले एहि भाँती । सहित समाज प्रेम मति माती ॥
आए निकट देखि अनुरागे । सादर मिलन परसपर लागे ॥
लगे जनक मुनिजन पद बंदन । रिषिन्ह प्रनामु कीन्ह रघुनंदन ॥
भाइन्ह सहित रामु मिलि राजहि । चले लवाइ समेत समाजहि ॥

दो. आश्रम सागर सांत रस पूरन पावन पाथु ।
सेन मनहुँ करुना सरित लिएँ जाहिं रघुनाथु ॥ २७५ ॥

बोरति ग्यान विराग करारे । बचन ससोक मिलत नद नारे ॥
सोच उसास समीर तंरगा । धीरज तट तरुबर कर भंगा ॥
बिषम बिषाद तोरावति धारा । भय भ्रम भवँर अबर्त अपारा ॥
केवट बुध बिद्या बड़ि नावा । सकहिं न खेइ ऐक नहिं आवा ॥
बनचर कोल किरात बिचारे । थके बिलोकि पथिक हियँ हारे ॥
आश्रम उदधि मिली जब जाई । मनहुँ उठेउ अंबुधि अकुलाई ॥
सोक बिकल दोउ राज समाजा । रहा न ग्यानु न धीरजु लाजा ॥
भूप रूप गुन सील सराही । रोवहिं सोक सिंधु अवगाही ॥

छं. अवगाहि सोक समुद्र सोचहिं नारि नर ब्याकुल महा ।
दौ दोष सकल सरोष बोलहिं बाम बिधि कीन्हे कहा ॥
सुर सिद्ध तापस जोगिजन मुनि देखि दसा बिदेह की ।
तुलसी न समरथु कोउ जो तरि सकै सरित सनेह की ॥

सो. किए अमित उपदेस जहँ तहँ लोगन्ह मुनिबरन्ह ।
धीरजु धरिअ नरेस कहेउ बसिष्ठ बिदेह सन ॥ २७६ ॥

जासु ग्यानु रबि भव निसि नासा । बचन किरन मुनि कमल बिकासा ॥

तेहि कि मोह ममता निअराई। यह सिय राम सनेह बड़ाई ॥
विषई साधक सिद्ध सयाने। त्रिविध जीव जग बेद बखाने ॥
राम सनेह सरस मन जासू। साधु सभाँ बड़ आदर तासू ॥
सोह न राम पेम बिनु ग्यानू। करनधार बिनु जिमि जलजानू ॥
मुनि बहुविधि विदेहु समुझाए। रामघाट सब लोग नहाए ॥
सकल सोक संकुल नर नारी। सो बासरु बीतेउ बिनु बारी ॥
पसु खग मृगन्ह न कीन्ह अहारू। प्रिय परिजन कर कौन बिचारू ॥

दो. दोउ समाज निमिराजु रघुराजु नहाने प्रात।
बैठे सब बट बिटप तर मन मलीन कृस गात ॥ २७७ ॥

जे महिसुर दसरथ पुर बासी। जे मिथिलापति नगर निवासी ॥
हंस बंस गुर जनक पुरोधा। जिन्ह जग मगु परमारथु सोधा ॥
लगे कहन उपदेस अनेका। सहित धरम नय बिरति बिबेका ॥
कौसिक कहि कहि कथा पुरानी। समुझाई सब सभा सुबानी ॥
तब रघुनाथ कोसिकहि कहेऊ। नाथ कालि जल बिनु सबु रहेऊ ॥
मुनि कह उचित कहत रघुराई। गयउ बीति दिन पहर अढ़ाई ॥
रिषि रुख लखि कह तेरहुतिराजू। इहाँ उचित नहिँ असन अनाजू ॥
कहा भूप भल सबहि सोहाना। पाइ रजायसु चले नहाना ॥

दो. तेहि अवसर फल फूल दल मूल अनेक प्रकार।
लइ आए बनचर बिपुल भरि भरि काँवरि भार ॥ २७८ ॥

कामद मे गिरि राम प्रसादा। अवलोकत अपहरत बिषादा ॥
सर सरिता बन भूमि विभागा। जनु उमगत आनंद अनुरागा ॥
बेलि बिटप सब सफल सफूला। बोलत खग मृग अलि अनुकूला ॥
तेहि अवसर बन अधिक उछाहू। त्रिविध समीर सुखद सब काहू ॥
जाइ न बरनि मनोहरताई। जनु महि करति जनक पहुनाई ॥
तब सब लोग नहाइ नहाई। राम जनक मुनि आयसु पाई ॥
देखि देखि तरुवर अनुरागे। जहँ तहँ पुरजन उतरन लागे ॥
दल फल मूल कंद विधि नाना। पावन सुंदर सुधा समाना ॥

दो. सादर सब कहँ रामगुर पठए भरि भरि भार।
पूजि पितर सुर अतिथि गुर लगे करन फरहार ॥ २७९ ॥

एहि बिधि बासर बीते चारी। रामु निरखि नर नारि सुखारी ॥
दुहु समाज असि रुचि मन माहीं। बिनु सिय राम फिरब भल नाहीं ॥
सीता राम संग बनबासू। कोटि अमरपुर सरिस सुपासू ॥
परिहरि लखन रामु बैदेही। जेहि घरु भाव बाम बिधि तेही ॥
दाहिन दइउ होइ जब सबही। राम समीप बसिअ बन तबही ॥
मंदाकिनि मज्जनु तिहु काला। राम दरसु मुद मंगल माला ॥
अटनु राम गिरि बन तापस थल। असनु अमिअ सम कंद मूल फल ॥
सुख समेत संबत दुइ साता। पल सम होहिं न जनिअहिं जाता ॥

दो. एहि सुख जोग न लोग सब कहहिं कहाँ अस भागु ॥
सहज सुभायँ समाज दुहु राम चरन अनुरागु ॥ २८० ॥

एहि बिधि सकल मनोरथ करहीं। बचन सप्रेम सुनत मन हरहीं ॥
सीय मातु तेहि समय पठाई। दासी देखि सुअवसरु आई ॥
सावकास सुनि सब सिय सासू। आयउ जनकराज रनिवासू ॥
कौसल्याँ सादर सनमानी। आसन दिए समय सम आनी ॥
सीलु सनेह सकल दुहु ओरा। द्रवहिं देखि सुनि कुलिस कठोरा ॥
पुलक सिथिल तन बारि बिलोचन। महि नख लिखन लगीं सब सोचन ॥
सब सिय राम प्रीति कि सि मूरती। जनु करुना बहु बेष बिसूरति ॥
सीय मातु कह बिधि बुधि बाँकी। जो पय फेनु फोर पबि टाँकी ॥

दो. सुनिअ सुधा देखिअहिं गरल सब करतूति कराल।
जहँ तहँ काक उलूक बक मानस सकृत मराल ॥ २८१ ॥

सुनि ससोच कह देबि सुमित्रा। बिधि गति बड़ि बिपरीत बिचित्रा ॥
जो सृजि पालइ हरइ बहोरी। बाल केलि सम बिधि मति भोरी ॥
कौसल्या कह दोसु न काहू। करम बिबस दुख सुख छति लाहू ॥
कठिन करम गति जान बिधाता। जो सुभ असुभ सकल फल दाता ॥
ईस रजाइ सीस सबही कें। उतपति थिति लय बिषहु अमी कें ॥
देबि मोह बस सोचिअ बादी। बिधि प्रपंचु अस अचल अनादी ॥
भूपति जिअब मरब उर आनी। सोचिअ सखि लखि निज हित हानी ॥
सीय मातु कह सत्य सुबानी। सुकृती अवधि अवधपति रानी ॥

दो. लखनु राम सिय जाहुँ बन भल परिनाम न पोचु।
गहबरि हियँ कह कौसिला मोहि भरत कर सोचु ॥ २८२ ॥

ईस प्रसाद असीस तुम्हारी। सुत सुतबधू देवसरि बारी ॥
राम सपथ मैं कीन्ह न काऊ। सो करि कहउँ सखी सति भाऊ ॥
भरत सील गुन बिनय बड़ाई। भायप भगति भरोस भलाई ॥
कहत सारदहु कर मति हीचे। सागर सीप कि जाहिं उलीचे ॥
जानउँ सदा भरत कुलदीपा। बार बार मोहि कहेउ महीपा ॥
कसँ कनकु मनि पारिखि पाएँ। पुरुष परिखिअहिं समयँ सुभाएँ ॥
अनुचित आजु कहब अस मोरा। सोक सनेहँ सयानप थोरा ॥
सुनि सुरसरि सम पावनि बानी। भई सनेह बिबल सब रानी ॥

दो. कौसल्या कह धीर धरि सुनहु देबि मिथिलेसि।
को बिबेकनिधि बल्लभहि तुम्हहि सकइ उपदेसि ॥ २८३ ॥

रानि राय सन अवसरु पाई। अपनी भाँति कहब समुझाई ॥
रखिअहिं लखनु भरतु गबनहिं बन। जौ यह मत मानै महीप मन ॥
तौ भल जतनु करब सुबिचारी। मोरें सौचु भरत कर भारी ॥
गूढ़ सनेह भरत मन माही। रहें नीक मोहि लागत नाहीं ॥
लखि सुभाउ सुनि सरल सुबानी। सब भइ मगन करुन रस रानी ॥
नभ प्रसून झरि धन्य धन्य धुनि। सिथिल सनेहँ सिद्ध जोगी मुनि ॥
सबु रनिवासु बिधकि लखि रहेऊ। तब धरि धीर सुमित्राँ कहेऊ ॥
देबि दंड जुग जामिनि बीती। राम मातु सुनी उठी सप्रीती ॥

दो. बेगि पाउ धारिअ थलहि कह सनेहँ सतिभाय ।
हमरें तौ अब ईस गति के मिथिलेस सहाय ॥ २८४ ॥

लखि सनेह सुनि बचन बिनीता । जनकप्रिया गह पाय पुनीता ॥
देवि उचित असि विनय तुम्हारी । दसरथ घरिनि राम महतारी ॥
प्रभु अपने नीचहु आदरही । अगिनि धूम गिरि सिर तिनु धरही ॥
सेवकु राउ करम मन बानी । सदा सहाय महेसु भवानी ॥
रउरे अंग जोगु जग को है । दीप सहाय कि दिनकर सोहै ॥
रामु जाइ बनु करि सुर काजू । अचल अवधपुर करिहहिं राजू ॥
अमर नाग नर राम बाहुबल । सुख बसिहहिं अपने अपने थल ॥
यह सब जागबलिक कहि राखा । देवि न होइ मुधा मुनि भाषा ॥

दो. अस कहि पग परि पेम अति सिय हित विनय सुनाइ ॥
सिय समेत सियमातु तब चली सुआयसु पाइ ॥ २८५ ॥

प्रिय परिजनहि मिली बैदेही । जो जेहि जोगु भाँति तेहि तेही ॥
तापस बेष जानकी देखी । भा सबु बिकल बिषाद बिसेषी ॥
जनक राम गुर आयसु पाई । चले थलहि सिय देखी आई ॥
लीन्ह लाइ उर जनक जानकी । पाहुन पावन पेम प्रान की ॥
उर उमगेउ अंबुधि अनुरागू । भयउ भूप मनु मनहुँ पयागू ॥
सिय सनेह बटु बाढ़त जोहा । ता पर राम पेम सिसु सोहा ॥
चिरजीवी मुनि ग्यान बिकल जनु । बूड़त लहेउ बाल अवलंबनु ॥
मोह मगन मति नहिं बिदेह की । महिमा सिय रघुबर सनेह की ॥

दो. सिय पितु मातु सनेह बस बिकल न सकी सँभारि ।
धरनिसुताँ धीरजु धरेउ समउ सुधरमु बिचारि ॥ २८६ ॥

तापस बेष जनक सिय देखी । भयउ पेम परितोषु बिसेषी ॥
पुत्रि पवित्र किए कुल दोऊ । सुजस धवल जगु कह सबु कोऊ ॥
जिति सुरसरि कीरति सरि तोरी । गवनु कीन्ह बिधि अंड करोरी ॥
गंग अवनि थल तीनि बड़ेरे । एहिं किए साधु समाज घनेरे ॥
पितु कह सत्य सनेहँ सुबानी । सीय सकुच महुँ मनहुँ समानी ॥
पुनि पितु मातु लीन्ह उर लाई । सिख आसिष हित दीन्हि सुहाई ॥
कहति न सीय सकुचि मन माहीं । इहाँ बसब रजनी भल नाहीं ॥
लखि रुख रानि जनायउ राऊ । हृदयँ सराहत सीलु सुभाऊ ॥

दो. बार बार मिलि भेंट सिय बिदा कीन्ह सनमानि ।
कही समय सिर भरत गति रानि सुबानि सयानि ॥ २८७ ॥

सुनि भूपाल भरत ब्यवहारू । सोन सुगंध सुधा ससि सारू ॥
मूदे सजल नयन पुलके तन । सुजसु सराहन लगे मुदित मन ॥
सावधान सुनु सुमुखि सुलोचनि । भरत कथा भव बंध बिमोचनि ॥
धरम राजनय ब्रह्मबिचारू । इहाँ जथामति मोर प्रचारू ॥
सो मति मोरि भरत महिमाही । कहै काह छलि छुअति न छाँही ॥
बिधि गनपति अहिपति सिव सारद । कवि कोबिद बुध बुद्धि विसारद ॥
भरत चरित कीरति करतूती । धरम सील गुन विमल बिभूती ॥

समुझत सुनत सुखद सब काहू । सुचि सुरसरि रुचि निदर सुधाहू ॥

दो. निरवधि गुन निरुपम पुरुषु भरतु भरत सम जानि ।
कहिअ सुमेरु कि सेर सम कबिकुल मति सकुचानि ॥ २८८ ॥

अगम सबहि बरनत बरबरनी । जिमि जलहीन मीन गमु धरनी ॥
भरत अमित महिमा सुनु रानी । जानहिं रामु न सकहिं बखानी ॥
बरनि सप्रेम भरत अनुभाऊ । तिय जिय की रुचि लखि कह राऊ ॥
बहुरहिं लखनु भरतु बन जाहीं । सब कर भल सब के मन माहीं ॥
देवि परंतु भरत रघुबर की । प्रीति प्रतीति जाइ नहिं तरकी ॥
भरतु अवधि सनेह ममता की । जद्यपि रामु सीम समता की ॥
परमारथ स्वारथ सुख सारे । भरत न सपनेहुँ मनहुँ निहारे ॥
साधन सिद्ध राम पग नेहू ॥ मोहि लखि परत भरत मत एहू ॥

दो. भोरेहुँ भरत न पेलिहहिं मनसहुँ राम रजाइ ।
करिअ न सोचु सनेह बस कहेउ भूप बिलखाइ ॥ २८९ ॥

राम भरत गुन गनत सप्रीती । निसि दंपतिहि पलक सम बीती ॥
राज समाज प्रात जुग जागे । न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे ॥
गे नहाइ गुर पही रघुराई । बंदि चरन बोले रुख पाई ॥
नाथ भरतु पुरजन महतारी । सोक बिकल बनबास दुखारी ॥
सहित समाज राउ मिथिलेसू । बहुत दिवस भए सहत कलेसू ॥
उचित होइ सोइ कीजिअ नाथा । हित सबही कर रौरें हाथा ॥
अस कहि अति सकुचे रघुराऊ । मुनि पुलके लखि सीलु सुभाऊ ॥
तुम्ह विनु राम सकल सुख साजा । नरक सरिस दुहु राज समाजा ॥

दो. प्रान प्रान के जीव के जिव सुख के सुख राम ।
तुम्ह तजि तात सोहात गृह जिन्हहि तिन्हहिं बिधि बाम ॥ २९० ॥

सो सुखु करमु धरमु जरि जाऊ । जहँ न राम पद पंकज भाऊ ॥
जोगु कुजोगु ग्यानु अग्यानु । जहँ नहिं राम पेम परधानू ॥
तुम्ह विनु दुखी सुखी तुम्ह तेहीं । तुम्ह जानहु जिय जो जेहि केहीं ॥
राउर आयसु सिर सबही कें । बिदित कृपालहि गति सब नीकें ॥
आपु आश्रमहि धारिअ पाऊ । भयउ सनेह सिथिल मुनिराऊ ॥
करि प्रनाम तब रामु सिधाए । रिषि धरि धीर जनक पहिं आए ॥
राम बचन गुरु नृपहि सुनाए । सील सनेह सुभायँ सुहाए ॥
महाराज अब कीजिअ सोई । सब कर धरम सहित हित होई ।

दो. ग्यान निधान सुजान सुचि धरम धीर नरपाल ।
तुम्ह विनु असमंजस समन को समरथ एहि काल ॥ २९१ ॥

सुनि मुनि बचन जनक अनुरागे । लखि गति ग्यानु विरागु विरागे ॥
सिथिल सनेहँ गुनत मन माहीं । आए इहाँ कीन्ह भल नाहीं ॥
रामहि रायँ कहेउ बन जाना । कीन्ह आपु प्रिय प्रेम प्रवाना ॥
हम अब बन तें बनहि पठाई । प्रमुदित फिरब बिबेक बड़ाई ॥
तापस मुनि महिसुर सुनि देखी । भए प्रेम बस बिकल बिसेषी ॥

समउ समुझि धरि धीरजु राजा । चले भरत पहिं सहित समाजा ॥
भरत आइ आगें भइ लीन्हे । अवसर सरिस सुआसन दीन्हे ॥
तात भरत कह तेरहुति राऊ । तुम्हहि बिदित रघुबीर सुभाऊ ॥

दो. राम सत्यव्रत धरम रत सब कर सीलु सनेहु ॥
संकट सहत सकोच बस कहिअ जो आयसु देहु ॥ २९२ ॥

सुनि तन पुलकि नयन भरि बारी । बोले भरतु धीर धरि भारी ॥
प्रभु प्रिय पूज्य पिता सम आपू । कुलगुरु सम हित माय न बापू ॥
कौसिकादि मुनि सचिव समाजू । ग्यान अंबुनिधि आपुनु आजू ॥
सिसु सेवक आयसु अनुगामी । जानि मोहि सिख देइअ स्वामी ॥
एहिं समाज थल बूझब राउर । मौन मलिन मैं बोलब बाउर ॥
छोटे बदन कहउँ बड़ि बाता । छमब तात लखि बाम बिधाता ॥
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना । सेवाधरमु कठिन जगु जाना ॥
स्वामि धरम स्वारथहि बिरोधू । बैरु अंध प्रेमहि न प्रबोधू ॥

दो. राखि राम रुख धरमु ब्रतु पराधीन मोहि जानि ।
सब कें संमत सर्व हित करिअ पेमु पहिचानि ॥ २९३ ॥

भरत बचन सुनि देखि सुभाऊ । सहित समाज सराहत राऊ ॥
सुगम अगम मूढु मंजु कठोरे । अरथु अमित अति आखर थोरे ॥
ज्यौ मुख मुकुर मुकुरु निज पानी । गहि न जाइ अस अदभुत बानी ॥
भूप भरत मुनि सहित समाजू । गे जहँ बिबुध कुमुद द्विजराजू ॥
सुनि सुधि सोच बिकल सब लोगा । मनहुँ मीनगन नव जल जोगा ॥
देवँ प्रथम कुलगुर गति देखी । निरखि बिदेह सनेह बिसेषी ॥
राम भगतिमय भरतु निहारे । सुर स्वारथी हहरि हियँ हारे ॥
सब कोउ राम पेममय पेखा । भउ अलेख सोच बस लेखा ॥

दो. रामु सनेह सकोच बस कह ससोच सुरराज ।
रचहु प्रपंचहि पंच मिलि नाहिं त भयउ अकाजु ॥ २९४ ॥

सुरन्ह सुमिरि सारदा सराही । देबि देव सरनागत पाही ॥
फेरि भरत मति करि निज माया । पालु बिबुध कुल करि छल छाया ॥
बिबुध बिनय सुनि देबि सयानी । बोली सुर स्वारथ जड़ि जानी ॥
मो सन कहहु भरत मति फेरू । लोचन सहस न सूझ सुमेरू ॥
बिधि हरि हर माया बड़ि भारी । सोउ न भरत मति सकइ निहारी ॥
सो मति मोहि कहत करु भोरी । चंदिनि कर कि चंडकर चोरी ॥
भरत हृदयँ सिय राम निवासू । तहँ कि तिमिर जहँ तरनि प्रकासू ॥
अस कहि सारद गइ बिधि लोका । बिबुध बिकल निसि मानहुँ कोका ॥

दो. सुर स्वारथी मलीन मन कीन्ह कुमंत्र कुठाटु ॥
रचि प्रपंच माया प्रबल भय भ्रम अरति उचाटु ॥ २९५ ॥

करि कुचालि सोचत सुरराजू । भरत हाथ सब काजु अकाजू ॥
गए जनकु रघुनाथ समीपा । सनमाने सब रबिकुल दीपा ॥
समय समाज धरम अबिरोधा । बोले तब रघुबंस पुरोधे ॥

जनक भरत संबादु सुनाई । भरत कहाउति कही सुहाई ॥
तात राम जस आयसु देहू । सो सबु करै मोर मत एहू ॥
सुनि रघुनाथ जोरि जुग पानी । बोले सत्य सरल मूढु बानी ॥
बिद्यमान आपुनि मिथिलेसू । मोर कहब सब भाँति भदेसू ॥
राउर राय रजायसु होई । राउरि सपथ सही सिर सोई ॥

दो. राम सपथ सुनि मुनि जनकु सकुचे सभा समेत ।
सकल बिलोकत भरत मुखु बनइ न उतरु देत ॥ २९६ ॥

सभा सकुच बस भरत निहारी । रामबंधु धरि धीरजु भारी ॥
कुसमउ देखि सनेहु संभारा । बद्धत बिंधि जिमि घटज निवारा ॥
सोक कनकलोचन मति छोनी । हरी विमल गुन गन जगजोनी ॥
भरत बिबेक बराहँ बिसाला । अनायास उधरी तेहि काला ॥
करि प्रनामु सब कहँ कर जोरे । रामु राउ गुर साधु निहोरे ॥
छमब आजु अति अनुचित मोरा । कहउँ बदन मूढु बचन कठोरा ॥
हियँ सुमिरी सारदा सुहाई । मानस तें मुख पंकज आई ॥
विमल बिबेक धरम नय साली । भरत भारती मंजु मराली ॥

दो. निरखि बिबेक बिलोचनन्हि सिधिल सनेहँ समाजु ।
करि प्रनामु बोले भरतु सुमिरि सीय रघुराजु ॥ २९७ ॥

प्रभु पितु मातु सुहृद गुर स्वामी । पूज्य परम हित अंतरंजामी ॥
सरल सुसाहिबु सील निधानू । प्रनतपाल सर्वग्य सुजानू ॥
समरथ सरनागत हितकारी । गुनगाहकु अवगुन अघ हारी ॥
स्वामि गोसाँइहि सरिस गोसाँइ । मोहि समान मैं साँइ दोहाई ॥
प्रभु पितु बचन मोह बस पेली । आयउँ इहाँ समाजु सकेली ॥
जग भल पोच ऊँच अरु नीचू । अमिअ अमरपद माहुरु मीचू ॥
राम रजाइ मेट मन माहीं । देखा सुना कतहुँ कोउ नाहीं ॥
सो मैं सब विधि कीन्हि ढिठाई । प्रभु मानी सनेह सेवकाई ॥

दो. कृपाँ भलाई आपनी नाथ कीन्ह भल मोर ।
दूषन भे भूषन सरिस सुजसु चारु चहु ओर ॥ २९८ ॥

राउरि रीति सुबानि बड़ाई । जगत बिदित निगमागम गाई ॥
कूर कुटिल खल कुमति कलंकी । नीच निसील निरीस निसंकी ॥
तेउ सुनि सरन सामुहें आए । सकृत प्रनामु किहें अपनाए ॥
देखि दोष कबहुँ न उर आने । सुनि गुन साधु समाज बखाने ॥
को साहिब सेवकहि नेवाजी । आपु समाज साज सब साजी ॥
निज करतूति न समुझिअ सपनें । सेवक सकुच सोचु उर अपनें ॥
सो गोसाँइ नहि दूसर कोपी । भुजा उठाइ कहउँ पन रोपी ॥
पसु नाचत सुक पाठ प्रबीना । गुन गति नट पाठक आधीना ॥

दो. यों सुधारि सनमानि जन किए साधु सिरमोर ।
को कृपाल बिनु पालिहै बिरिदावलि बरजोर ॥ २९९ ॥

सोक सनेहँ कि बाल सुभाएँ । आयउँ लाइ रजायसु बाएँ ॥

तबहुँ कृपाल हेरि निज ओरा । सबहि भाँति भल मानेउ मोरा ॥
 देखेउँ पाय सुमंगल मूला । जानेउँ स्वामि सहज अनुकूला ॥
 बड़ें समाज बिलोकेउँ भागू । बड़ी चूक साहिब अनुरागू ॥
 कृपा अनुग्रह अंगु अघाई । कीन्हि कृपानिधि सब अधिकारी ॥
 राखा मोर दुलार गोसाई । अपने सील सुभायँ भलाई ॥
 नाथ निपट मैं कीन्हि द्विटाई । स्वामि समाज सकोच बिहाई ॥
 अबिनय बिनय जथारुचि बानी । छमिहि देउ अति आरति जानी ॥

दो. सुहृद सुजान सुसाहिबहि बहुत कहव बड़ि खोरि ।
 आयसु देइअ देव अब सबइ सुधारी मोरि ॥ ३०० ॥

प्रभु पद पदुम पराग दोहाई । सत्य सुकृत सुख सीवँ सुहाई ॥
 सो करि कहउँ हिए अपने की । रुचि जागत सोवत सपने की ॥
 सहज सनेहँ स्वामि सेवकाई । स्वारथ छल फल चारि बिहाई ॥
 अग्या सम न सुसाहिब सेवा । सो प्रसादु जन पावै देवा ॥
 अस कहि प्रेम बिबस भए भारी । पुलक सरीर बिलोचन बारी ॥
 प्रभु पद कमल गहे अकुलाई । समउ सनेहु न सो कहि जाई ॥
 कृपासिंधु सनमानि सुबानी । बैठाए समीप गहि पानी ॥
 भरत बिनय सुनि देखि सुभाऊ । सिथिल सनेहँ सभा रघुराऊ ॥

छं. रघुराउ सिथिल सनेहँ साधु समाज मुनि मिथिला धनी ।
 मन महुँ सराहत भरत भायप भगति की महिमा धनी ॥
 भरतहि प्रसंसत बिबुध बरषत सुमन मानस मलिन से ।
 तुलसी बिकल सब लोग सुनि सकुचे निसागम नलिन से ॥

सो. देखि दुखारी दीन दुहु समाज नर नारि सब ।
 मघवा महा मलीन मुए मारि मंगल चहत ॥ ३०१ ॥

कपट कुचालि सीवँ सुरराजू । पर अकाज प्रिय आपन काजू ॥
 काक समान पाकरिपु रीती । छली मलीन कतहुँ न प्रतीती ॥
 प्रथम कुमत करि कपटु सँकेला । सो उचाटु सब कें सिर मेला ॥
 सुरमायाँ सब लोग बिमोहे । राम प्रेम अतिसय न बिछोहे ॥
 भय उचाट बस मन थिर नाही । छन बन रुचि छन सदन सोहाही ॥
 दुबिध मनोगति प्रजा दुखारी । सरित सिंधु संगम जनु बारी ॥
 दुचित कतहुँ परितोषु न लहहीं । एक एक सन मरमु न कहहीं ॥
 लखि हियँ हँसि कह कृपानिधानू । सरिस स्वान मघवान जुबानू ॥

दो. भरतु जनकु मुनिजन सचिव साधु सचेत बिहाइ ।
 लागि देवमाया सबहि जथाजोगु जनु पाइ ॥ ३०२ ॥

कृपासिंधु लखि लोग दुखारे । निज सनेहँ सुरपति छल भारे ॥
 सभा राउ गुर महिसुर मंत्री । भरत भगति सब कै मति जंत्री ॥
 रामहि चितवत चित्र लिखे से । सकुचत बोलत बचन सिखे से ॥
 भरत प्रीति नति बिनय बड़ाई । सुनत सुखद बरनत कठिनाई ॥
 जासु बिलोकि भगति लवलेसू । प्रेम मगन मुनिगन मिथिलेसू ॥
 महिमा तासु कहै किमि तुलसी । भगति सुभायँ सुमति हियँ हुलसी ॥

आपु छोटि महिमा बड़ि जानी । कबिकुल कानि मानि सकुचानी ॥
 कहि न सकति गुन रुचि अधिकारी । मति गति बाल बचन की नाई ॥

दो. भरत विमल जसु विमल बिधु सुमति चकोरकुमारि ।
 उदित विमल जन हृदय नभ एकटक रही निहारि ॥ ३०३ ॥

भरत सुभाउ न सुगम निगमहूँ । लघु मति चापलता कबि छमहूँ ॥
 कहत सुनत सति भाउ भरत को । सीय राम पद होइ न रत को ॥
 सुमिरत भरतहि प्रेमु राम को । जेहि न सुलभ तेहि सरिस बाम को ॥
 देखि दयाल दसा सबही की । राम सुजान जानि जन जी की ॥
 धरम धुरीन धीर नय नागर । सत्य सनेह सील सुख सागर ॥
 देसु काल लखि समउ समाजू । नीति प्रीति पालक रघुराजू ॥
 बोले बचन बानि सरबसु से । हित परिनाम सुनत ससि रसु से ॥
 तात भरत तुम्ह धरम धुरीना । लोक बेद बिद प्रेम प्रबीना ॥

दो. करम बचन मानस विमल तुम्ह समान तुम्ह तात ।
 गुर समाज लघु बंधु गुन कुसमयँ किमि कहि जात ॥ ३०४ ॥

जानहु तात तरनि कुल रीती । सत्यसंध पितु कीरति प्रीती ॥
 समउ समाजु लाज गुरुजन की । उदासीन हित अनहित मन की ॥
 तुम्हहि विदित सबही कर करमू । आपन मोर परम हित धरमू ॥
 मोहि सब भाँति भरोस तुम्हारा । तदपि कहउँ अवसर अनुसारा ॥
 तात तात बिनु बात हमारी । केवल गुरुकुल कृपाँ सँभारी ॥
 नतरु प्रजा परिजन परिवारू । हमहि सहित सबु होत सुआरू ॥
 जौ बिनु अवसर अथवँ दिनेसू । जग केहि कहहु न होइ कलेसू ॥
 तस उतपातु तात बिधि कीन्हा । मुनि मिथिलेस राखि सबु लीन्हा ॥

दो. राज काज सब लाज पति धरम धरनि धन धाम ।
 गुर प्रभाउ पालिहि सबहि भल होइहि परिनाम ॥ ३०५ ॥

सहित समाज तुम्हार हमारा । घर बन गुर प्रसाद रखवारा ॥
 मातु पिता गुर स्वामि निदेसू । सकल धरम धरनीधर सेसू ॥
 सो तुम्ह करहु करावहु मोहू । तात तरनिकुल पालक होहू ॥
 साधक एक सकल सिधि देनी । कीरति सुगति भूतिमय बनी ॥
 सो बिचारि सहि संकटु भारी । करहु प्रजा परिवारु सुखारी ॥
 बाँटी बिपति सबहिं मोहि भाई । तुम्हहि अवधि भरि बड़ि कठिनाई ॥
 जानि तुम्हहि मूढ कहउँ कठोरा । कुसमयँ तात न अनुचित मोरा ॥
 होहिं कुठायँ सुबंधु सुहाए । ओड़िअहिं हाथ असनिहु के घाए ॥

दो. सेवक कर पद नयन से मुख सो साहिबु होइ ।
 तुलसी प्रीति कि रीति सुनि सुकबि सराहहिं सोइ ॥ ३०६ ॥

सभा सकल सुनि रघुबर बानी । प्रेम पयोधि अमिअ जनु सानी ॥
 सिथिल समाज सनेह समाधी । देखि दसा चुप सारद साधी ॥
 भरतहि भयउ परम संतोषू । सनमुख स्वामि बिमुख दुख दोषू ॥
 मुख प्रसन्न मन मिटा बिषादू । भा जनु गूगेहि गिरा प्रसादू ॥

कीन्ह सप्रेम प्रनामु बहोरी। बोले पानि पंकरुह जोरी ॥
नाथ भयउ सुखु साथ गए को। लहेउँ लाहु जग जनमु भए को ॥
अब कृपाल जस आयसु होई। करौ सीस धरि सादर सोई ॥
सो अवलंब देव मोहि देई। अवधि पारु पावौं जेहि सेई ॥

दो. देव देव अभिषेक हित गुर अनुसासनु पाइ।
आनेउँ सब तीरथ सलिलु तेहि कहँ काह रजाइ ॥ ३०७ ॥

एकु मनोरथु बड़ मन माहीं। सभयँ सकोच जात कहि नाही ॥
कहहु तात प्रभु आयसु पाई। बोले बानि सनेह सुहाई ॥
चित्रकूट सुचि थल तीरथ बन। खग मृग सर सरि निर्झर गिरिगन ॥
प्रभु पद अंकित अवनि विसेषी। आयसु होइ त आवौं देखी ॥
अवसि अत्रि आयसु सिर धरहु। तात विगतभय कानन चरहु ॥
मुनि प्रसाद बनु मंगल दाता। पावन परम सुहावन भ्राता ॥
रिषिनायकु जहँ आयसु देहीं। राखेहु तीरथ जलु थल तेहीं ॥
सुनि प्रभु बचन भरत सुख पावा। मुनि पद कमल मुदित सिरु नावा ॥

दो. भरत राम संबादु सुनि सकल सुमंगल मूल।
सुर स्वारथी सराहि कुल बरषत सुरतरु फूल ॥ ३०८ ॥

धन्य भरत जय राम गोसाई। कहत देव हरषत बरिआई।
मुनि मिथिलेस सभाँ सब काहू। भरत बचन सुनि भयउ उछाहू ॥
भरत राम गुन ग्राम सनेहू। पुलकि प्रसंसत राउ बिदेहू ॥
सेवक स्वामि सुभाउ सुहावन। नेमु पेमु अति पावन पावन ॥
मति अनुसार सराहन लागे। सचिव सभासद सब अनुरागे ॥
सुनि सुनि राम भरत संबादू। दुहु समाज हियँ हरषु विषादू ॥
राम मातु दुखु सुखु सम जानी। कहि गुन राम प्रबोधी रानी ॥
एक कहहिं रघुबीर बड़ाई। एक सराहत भरत भलाई ॥

दो. अत्रि कहेउ तब भरत सन सैल समीप सुकूप।
राखिअ तीरथ तोय तहँ पावन अमिअ अनूप ॥ ३०९ ॥

भरत अत्रि अनुसासन पाई। जल भाजन सब दिए चलाई ॥
सानुज आपु अत्रि मुनि साधू। सहित गए जहँ कूप अगाधू ॥
पावन पाथ पुन्यथल राखा। प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भाषा ॥
तात अनादि सिद्ध थल एहू। लोपेउ काल विदित नहिं केहू ॥
तब सेवकन्ह सरस थलु देखा। किन्ह सुजल हित कूप विसेषा ॥
विधि बस भयउ विस्व उपकारू। सुगम अगम अति धरम विचारू ॥
भरतकूप अब कहिहहिं लोगा। अति पावन तीरथ जल जोगा ॥
प्रेम सनेम निमज्जत प्रानी। होइहहिं विमल करम मन बानी ॥

दो. कहत कूप महिमा सकल गए जहाँ रघुराउ।
अत्रि सुनायउ रघुबरहि तीरथ पुन्य प्रभाउ ॥ ३१० ॥

कहत धरम इतिहास सप्रीती। भयउ भोरु निसि सो सुख बीती ॥
नित्य निबाहि भरत दोउ भाई। राम अत्रि गुर आयसु पाई ॥

सहित समाज साज सब सादें। चले राम बन अटन पयादें ॥
कोमल चरन चलत बिनु पनहीं। भइ मृदु भूमि सकुचि मन मनहीं ॥
कुस कंटक काँकरी कुराई। कटुक कठोर कुबस्तु दुराई ॥
महि मंजुल मृदु मारग कीन्हे। बहत समीर त्रिविध सुख लीन्हे ॥
सुमन बरषि सुर घन करि छाही। विटप फूलि फलि तून मृदुताहीं ॥
मृग बिलोकि खग बोलि सुबानी। सेवहिं सकल राम प्रिय जानी ॥

दो. सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु राम कहत जमुहात।
राम प्रान प्रिय भरत कहँ यह न होइ बड़ि बात ॥ ३११ ॥

एहि विधि भरतु फिरत बन माहीं। नेमु प्रेमु लखि मुनि सकुचाहीं ॥
पुन्य जलाश्रय भूमि विभागा। खग मृग तरु तून गिरि बन बागा ॥
चारु विचित्र पवित्र विसेषी। बूझत भरतु दिव्य सब देखी ॥
सुनि मन मुदित कहत रिषिराऊ। हेतु नाम गुन पुन्य प्रभाऊ ॥
कतहुँ निमज्जन कतहुँ प्रनामा। कतहुँ बिलोकत मन अभिरामा ॥
कतहुँ बैठि मुनि आयसु पाई। सुमिरत सीय सहित दोउ भाई ॥
देखि सुभाउ सनेहु सुसेवा। देहिं असीस मुदित बनदेवा ॥
फिरहिं गएँ दिनु पहर अढ़ाई। प्रभु पद कमल बिलोकहिं आई ॥

दो. देखे थल तीरथ सकल भरत पाँच दिन माझ।
कहत सुनत हरि हर सुजसु गयउ दिवसु भइ साँझ ॥ ३१२ ॥

भोर न्हाइ सबु जुरा समाजू। भरत भूमिसुर तेरहुति राजू ॥
भल दिन आजु जानि मन माहीं। रामु कृपाल कहत सकुचाहीं ॥
गुर नृप भरत सभा अवलोकी। सकुचि राम फिरि अवनि बिलोकी ॥
सील सराहि सभा सब सोची। कहँ न राम सम स्वामि सँकोची ॥
भरत सुजान राम रुख देखी। उठि सप्रेम धरि धीर विसेषी ॥
करि दंडवत कहत कर जोरी। राखी नाथ सकल रुचि मोरी ॥
मोहि लागि सहेउ सबहिं संतापू। बहुत भाँति दुखु पावा आपू ॥
अब गोसाईं मोहि देउ रजाई। सेवौ अवध अवधि भरि जाई ॥

दो. जेहिं उपाय पुनि पाय जनु देखै दीनदयाल।
सो सिख देइअ अवधि लागि कोसलपाल कृपाल ॥ ३१३ ॥

पुरजन परिजन प्रजा गोसाई। सब सुचि सरस सनेहँ सगाई ॥
राउर बदि भल भव दुख दाहू। प्रभु बिनु बादि परम पद लाहू ॥
स्वामि सुजानु जानि सब ही की। रुचि लालसा रहनि जन जी की ॥
प्रनतपालु पालिहि सब काहू। देउ दुहू दिसि ओर निबाहू ॥
अस मोहि सब विधि भूरि भरोसो। किएँ विचारु न सोचु खरो सो ॥
आरति मोर नाथ कर छोहू। दुहँ मिलि कीन्ह ढीठु हठि मोहू ॥
यह बड़ दोषु दूरि करि स्वामी। तजि सकोच सिखइअ अनुगामी ॥
भरत बिनय सुनि सबहिं प्रसंसी। खीर नीर विबरन गति हंसी ॥

दो. दीनबंधु सुनि बंधु के बचन दीन छलहीन।
देस काल अवसर सरिस बोले रामु प्रवीन ॥ ३१४ ॥

तात तुम्हारि मोरि परिजन की । चिंता गुरहि नृपहि घर बन की ॥
माथे पर गुर मुनि मिथिलेसू । हमहि तुम्हहि सपनेहुँ न कलेसू ॥
मोर तुम्हार परम पुरुषारथु । स्वारथु सुजसु धरमु परमारथु ॥
पितु आयसु पालिहिं दुहु भाई । लोक बेद भल भूप भलाई ॥
गुर पितु मातु स्वामि सिख पालें । चलेहुँ कुमग पग परहिं न खालें ॥
अस बिचारि सब सोच बिहाई । पालहु अवध अवधि भरि जाई ॥
देसु कोसु परिजन परिवारु । गुर पद रजहिं लाग छरुभारु ॥
तुम्ह मुनि मातु सचिव सिख मानी । पालेहु पुहुमि प्रजा रजधानी ॥

दो. मुखिआ मुखु सो चाहिए खान पान कहूँ एक ।
पालइ पोषइ सकल अँग तुलसी सहित बिबेक ॥ ३१५ ॥

राजधरम सरबसु एतनोई । जिमि मन माहँ मनोरथ गोई ॥
बंधु प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती । बिनु अधार मन तोषु न साँती ॥
भरत सील गुर सचिव समाजू । सकुच सनेह बिबस रघुराजू ॥
प्रभु करि कृपा पाँवरी दीन्हीं । सादर भरत सीस धरि लीन्हीं ॥
चरनपीठ करुनानिधान के । जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के ॥
संपुट भरत सनेह रतन के । आखर जुग जुन जीव जतन के ॥
कुल कपाट कर कुसल करम के । बिमल नयन सेवा सुधरम के ॥
भरत मुदित अवलंब लहे तें । अस सुख जस सिय रामु रहे तें ॥

दो. मागेउ बिदा प्रनामु करि राम लिए उर लाइ ।
लोग उचाटे अमरपति कुटिल कुअवसरु पाइ ॥ ३१६ ॥

सो कुचालि सब कहँ भइ नीकी । अवधि आस सम जीवनि जी की ॥
नतरु लखन सिय सम बियोगा । हहरि मरत सब लोग कुरोगा ॥
रामकृपाँ अवरेब सुधारी । बिबुध धारि भइ गुनद गोहारी ॥
भेंटत भुज भरि भाइ भरत सो । राम प्रेम रसु कहि न परत सो ॥
तन मन बचन उमग अनुरागा । धीर धुरंधर धीरजु त्यागा ॥
बारिज लोचन मोचत बारी । देखि दसा सुर सभा दुखारी ॥
मुनिगन गुर धुर धीर जनक से । ग्यान अनल मन कसें कनक से ॥
जे बिरंचि निरलेप उपाए । पदुम पत्र जिमि जग जल जाए ॥

दो. तेउ बिलोकि रघुबर भरत प्रीति अनूप अपार ।
भाए मगन मन तन बचन सहित बिराग बिचार ॥ ३१७ ॥

जहाँ जनक गुर मति भोरी । प्राकृत प्रीति कहत बड़ि खोरी ॥
बरनत रघुबर भरत बियोगू । सुनि कठोर कवि जानिहि लोगू ॥
सो सकोच रसु अकथ सुबानी । समउ सनेहु सुमिरि सकुचानी ॥
भेंटि भरत रघुबर समुझाए । पुनि रिपुदवनु हरषि हियँ लाए ॥
सेवक सचिव भरत रुख पाई । निज निज काज लगे सब जाई ॥
सुनि दारुन दुखु दुहूँ समाजा । लगे चलन के साजन साजा ॥
प्रभु पद पदुम बंदि दोउ भाई । चले सीस धरि राम रजाई ॥
मुनि तापस बनदेव निहोरी । सब सनमानि बहोरि बहोरी ॥

दो. लखनहि भेंटि प्रनामु करि सिर धरि सिय पद धूरि ।

चले सप्रेम असीस सुनि सकल सुमंगल मूरि ॥ ३१८ ॥

सानुज राम नृपहि सिर नाई । कीन्ह बहुत बिधि बिनय बड़ाई ॥
देव दया बस बड़ दुखु पायउ । सहित समाज काननहिं आयउ ॥
पुर पगु धारिअ देइ असीसा । कीन्ह धीर धरि गवनु महीसा ॥
मुनि महिदेव साधु सनमाने । बिदा किए हरि हर सम जाने ॥
सासु समीप गए दोउ भाई । फिरे बंदि पग आसिष पाई ॥
कौसिक बामदेव जाबाली । पुरजन परिजन सचिव सुचाली ॥
जथा जोगु करि बिनय प्रनामा । बिदा किए सब सानुज रामा ॥
नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे । सब सनमानि कृपानिधि फेरे ॥

दो. भरत मातु पद बंदि प्रभु सुचि सनेहँ मिलि भेंटि ।
बिदा कीन्ह सजि पालकी सकुच सोच सब मेटि ॥ ३१९ ॥

परिजन मातु पितहि मिलि सीता । फिरी प्रानप्रिय प्रेम पुनीता ॥
करि प्रनामु भेंटी सब सासू । प्रीति कहत कवि हियँ न हुलासू ॥
सुनि सिख अभिमत आसिष पाई । रही सीय दुहु प्रीति समाई ॥
रघुपति पटु पालकी मगाई । करि प्रबोधु सब मातु चढ़ाई ॥
बार बार हिलि मिलि दुहु भाई । सम सनेहँ जननी पहुँचाई ॥
साजि बाजि गज बाहन नाना । भरत भूप दल कीन्ह पयाना ॥
हृदयँ रामु सिय लखन समेता । चले जाहिँ सब लोग अचेता ॥
बसह बाजि गज पसु हियँ हारें । चले जाहिँ परबस मन मारें ॥

दो. गुर गुरतिय पद बंदि प्रभु सीता लखन समेत ।
फिरे हरष बिसमय सहित आए परन निकेत ॥ ३२० ॥

बिदा कीन्ह सनमानि निषादू । चलेउ हृदयँ बड़ बिरह बिषादू ॥
कोल किरात भिल्ल बनचारी । फेरे फिरे जोहारि जोहारी ॥
प्रभु सिय लखन बैठि बट छाहीं । प्रिय परिजन बियोग बिलखाहीं ॥
भरत सनेह सुभाउ सुबानी । प्रिया अनुज सन कहत बखानी ॥
प्रीति प्रतीति बचन मन करनी । श्रीमुख राम प्रेम बस बरनी ॥
तेहि अवसर खग मृग जल मीना । चित्रकूट चर अचर मलीना ॥
बिबुध बिलोकि दसा रघुबर की । बरषि सुमन कहि गति घर घर की ॥
प्रभु प्रनामु करि दीन्ह भरोसो । चले मुदित मन डर न खरो सो ॥

दो. सानुज सीय समेत प्रभु राजत परन कुटीर ।
भगति ग्यानु बैराग्य जनु सोहत धरें सरीर ॥ ३२१ ॥

मुनि महिसुर गुर भरत भुआलू । राम बिरहँ सबु साजु बिहालू ॥
प्रभु गुन ग्राम गनत मन माहीं । सब चुपचाप चले मग जाहीं ॥
जमुना उतरि पार सबु भयऊ । सो बासरु बिनु भोजन गयऊ ॥
उतरि देवसरि दूसर बासू । रामसखाँ सब कीन्ह सुपासू ॥
सई उतरि गोमती नहाए । चौथें दिवस अवधपुर आए ।
जनकु रहे पुर बासर चारी । राज काज सब साज सँभारी ॥
सौपि सचिव गुर भरतहि राजू । तेरहुति चले साजि सबु साजू ॥
नगर नारि नर गुर सिख मानी । बसे सुखेन राम रजधानी ॥

दो. राम दरस लागि लोग सब करत नेम उपवास ।
तजि तजि भूषन भोग सुख जिअत अवधि की आस ॥३२२ ॥

सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे । निज निज काज पाइ पाइ सिख ओधे ॥
पुनि सिख दीन्ह बोलि लघु भाई । सौपी सकल मातु सेवकाई ॥
भूसुर बोलि भरत कर जोरे । करि प्रनाम बय बिनय निहोरे ॥
ऊँच नीच कारजु भल पोचू । आयसु देव न करब सँकोचू ॥
परिजन पुरजन प्रजा बोलाए । समाधानु करि सुबस बसाए ॥
सानुज गे गुर गेहूँ बहोरी । करि दंडवत कहत कर जोरी ॥
आयसु होइ त रहौँ सनेमा । बोले मुनि तन पुलकि सपेमा ॥
समुझव कहब करब तुम्ह जोई । धरम सारु जग होइहि सोई ॥

दो. सुनि सिख पाइ असीस बड़ि गनक बोलि दिनु साधि ।
सिंघासन प्रभु पादुका बैठारे निरुपाधि ॥ ३२३ ॥

राम मातु गुर पद सिरु नाई । प्रभु पद पीठ रजायसु पाई ॥
नंदिगावँ करि परन कुटीरा । कीन्ह निवासु धरम धुर धीरा ॥
जटाजूट सिर मुनिपट धारी । महि खनि कुस साँथरी सँवारी ॥
असन बसन बासन व्रत नेमा । करत कठिन रिषिधरम सप्रेमा ॥
भूषन बसन भोग सुख भूरी । मन तन बचन तजे तिन तूरी ॥
अवध राजु सुर राजु सिहाई । दसरथ धनु सुनि धनु लजाई ॥
तेहिं पुर बसत भरत बिनु रागा । चंचरीक जिमि चंपक बागा ॥
रमा बिलासु राम अनुरागी । तजत बमन जिमि जन बड़भागी ॥

दो. राम पेम भाजन भरतु बड़े न एहिं करतूति ।
चातक हंस सराहिअत टेक बिबेक विभूति ॥ ३२४ ॥

देह दिनहुँ दिन दूबरि होई । घटइ तेजु बलु मुखछवि सोई ॥
नित नव राम प्रेम पनु पीना । बढ़त धरम दलु मनु न मलीना ॥
जिमि जलु निघटत सरद प्रकासे । बिलसत बेतस बनज विकासे ॥
सम दम संजम नियम उपासा । नखत भरत हिय विमल अकासा ॥
ध्रुव बिस्वास अवधि राका सी । स्वामि सुरति सुरबीधि विकासी ॥
राम पेम बिधु अचल अदोषा । सहित समाज सोह नित चोखा ॥
भरत रहनि समुझनि करतूती । भगति बिरति गुन विमल बिभूती ॥
बरनत सकल सुकचि सकुचाही । सेस गनेस गिरा गमु नाही ॥

दो. नित पूजत प्रभु पाँवरी प्रीति न हृदयँ समाति ॥
मागि मागि आयसु करत राज काज बहु भाँति ॥ ३२५ ॥

पुलक गात हियँ सिय रघुबीरु । जीह नामु जप लोचन नीरु ॥
लखन राम सिय कानन बसही । भरतु भवन बसि तप तनु कसही ॥
दोउ दिसि समुझि कहत सबु लोगू । सब बिधि भरत सराहन जोगू ॥
सुनि व्रत नेम साधु सकुचाही । देखि दसा मुनिराज लजाही ॥
परम पुनीत भरत आचरनू । मधुर मंजु मुद मंगल करनू ॥
हरन कठिन कलि कलुष कलेसू । महामोह निसि दलन दिनेसू ॥
पाप पुंज कुंजर मृगराजू । समन सकल संताप समाजू ।
जन रंजन भंजन भव भारू । राम सनेह सुधाकर सारू ॥

छं. सिय राम प्रेम पियूष पूरन होत जनमु न भरत को ।
मुनि मन अगम जम नियम सम दम विषम व्रत आचरत को ॥
दुख दाह दारिद दंभ दूषन सुजस मिस अपहरत को ।
कलिकाल तुलसी से सठन्हि हठि राम सनमुख करत को ॥

सो. भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं ।
सीय राम पद पेमु अवास होइ भव रस बिरति ॥ ३२६ ॥

मासपारायण, इक्कीसवाँ विश्राम
इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
द्वितीयः सोपानः समाप्तः ।

(अयोध्याकाण्ड समाप्त)

Shri Ram Charit Manas by Goswami Tulasidas was
encoded in ISCII by a group of volunteers at Ratlam.
The files were converted to ITRANS 5.2 encoding for
creating this devanagari version.

Please contact Sri Vineet Chaitanya (vc@iiit.net)
of Indian Institute of Information Technology, Hyder-
abad for further details.

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

Last updated January 22, 2000